राय-रत्नावली

[स्तवन, उपयोगी गीत एवं ढालों का संग्रह]

(तृतीय भाग)

रचयिता

पूज्य आचार्य श्री रायचन्दजी म०

संकलन

श्रमणसंघीय युवाचार्य
श्री मिश्रीमलजी महाराज 'मधुकर'

सम्पादन

अध्यात्मयोगिनी विदुषी महासती
श्री उमरावकुंवरजी म० 'अर्चना'

प्रकाशक

मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन
पीपलिया बाजार,
ब्यावर (राजस्थान) 305901

● राय-रत्नावली

● रचयिता
पूज्य आचार्य श्री रायचन्दजी म०

● सम्पादक :
अध्यात्मयोगिनी विदुषी महासती
श्री उमरावकुंवरजी म० 'अर्चना'

● प्रथम संस्करण :
वीर सं० 2517 भाद्रपद शुक्ला 8 शुक्रवार
सितम्बर 2049

● प्रकाशक :
मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन
पीपलिया बाजार,
ब्यावर (अजमेर-राजस्थान) 305901

● मुद्रक :
मनोहर प्रिंटिंग प्रेस,
पाली बाजार, ब्यावर

● मूल्य :
बीस रुपये 20/-

Rayaratnawaly Rs. 20/-

प्रकाशकीय

"रायरत्नावली" का यह तृतीय भाग है।

पूज्य आचार्य **श्री रायचन्दजी म० सा०** ने जैन धर्म के आचार - विचार के सिद्धान्तों को अपने युग की लोक भाषा और साहित्य रचना शैली मे निवद्ध करके जन साधारण को कल्याण मार्ग का दिग्दर्शन कराया है।

उसके अतिरिक्त **चरित्र व कथाकाव्यों** की परम्परा में ऐतिहासिक और पौराणिक दोनों प्रकार के चरितनायकों की महत्वपूर्ण जीवन घटनाओं का वर्णन करते हुए यथाप्रसग पाप कार्यो के दुष्परिणाम, पुण्य के फल, धर्म - पालन की महत्ता आदि का भी उल्लेख किया है। यह सब वर्णन **"ढाल"** के अन्तर्गत विभिन्न राग - रागनियों द्वारा किया गया है।

संक्षेप में कहा जाये तो आचार्य श्री जी ने तीन प्रकार की रचनायें की है:—

1. उपदेश प्रधान 2. महापुरुषों के गुणानुवाद करने वाले स्तवन 3. चरित काव्य इन तीनों प्रकारों में **रायरत्नावली** के प्रथम और द्वितीय भाग में मुख्य रूप से उपदेशी भजन, स्तवन आदि प्रकाशित किये गये हैं। इस **तृतीय भाग** में चरित्र प्रधान कथानकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है, यह भाग धर्म कथाओं के प्रेमी **पाठकगण** विशेष चाव से पढ़ेंगे और भारतीय संगीत शास्त्र के मर्मज्ञ महानुभावों को विविध प्रकार की **राग-रागनियों** का बोध कराने में सहायक सिद्ध होगा।

उत्तमचन्द मोदी

मंत्री

मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन

ब्यावर

विषयानुक्रम

*

समर्पण

*

जिनकी पावन प्रेरणा ने अनेक भव्य आत्माओं को
साधना मार्ग पर बढ़ने को प्रेरित किया, जिनका
सदुपदेश जीवन के लिये सम्बल रहा,
जिनका जीवन - दीप मेरे लिये आज
भी प्रकाश - स्तम्भ है, उन्हीं
मरुधरा की प्रतिमामूर्ति
महामहिम दादा
गुरुणी मैया

महासती श्री चौथ कुंवर जी म. सा.
की पावन - स्मृति को
आर्या 'अर्चना'

राय-रत्नावली

[तृतीय भाग]

खंधक

दोहा

वध परीषह वरणवूं, तेरमो तिणरो नाम ।
मुगत-गामी मुनिवर सहे, ते सारे आतम काम ।। 1 ।।
परिणाम पहलो ऊपर, नहीं आणे राग ने द्वेष ।
खंधकरा सिख पांच सौ, ज्यांरा सुणजो भाव विशेष ।। 2 ।।

ढाल– 1

(राग- चन्द्रगुपत राजा सुणो)

भरत - खेतर मांहे भली,
"सावत्थी' नगरी सोहे रे ।
इन्द्र - पुरी सी ओपमा,
देखंतां मन - मोहे रे ।। 1 ।।

भवियण सुणो भावे करी,
चित्त ठिकाणे राखी रे ।
निद्रा नेड़ी मत आणजो,
लीजो जिन-वचन-रस चाखी रे ।भ.2।

सेठ सेनापति मंत्र,
वसे घणा व्यापारी रे ।।
परदेशी जिहां घणा,
सुख पावे नर ने नारी रे ।।भवि.।।3 ।

राज करे रलियावणो,
'जित-शत्रु' नाम जाणी रे।
राणी तेहने धारिणी,
रूपे जीपी[1] इन्द्राणी रे ।।भवि.।। 4 ।।

कुमर 'खंधक' कला रो धणी,
रूपे सुर-अवतारी रे ।
शास्त्र भण्यो भली तरे,
सूत्र में सार-धारी रे ।।भवि.।। 5 ।।

साचो धर्म जिणेसर ध्यावि,
माने नही मिथ्यातो रे ।
समकित मे सेठो घणो,
माधाने सेवे दिन रातो रे । भवि.।।6।।

चरचा में चातुर घणो,
अन्य तीर्थी कोई आवे रे ।
आकृष्ट[2] तिणने कर देवे,
पण जीतने कोई न जावे रे ।भवि.।। 7 ।।

कुवर मे कुमी कांई नही,
सगली वात मे सेणो रे ।
दातार दिलरो घणो,
गिणवा काडे वेणो रे ।।भवि.।। 8 ।।

'पुरंदर यशा' पुत्री भली
सुन्दर मृग - नयणी रे ।
रूप - यौवन मे सोभती,
भणी गुणी ने सेणी रे ।।भवि.।। 9 ।।

---

1. जीती 2. पराजित

कन्या कुंवारी रायनी,
परणावणरी छे त्यारी रे।
प्रधान राजा मिल करी,
करे सगाई कन्यारी रे ।।भवि।।10।।

पहली ढाल मांहे किया,
वहन-भाई तणा बखाणो रे।
"रिख रायचन्दजी" कहेसांभलो,
आगे चतुर सुजाणो रे ।।भवि.।।11।

ढाल-- 2

(राग- एक दिन राणी राजवी रे)

देश 'दंडकार' नो धणी रे, 'कुंभकार' राजान ।
तेज प्रताप सूरज जिसो, कोई लोप न सके आण रे ।।
पृथवी - पति राजा ।। 1 ।।
सेना चार प्रकार[1] नीं रे,
संचा[2] सर्व भरपूर ।
कुमी नही किण वात री,
चले दुसमण गया दूर रे ।। पृ. 2 ।।

रूपवंत ए राजवी रे,
ओ वर कुमरी रे जोग ।
पुत्री परणाई प्रेम सूं,
हरख्या घणा लोग रे ।। पृ. 3 ।।

दत्त दायजो दीधो घणो रे,
जितशत्रु महाराय ।
चाई सासरे संचरी[3],
सुख विलसे पुण्य पसाय[4] रे ।। पृ. 4 ।।

---

1. गज, अश्व, रथ, पैदल, 2. शस्त्रास्त्र 3. विदा हुई 4. कृपा से

सासरा मांहे सुख त्रणो रे,
चित्त कुमरी रे चेन ।
पीहर में व्हाली हुती,
आंतो खंधक कुमररी बेन रे ।। पृ. ।। 5 ।।

'कुंभकार' राजा तणो रे,
'पालक' पुरोहित नाम ।
वेद शास्त्र भण्यो घणो,
करतो राजारो काम रे ।। पृ. । 6 ।।

एकदा[1] राजा मेलियो रे,
'सावत्थी' नगरी तूं जाय ।
वस्तु अमोलक भेटणो,
मेलजो सुसराजी रे पाय रे ।। पृ. 7 ।।

'पालक' पुरोहित आवियो रे,
जिहां 'जितशत्रु' राय ।
आशीर्वाद दे ऊभो रह्यो,
राज - सभारे माय रे ।। पृ. ।। 8 ।।

समाचार सगला कह्या रे,
परवानो[2] पकड़ाय ।
मिजमानी मेली मुख आगले,
आदर दीधो महाराय रे ।। पृ. ।। 9 ।।

नृप बेठो सोना रे सिंहासणे,
वले गोड़े[3] 'खंध' कुमार ।
उमराव बैठा बराबरी,
वले हाकम ने हुजदार रे ।।पृ.।। 10 ।।

---

1. एक बार 2. पत्र 3. पास

दरबार जुड़ियो जुगतसूं रे,
राय बैठो मोटे मंडाण ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे दूजी ढाल में,
दोय राजारा किया वखाण रे ।।पृ.। 11।।

दोहा

'पालक' पुरोहित तिण समे, राज - सभा मंझार ।
नास्तिक मत जिन थापियो, सुग वहु नर - नार ।। 1 ।।
माठो धर्म प्ररूपियो, साचो धर्म ऊथाप ।
पुरोहितरे पोते घणो, महा-अघोरज पाप ।। 2 ।।
शास्त्रनी जुगती करी, नृप ने 'खंधक' कुमार ।
पालक ने खिष्ट[1] कियो घणो भारी सभा मझार ।। 3 ।।
पुरोहितरो हासो[2] हुवो, गयो मिनखां में मांझ[3] ।
घटी काण ने कायदो, गई लोक में लाज ।। 4 ।।
कंवर मिथ्यात घटावियो, पालकरो गयो तोल[4] ।
भरी सभा में भलो रह्यो, ऊपर कुमरनो बोल ।। 5 ।।
'पालक' कुंवरज - ऊपरे, धरियो घणोज द्वेष ।
द्वेष तणा फल पाड़वा[5] आगे लीजो देख ।। 6 ।।

ढाल-- 3

(राग- बालुड़ा संग में जायजो रे)

तिण काले ने तिण समे जी,
करता उग्र विहार ।
'सावत्थी' नगरी समोसर्या जी,
साधांरे परिवार ।।

---

1. पराजित 2. उपहास 3. अभिमान 4. सम्मान 5. लेने के लिये

जिणेसर - जग - तारण जगदीश,
मुनिसुव्रत बीसमां ।
ज्यां जीत्या राग ने रीस ॥ 1 ॥

प्रभु पधार्या बाग मे रे,
जोवता ज्यांरी वाट ।
विध सूं वांदण आविया जी,
नर - नार्यारा थाट ॥ जिने. 2 ॥

कौणिकनी परे आवियो जी,
जित - शत्रु महाराय ।
'खंधक' कुमर पिण आविया जी,
बांधा जिनजीरा पाय ॥जिने. 3 ॥

दीधी धर्मनी देशना जी,
भव - जीवांरे काज ।
जनम - मरण - जल डूबतां,
एतो राखे साधु - जहाज । जिने. 4 ॥

तन - धन - जोवन कारमो[1] जी,
कारमो सहू संसार ।
वाणी सुण वैरागियो जी,
खंधक राज - कंवार ॥ जिने. 5 ॥

कर जोड़ी कुंवर कहे जी
लेसूं संजम - भार ।
मात - पिताने पूछने जी,
हूं त्यागूं वेग[2] संसार ॥ जिने. 6 ॥

---

1. व्यर्थ 2. जल्दी

जिनजी कहे जेज करो मती जी,
जे आवी दीक्षा दाय ।
व्रत विना एको घड़ी जी,
खिण लाखिणी जाय ।। 7 जिने. ।।

कुंवर आयो घर आपणे जी,
पिण प्रभसूं पूरो राग ।।
रिख 'रायचन्द जी' तीजी ढाल में जी,
कुंवर पाम्यो वैराग ।। 8 जिने. ।।

दोहा

हाथ जोड़ी माता कने, कहे सुणी जिन - वाण ।
चलती कहे वारी[1] ताहरी, थारी पवित्र थई काय कान ।। 1 ।।

ढाल-- 4

(राग- चाखो रे नर समता रस मीठो)

मात - तातथे अनुमति मांगे,
बोले बे कर जोड़ी जी ।
मैं काया - माया काची जांणी,
इण आउखा नी थित थोड़ी जी ।। 1 ।।

माताजी ! मुज अनुमति दीजे,
जेज अबे नहीं कीजे जी ।
खिण खिण आऊखो छीजे,
एम जाणी आतमा दमीजे जी ।मा.2।।

वेण सुणी मुरछाणी माता,
बोल सुणो मुज जाया जी ।
तूं मुज व्हालो बेटो एक,
सुकोमल थारी काया जी ।। मात. 3 ।।

1 बलिहारी

जोबन - वेशे, जोग म[1] लीजे,
सुख भोगवजे सदाई रे ।
रमणी रिधरो लावो लीजे,
थें संपदा सगली पाईजी ॥ मात. 4 ॥

कुंवर कहे काची ए माया,
जिणसूं मन म्हारो नही लागे जी ।
'मुनिसुव्रत' स्वामी मुझ मिलिया,
संजम लेसूं ज्यां आगे जी ॥ मात. ॥ 5 ॥

उत्तर-पड़ुत्तर कीधा वोहला,
जमाली ज्यूं जाणी जी ।
सहस्र - पुरुषरी शीविका सिणगारी,
कुंवर ने सूप्यो[2] आणी जी ॥मात. 6॥

मुनिसुव्रत स्वामी गुरु मिलिया,
दीक्षा लीधी 'खंधक' कुवांरो जी ।
राजकुंवर पांचसे पुत्र—
निकलिया खंधक-लारो जी ॥मात.॥ 7 ॥

अनुक्रमे पदवी वले पामी,
आचारजरी जाणी जी ।
परिवार पांच सो लारे,
सगला उत्तम प्राणी जी ॥मात 8 ॥

चौथी ढाल में दीक्षा लीधी,
खंधक पदवी पामी जी ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे सुणजो आगे,
कुण वातरो हुवे कामीजी ॥मात. 9 ॥

---

1. नही 2. समर्पण

ढाल-- 5

(राग-- जम्बूद्वीप मझार)

बीसमां जिन - राय,
मुनि - सुव्रत स्वामी—
पग ज्यांरा प्रणमो करीए ॥ 1 ॥

खंधकजी बूझे[1] एम,
विहारज हूं करूं
कुंभकार - देश कानी[2] ए ॥ 2 ॥

बहन - बहनोई तिहां होय
ज्यांने प्रति - बोधवा—
भगवंत विहारज इं करूं ए ॥ 3 ॥

भगवंत भासे एम,
जो तुमें जावसो,
तो थाने उपसर्ग होसी ए ॥ 4 ॥

तो विना आराधक होय,
भगवंत भाखियो—
पण होनहार ते ना टले ए ॥ 5 ॥

करता उग्र विहार
आचार्य खंधक—
पांच - सो परिवार सूं ए ॥ 6 ॥

दंडाकार तिहां देवा,
नगर 'वसंतपुर'
उधाने आय उतरिया ए ॥ 7 ॥

---

1. पूछे 2. तरफ

'पालक' पुरोहित तेह,
रीसज पाछली—
इण माने खिष्ट कियो हुंतो ए ॥ 8 ॥

ओ संजम ले आयो आंहिं[1],
वेर वालूं[2] माहरो—
इणने फल देखाय दूं ए ॥ 9 ॥

वाग वारे वेलू रेत,
जठे आयो आधी रात रा,
पुरोहित छाने पापियो ए ॥ 10 ॥

पांचसौ खड्ग दिया गाड,
ढालां पांचसौ—
गाडी जुदी जुदी जायगा ए ॥ 11 ॥

तीर कमाण तेम,
बन्दूक ने बरछियां,
कुहाड़ा ने कटारियां ए ॥ 12 ॥

संग्रामना सर्व साज,
धरती मांदे धर दिया
पुरोहित कपट ईसो कियो ए ॥ 13 ॥

साधु तो वाग मझार,
खंधक आचार्य—
परिवार ज्यांरो पांचसौ ए ॥ 14 ॥

पुरोहित पापी जीव,
कुबुद्धि था केलवी—
साधाने मारवा भणी ए ॥ 15 ॥

---

1. यहां पर 2. लेऊ

चर्चा करी थी न्याय,
कुंवर खंधक भणी
पुरोहित पिण ऊंधो पड़ गयो ए ।। 16 ।।

महा मिथ्यावी जीव,
द्वेषी धर्म रो,
ओ अभवी जीव जाणजो ए ।। 17 ।।

राते ओ कपट वणाय,
प्रभाते मूरखो ।
राजा आगल आवियो ए ।।18।।

पुरोहित मांड्यो जाल,
आ थई पंचमी ढाल—
रिख 'रायचन्दजी' कहे सांभलो ए ।।19।।

ढाल– 6

(राग– परिग्रहो एव हो)

राजा कहे वांदण जावणो ए,
खंधकजी विराज्यां बाग ।
सगपण साला तणो ए,
वले धर्मरो राग ।1।

कर्म छोड़े नहीं ए,
कुण सेठ कुण चोर ।
उदय हुवां पछे ए,
किणरो न चाले जोर । कर्म. ।2।

'पालक' कहैं महाराजने ए,
थे किणने वांदण जासो ।
आज खंधक आयो अठे,
आपरो लेवा राज । कर्म. ।3।

इण कपटी वेश बणावियो ए,
पांच सौ माथे सिरदार ।
जो वांदण जावसो ए,
तो आपने लेसी वे मार । कर्म. ।4।

जो थे म्हारो सांच मानो नही ए,
ओ ले आयो संग्रामनो साज[1] ।
छिपाया धूड़ में ए,
आप देख लीजोमहाराज ।कर्म.।5।

इणरो चारित्रसूं मन उतर्यो ए,
पांच सौ ले आयो साथ के ।
नृप कहे साची कही ए,
तू कहे ते बात । कर्म. ।6।

'पालक' कहे महारायजी ए,
मत राखो मन-भर्म ।
उरा आवो देखाय दूं ए,
इण मोडारो कर्म । कर्म. ।7।

इक्षु-रस ना खेत में ए,
काढ्या खड्ग ने ढाल ।
तीर कबाण कटारियां ए,
बरछी बन्दूकां ने भाल । कर्म. ।8।

1. साधन

संग्रामना साज देखाड़िया ए,
कर कर ऊंची धूड़ ।
राजा मन में जाणियो ए,
'पालक' रो नहीं कूड़[1] । कर्म. ।9।

पुरोहित कहे महाराजजी ए,
अवे मानो म्हारो सांच ।
जेम नाई देखाय दे ए,
कोरणी करने काच । कर्म. ।10।

राजा मन फेरियो ए,
पुरोहित कपटी एम ।
साँच आवतो आवे ए,
कूड़ सू कीजे केम ? । कर्म. ।11।

राजानी मति फिर गई ए,
कानारा काचा राय ।
आगे आगे हुवा ए—
ते सुणजो चित्त लाय । कर्म ।12।

'रामजी' रे, मन पड़ गई ए,
'सीता' केरी शंक ।
धोवीरी बात सुणी ए,
देखो कर्मोंनो वंक । कर्म. ।13।

'शंख' राय वले जाणजो ए,
शंका पड़ियां न पूछी बात ।
'कलावती' राणी तणा ए,
काप्या[2] दोनूं ई हाथ । कर्म ।14।

---

1. झूठ 2. काटे

'चेलणा' किणने चितारती[1] ए,
कोप्यो 'श्रेणिक' भूपाल ।
कह्यो 'अभय' कुमार ने ए,
अतेउर दे बाल । कर्म. ।15।

'अजणा' सती रे ऊपरे ए,
कोप्यो 'पवन' कुमार ।
परणी ने परिहरी ए,
दीधो लात-परिहार । कर्म. 16।

इण रीते हुवा ए,
राजा किणरा नही कोय ।
पुरोहितसूं रीझियो ए,
साधांसूं दुषमण होय ।कर्म. ।17।

पालकने राजा कहे ए,
थे राखो म्हारो राज ।
तू सामधर्मी हुवो ए,
ए तोने भोलायो आज ।।कर्म.।। 18 ।।

ओ मोने मारणने आवियो ए,
ओ मोडो माड पाखड ।
पांच सौ ही हवाले थाहरे ए,
थाटी दे दावे[2] जिम दंड ।।कर्म.।।19।।

पुरोहितना हुवा चितव्या ए,
होणहार जिम होय ।
साधांने मोक्ष जावणो ए,
कर्म न छोडे कोय ।।कर्म.।। 20 ।।

---

1. स्मरण 2. इच्छानुसार

पुरोहित परीसह देवे तिण परें,
सुणजो बाल - गोपाल ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे कर्मनी ए,
विन भोगव्यां नहीं छुटवाल[1] ।।कर्म.।।21।।

ढाल- 7

(राग – त्रिकरण शुद्ध सदा जिन प्रणमूं)

'पालक' पापी अभावी प्राणी,
नगर वाहिर मडाव्या घाण ।
पहले तो चेलां ने पीलणा ए,
गुरांने गोडे ऊभा आण ।। 1 ।।

धन धन साधु सहे रे परीषह,
कठिन कर्मना तोड़े जाल ।
मुगत नगर माहे जाय विराज्या,
जनम-मरण भव फेरा टाल ।।धन.।।2।।

प्रथम चेला ने घाणीमां घाल्यौ,
वले[2] च्यार आहार ना किया पच्चखाण ।
तिल-भर द्वेष न धरियो मुनिवर,
केवल लही पामी निर्वाण ।।धन ।।3।।

इम अनुक्रमे पीलिया पापी,
खंदक आचार्यना सीस ।
चार सौ अठाणू चेला,
पिण नहीं आणी मनमां रीस ।धन.।4।।

1. छुटकारा 2. फिर

सगलांरा भाव रह्या सरीखा,
चेला सगला चतुर सुजाण ।
सासता सुखांमां जाय विराज्या,
फेर नही आवण जाण ।।धन.।। 5 ।।

चार सौ अठाणुं परा पीलिया,
खांधक आचारज रह्या देख ।
अठां तांई नो गुरांरा मन मे,
'पालक' ऊपर नायो द्वेष ।।धन.।। 6 ।।

बालक नानो चेलो रयो,
मोने देखतां इणने मत पील ।
नव दीक्षित ए नानो चेलो,
कोमल काचो इणरो डील ।।धन.।।7।।

मो प्रते[1] जोयो किम जावे,
तूं पीलेला घाणी घाल ।
इण ऊपर मोह आयो म्हारो,
पालक पुरोहितने रह्यो पाल[2] ।धन.।8

'पालक' पुरोहित पाछो बोले,
दावे[3] जितरो मोने पाल ।
पिण तोने दु.ख देणो गाढो,
हूं इणने हीज पीलूंला घाणी में घाल ।।धन.।।9।।

जुलक[4] जुलक चेला ने सामो,
गुरु गीतार्थ रह्या जोय ।
तब लघु चेलो मनमे जाणियो,
गुरांरे चित्तारो छोह न पार ।धन.।10

1. द्वारा 2. मना करते रहे 3. चाहे 4. सकरुण दृष्टि से

चित्त दृढ़ करने वोले चेलो,
आप चिन्ता करो छो केम ।
म्हारे तो ऊपर मोह मत राखो,
म्हारे तो मुगत जावणरो प्रेम ।।धन.।।11।।

बालक वय में परिषहजीतियो,
आगे मुनिवर गजसुकुमार ।
खपर अंगारा सोमल मेलिया,
मुनिवर मुगत गया ततकाल ।।धन.।।12।।

जिणहीज दिन चारित लीनो,
तिणहीज दिन पोहता मुगत मझार ।
मोटा ऋषीश्वरां परीषह खम्यो[1],
ज्यांरो नाम लियां निस्तार ।।धन.।।13।।

अकाम-मरण मैं कीधा अनन्ता,
जठे तो न सरी गरज लीगार ।
अबके पंडितमरण करूं पूरो,
आपरे प्रसादे करूं खेवो पार ।।धन.।।14।।

इतरे 'पालक' आण पकड़ियो,
लघु रिखने घाणी घाल ।
केवलज्ञान पाम्यो पीलतां,
मुक्त गया भव-फेरा टाल ।।धन.।।15।।

सातमी ढाल में शिव-गत पामी,
'खंधक' केरा पांच सौ सीस ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे दिन प्रते,
दे कर जोड़ी नमाऊं सीस ।।धन.।।16।।

---

1. सहन करके

ढाळ- ४

(राग - क्षमा धर्म तुमे सेवो रे प्राणी)

इण मूरख कह्यो नही मानीयो,
ओ लागो म्हारे लारे रे ।
पछे गुरांने पीलिया,
पालक पापी कृतियारे[1] रे ।।साध.।।1।।

साध संतायो आछो नहीं,
ज्यांने आयो क्रोध अपारो रे।
विराधक हुवा इण वात सूं,
मरने अगनकुमारो[2] रे ।।साध.।।2।।

अवधि[3] करने जाणियो,
इण कीधी साधांरी घातो रे ।
वैर पूरवलो जाणियो,
अवे छे इणरी वातो रे ।।साध.।।3।।

सेवग सर्व राजा तणा,
विच मेले भूपालो रे ।
पाप पालकरा प्रगटीया,
भस्म कीधा सर्व बालो रे ।।साध.।।4।।

कोई रेत लोकां आल दीपो नहीं,
एक 'पुरंदर-जसा' वे टालो रे ।
ज्यां साधांने दुःख दियो,
त्यांरे उदय-थया ततकाले रे ।।साध.।।5।।

---

1. कृतघ्नी 2. भवनपति देव 3. अवधिज्ञान

अनर्थ ए मोटो थयो,
ज्यां हुवो साधांरो संहारो रे।
ज्यां ऊगे की रायलो,
देश अजेस[1] कहे दंडकारो रे ।।साध।।6।।

'पुरंदर-जसा' दीक्षा लीधी,
तपस्या कीनी घणी वाई रे।
स्वर्ग पहुंती साधवी,
दीवी मुगतरी साई[2] रे ।।साध.।।7।।

चेला तो मुगते गया,
गुरु हुवा अगनकुमारो रे।
रीस कदे आछी नहीं,
मोड़ा[3] जासी मुगत मझारो रे ।।साध.।।8।।

जिम खंधक आचार्य कीयो,
ज्यूं बीजाने करणो न कोई रे।
क्रोध तणा फल पाड़वा[4],
क्षमाथी शिव-सुख होई रे ।।साध.।।9।।

च्यार सौ निवाणूं चेला सह्यो,
कर दियो खेवो पारो रे।
इण रीते सेहणो बीजा साधने,
इम भाखो किरतारो रे ।।साध.।।10।।

वध परिषह तेरमो,
कह्यो 'उत्तराध्ययन' मजारो रे।
दूजे अध्ययन में कह्यो,
तिण अनुसारे अधिकारो रे ।।साध.।।11।।

---

1. अभी तक 2. बयाना 3. देर से 4. उदय

अधिकार खंधकजी तणो,
आठ ढालां मांही आणी जी।
रिख **रायचन्दजी** इम कहे,
सुणजो उत्तम प्राणी जी ।।साध.।।12।।

पूज्य **जयमलजी** रे प्रसाद थी,
ए जोड़ी **आठ ढालां** रे।
शहर **नागौर** चतुरमास में,
पूरी प्रीत साधांसूं पालो रे ।।साध.।।13।

संवत **अठारै बत्तीस** में,
काती मासे सुद जोयो रे।
जे ओछो अधिको आवियो,
ते मिच्छामि दुक्कडं होयो रे ।।सा.।।14।।

व्रत भलीतरे पालजो,
जिम वरते परम आनंदो रे।
भजजो सदा भगवंतने,
चोवीसों जिणचंदो रे ।।साध.।।15।।

—※-※—

कुरगडू

दोहा

शांतिनाथने समरिये, प्रह उठी प्रभात।
पर-उपगारी परम-गुरु, चिंता-मणि साक्षात् ।।1।।

कड़वा फल कह्या क्रोधना, सूत्र सिद्धान्त मंझार।
किण दुख दीठा ते दाखवूं जिम 'तपोधन' अणगार ।।2।।

क्षमा झाली[1] जिण आपड़ी, वले शीतल चन्दन जेम ।
'कुरगडू' नी कथा कहूँ, सांभलजो धर प्रेम ॥3॥
पहली फल कहूं क्रोधना, पछे क्षमा - अधिकार ।
ए दोनूं बातां देखलो, जिम 'तपोधन' अणगार ॥3॥

ढाल-1

(राग- नाहनो नाहलो रे)

'धर्मघोष' नो सिख सुहावणो,
सेणो ने सुविनीत ।
तपोधन साधजी रे ॥
मुनि वैरागे व्रत आदर्या रे,
राखे रूड़ी रीत ॥ तपो. ॥ 1 ॥

सूत्र भणिया भली तरे रे,
वले अर्थ जाणे अभिराम । तपो. ।
करे मास - मास पारणो रे,
तिण सूं 'तपोधन' दीयो नाम ॥तपो.॥2॥

इम वरस घणा केई वई[2] गया रे,
तप कर तोड़ी[3] काय ॥ तपो ॥
तेज घणो तपस्या तणो रे,
तिण सूं क्रोध घणो पिंड मांय॥तपो.॥3॥

तप - रूप रूई कही रे,
क्रोध - रूपणी आग तपो. ।
भस्म हुतां बार लागे नहीं रे,
ए बातां तपने लागे डाम ॥तपो.॥4॥

1. धारण की 2. वीत गये 3. क्षीण

तपस्या अमृत सारखी रे,
क्रोध कने जाणे जहेर ॥तपो.॥
तपस्या रूंख दाखां तणो रे,
क्रोध कने[1] जाणे केर ॥तपो.॥ 5 ॥

तपस्या चन्दन सारखी रे,
क्रोध कने जाणे हींग ॥तपो.॥
तपस्या सेज फूलां तणी रे,
क्रोध कने जाणे सींग ॥ तपो. ॥ 6 ॥

तपस्या दूध जे गायनो रे,
मांहे क्रोध-कांजी पड़ी आय ॥तपो.॥
घी सगलो घर सूं गयो रे,
दही जमायो किम थाय ॥ तपो. ॥ 7 ॥

तपस्या मीठी साकर सारखी रे,
मांहे क्रोध - कांकरा भेल ॥तपो ॥
तपस्या अन्तर – सारखी रे,
क्रोध में भेल्यो जाणे तेल ॥तपो.॥ 8 ॥

'तपोधन' अणगार नेरे,
क्रोध तणो रहे मन्न ॥तपो.॥
अहंकार घणो रहे अंगमां रे,
लोक करे धन्न – धन्न ॥ तपो. ॥ 9 ॥

हूं करू मास - खमणरो पारणो रे,
मन में चढ़ गयो मान ॥तपो. ॥
हूं वले धर्मकथा धुनसूं कहूं रे,
कुण छे मुझ समान ॥तपो.॥10॥

---

1. पास

करे प्रशंसा पोता तणी रे,
वचन वचन में वांक ।।तपो.।।
वले मद मांहि मावे नही रे,
बीजाने गणे रांक ।।तपो.।। 11 ।।

कोई साध नहीं मो सारखो रे,
धुखे मन में द्वेष ।।तपो.।।
इण रे तप पिण वेरी सारखो रे,
तिको आगे लीजो देख ।।तपो.।। 12 ।।

ए पहली ढाल पूरी थई रे,
रिख रायचन्दजी कहे एम ।।तपो.।।
क्रोधे य तपावे पाड़वी रे,
सुणो 'तपोधन' कियो केम ।। 13 ।।

—卐—

दोहा

'तपोधन' अणगारनो, साथे चेलो एक ।
सेणो ने भणियो घणो, वले विनयवन्त विवेक ।। 1 ।।
'सुदर्शनपुर' नगर में, गुरु चेलो रह्या चौमास ।
चेलो दिन - रात सेवा करे, हिवड़े धरी हुलास ।। 2 ।।
सेवा सारे सासतो, पिण गुरु मन राखो नीच ।
चेलो 'कहोनीं सूं' करे, गुरु क्रोधरो कीच[1] ।। 3 ।।
गाज बीज विरखा हुई, मतवालो हुयो मेह ।
मिंडकियां[2] मारग विचे, फिरवा लागी तेह ।। 4 ।।
ऊठ्या मासखमणरे पारणे, सुन्दर चेलो साथ ।
तपोधन अणगाररी, हिवे सुणजो थे बात ।। 5 ।।

1. कीचड 2. मेंढक

ढाल-2

[रागः- सुण बेहनी हिवे बात]

ऊठ्या मासखमणरे पारणे, मुणो गुरुजी है।
सुन्दर चेलो साथ के । सु. गु. ।
थारे मासखमणारो पारणो, । सु, गु. ।
झोली पातरा हाथ के ।।सु. गु.।। 1 ।।

आहार वैरणने आवतां, । सु. गु. ।
आई गुरां रे पग - हेठ के । सु. गु. ।
थांरे पग - हेठे आई मींडकी, । सु. गु. ।
थांरे पगसूं पिस गयो पेट के ।।सु. गु.।। 2 ।।

मैं परतख देखी पग तले । सु. गु. ।
लागो पंचेन्द्रियरो पाप के । सु. गु. ।
थांसू हूं बनरणा करने वीनवू ,। सु. गु. ।
पराछित लीजे आपके । सु. गु.।। 3 ।।

जीव तरणी हिंसा हुई, । सु. गु. ।
भगवन्त दाख्यो दोप के । सु. गु. ।
ल्यो आलोयरणा उजला हुवो, । सु. गु. ।
ज्यूं वेगी पामो मोक्ष के । सु. गु. ।। 4 ।।

तड़क भड़क गुरु वोलिया - सुरण चेला रे ।
म्हारे पगसूं ना मुई मींडकी । सु. चे. ।
कूड़ी[1] वातज थे कही, । सु. चे. ।
बुध थारी कठे गई ।। सु. चे. ।। 5 ।।

---

1. झूठी

मैं देख देख पग मेलियो, । सु. चे. ।
म्हारे पगसूं मुई न कोय के । सु. चे. ।
तूं म्हारो लागू क्यूं हुवो, । सु. चे. ।
तूं छिद्र म्हारा मत जोय के । सु. चे. ॥ 6 ॥

ते कूड़ो आल मोने दियो, । मु. चे. ।
फूट गयो थारो हियो । सु. चे. ।
आई ओ दशा तारी । सु. चे. ।
ते करी आशातना महारी । मु. चे. ॥ 7 ॥

ओ तड़को भड़को किण कारणे, । सु. गु. ।
हूं वारी जाऊं थारे चरणे । सु. गु. ।
मैं थारो दरसण लियो, । सु. गु. ।
जाणे अमृतरो प्यालो पियो । सु. गु. ॥ 8 ॥

हूं पग पूजूं आपरा, । सु. गु. ।
थे पेंडा छोड्या पापरा । सु. गु. ।
हूं कृपा चाहूं आपरी, । सु. गु. ।
म्हारे माला थांरे जापरी, । सु. गु. ॥ 9 ॥

थे रीस म राखो मन में, । सु. गु. ।
थे रीस म राखो तन में । सु. गु. ।
थे करो मास-खमणरो पारणो । सु. गु. ।
आयो थानकरो बारणो । सु. गु. ॥10॥

इम सांभल गुरु अबोला रह्या, । सु. गु. ।
गुरु न चेलो दोनूं जणा थानकरे मांहे गया । सु. गु. ।
थानक आहार जायने खोलियो, । सु. गु. ।
चेलो हिवे बले बोलियो ॥ सु. गु. ॥ 11 ॥

पारणो पछे कीजिये, । सु. गु. ।
पराछित इणरो लीजिये । सु. गु. ।
थांरा पगसूं मींडकी पिस मुई, । सु. गु. ।
तस - जीवनी हिंसा हुई ॥ सु. गु. ॥12॥

चेला तूं तो वाकी[1] वापरो[2], । सु. चे. ।
तूं तो कांय वके जाणे वायरो[3] । सु. चे. ।
तूं तो लागो गेरी[4] पापियो, । सु. चे. ।
ते वचन सो परो उत्थापियो ॥सु. चे.॥ 13 ॥

तूं म्हारे लारे पड़ियो, । सु. चे. ।
मैं थांरो कांसूं[5] कियो । सु. चे. ।
चेला ऊपर तेज करीने लड़कियो ।सु. चे.।
वेण सुणीने भड़कियो ॥ सु. चे. ॥14॥

चेलो तो बोले नहीं, । सु. गु. ।
वचन पिण कह्या कई । सु. गु. ।
चेलो खमायो पगा मे दियो माथ के । सु.गु. ।
पूज्यजी विराजो पाटके । सु. गु. ॥ 15 ॥

गिदड़ो[6] थारो घास रो, । सु. गु. ।
पचखाण पिण पाड़ो परो । सु. गु. ।
पारणो थांरे मासरो । सु. गु. ।
चेले कर दिया थंडा[7] । सु. गु. ॥16॥

पारणो गुरुजी कर लियो, । सु. गु. ।
आहार नही भायो तिको[8] । सु. गु. ।
आहार तिको चेले कियो ॥ सु. गु. ॥ 17 ॥

---

1. विवेक 2. रहित 3. हवा 4. पीछे 5. क्या 6. गद्दा
7. शान्त 8. बचा हुआ

ढाल भली ए दूसरी, । सु. गु. ।
गुरु ने पिरण चेला तरणी । सु. गु. ।
रिख रायचन्दजी इम भाखियो । सु. गु. ।
पिरण वात वले[1] आगे घरणी । सु. गु. ॥18॥

ढाल-- 3

[राग - थावच्चापुत्रनी मेला सूं ऊतर्यो राजा]

आई देवसी पड़िकमणेरी वेला,
गुरु ने चेलो दोनूं ही भेला ।
कावसग ना किया अतिचारो,
दिन आथमियो ने हुवो अंधारो ॥ 1 ॥

हलवे[2] सूं बोल्यो चेलो,
गुरु ! वचन म्हारो मत ठेलो ।
मो ऊपर म करजो हेलो,
मींडकीरो प्रायछित थे झेलो ॥ 2 ॥

थांरे पग हेठे मीडकी चापी[3],
देखतां म्हारी काया तो कांपी ।
हठ थे परो हेठो मेलो,
म्हारो सत वचन मत ठेलो ॥ 3 ॥

गुरुने कषाय वली ऊठी,
तूं तो वात खांचे कांई झूठी ।
तूं तो म्हारे हिज केड़े लागो,
हूं तो काढूं परो तो आगो ॥ 4 ॥

---

1. और 2. धीरे से 3. दब गई

तूं तो प्रायछित घेर न घाले,
पापी तोने कुण पाले ।
तूं तो गुररो ऊठ्यो घाती,
तूं तो सेक नांखी म्हारी छाती । 5 ।।

गुरु हांफू करने लागा,
तूं तो छोड़ परी म्हारी जागा ।
'तपोधन' क्रोध करी ऊठ्यो,
गुरुरो थांभासं माथो फूट्यो ।। 6 ।।

क्रोधरो स्वभाव छे खोतो,
हेटो पड़ियो ने फूटो माथो ।
वेदना व्यापी न दु:ख हूवो,
तपोधन क्रोध मांहे मूवो ।। 7 ।।

आशीविश हुय गयो सापो,
उदय हुवा क्रोधरा पापो ।
एक तपसी ने वले वूढो,
पिण कर कर क्रोधज वूडो[1] ।। 8 ।।

क्रोधी क्रोध कियो पूरो,
तपस्यारो कियो चक-चूरो ।
क्रोध सदा ही भूंडो,
क्रोधीरो छानो ना रहे मूंडो ।। 9 ।।

कुण गुरु न कुण चेलो,
क्रोधीने आगो मेलो ।
चेलेरे पिण्ड में थी नरमाई,
चेले भली गति पाई ।। 10 ।।

1. डूबा

तीजी ढाल तो होय गई पूरी,
पिण अजेस छे बात अधूरी, ।
रिख रायचन्दजी कहे सुणो थे आगे,
भाई ! जो थाने व्हाली लागे ॥ 11 ॥

दोहा

इण कुल मांहे छे घणा, आशीविष ना साप ।
क्रोध क्रोधी घणा ऊपना, सहे घणा सताप ॥

ढाल-- 4

[राग - नणदलरा गीतरी]

जिम 'चण्ड-कोसिये' दीठा वीरने,
तिम इण दीठा अणगार ।
धिग धिग मैंरे कीधो पारणो,
पिण हुं तो क्रोध अपार ॥ 1 ॥

धिग धिग देखो पुण्याई माहरी,
प्रगट्या पूरबला पाप ।
धिग धिग मैं साधपणो ले विराधियो,
हूं मरने हुओ कालो सांप ॥धि.दे.॥ 2 ॥

म्हारे पग हेठे आई थी मींडकी,
चेले साची वात कही देख ।
धिक् धिक् मैं चित्त निरमले ऊपरे,
मैं कीधो वूड़ो द्वेप ॥धि.दे.॥ 3 ॥

चेले तो वात चोखी कही,
मोने लागो पंचेन्द्रियनो पाप ।
धिक् धिक् मैं प्रायछित न लीधो पापरो,
मैं कीधी माहरी थाप[1] ॥ धि. दे. ॥ 4 ॥

---

1. जिद्द

कह्यो पडिकमरणा में तो पाधरो,
हूं हुवो महादुष्ट ।
धिक धिक - माने क्रोधज आवियो,
जठे हूं मुवो माथो फूट ।। धि. दे. ।। 5 ।।

तपस्या गमाई मांहरी,
अग में आरण अहंकार ।
धिक धिक-हूं सांप हुय गयो सांनियो,
हूं नर-भव आयो हार ।। धि. दे. ।। 6 ।।

हूँ हुवो छते धन देवालियो,
मैं लोह डोलियो[1] सोनो मेल ।
धिक धिक मैं रतन छोड़ लियो कांकरो,
हुई घरणी मोमें हेल ।। धि. दे. ।। 7 ।।

मैं केसर छोड़ केसूला लिया,
कपूर छोड़ने लीनी हीग ।
धिक् धिक् मैं अकार्य मोटो कियो,
हुय बेठो बावारो धीग ।। धि. दे ।। 8 ।।

अबे हूं हिवे हिंसा करूं नहीं,
तस जीवांरी घात ।
धिक धिक - वले क्रोध करूं नहीं,
क्षमा मोटी बात ।। धि. दे. ।। 9 ।।

तपस्या क्षीरण करलो रहे,
वले करलो क्षमा विशेप ।
धिक धिक - क्रोध तरणा फल पाड़वा,
मैं निजरे लीना देख ।। धि. दे. ।। 10 ।।

1. उठाया

सापरा भव में सूधो हुवो,
कोई मांसू न पामे त्रास ।
धिक धिक-विल में मुख घाली बेसे,
किणरे न जावे पास ।।धि. दे.।। 11 ।।

'तपोधन' अणगाररी,
पूरी हुई गई ढाल च्यार ।
रिख रायचन्दजी कहे सांभलो,
वले आगलो अधिकार ।धि. दे.।।12।।

-卐-

ढाल - 5

(राग – व्रत करावो श्रावक तणो)

तिण काले ने तिण समे,
भरतक्षेत्र इण नामोजी ।
'धनपुर' नगर सुहावणो,
सुखिया लोकना ठामोजी ।। 1 ।।

पुण्य प्रभावे सुख पामीये,
वले भोगवे सुख साताजी ।
लोक दौलतवन्त दानेसरी,
केई जिन-वयण में राताजी ।।पुण्य.।। 2 ।।

'रिपुमर्दन' राजा तिहां,
'धारणी' नामा राणी जी ।
रूप – महा रलियावणी,
मीठी जेहनी वाणी जी ।। पुण्य..।। 3 ।।

राय - राणी दोनूं रंग में,
सुख विलसे संसारो जी ।
सुहागण साची तिका,
तिणरे वश भरतारो जी ॥पुण्य.॥ 4 ॥

महाराणी मानीजती,
पुत्र - रत्न तिण जायो जी ।
नाम दियो 'पुरन्दर',
जेहनी कंचन-वर्णी कायो जी ॥पुण्य.॥ 5 ॥

कला बहोतर भणावियो,
भर जोवन भर रूपो जी ।
व्हालो घणो मात्तता भणी,
चतुराई कर चूंपो जी ॥पुण्य.॥ 6 ॥

पांचमी ढाल पूरी हुई,
रिख 'रायचन्दजी' कहे एमो जी ।
करम तणी गत वांकडी,
केवली भाखी एमो जी ॥पुण्य.॥ 7 ॥

卐—卐

दोहा

कुमर 'पुरंदर' ने सही, खाधो कालो सांप ।
तात मात रोवे घणा, भारी करे विलाप ॥ 1 ॥

शहर नगर पुर गाव में, हुवो हा-हा-कार ।
राय बोलाया गारुड़ी, पिण ए सगला में श्रीकार ॥ 2 ॥

तिण गारुड़ी मंत्र ने बले, भेला किया सब नाग ।
कुंवर ने डंक्यो जीको मती, बीजा सब जावो भाग ॥ 3 ॥

अगंध न कुल नो ऊपनो, एक रह्यो गारुड़ी गोडे सांप ।
बीजा सर्व परा गया, मन्त्र तणे प्रताप ॥ 4 ॥

ढाल–6

[राग— चौपाई नी]

मन्त्र - वादी हिवे बोल्यो आप,
सांभल रे तूं काला सांप ।
वमियो विष पाछो लीजिये,
कुंवर ने निर्मल कीजिये ॥ 1 ॥

कुंवर रो शरीर करदे शुद्ध,
परो जा तूं पीने दुद्ध ।
जो पाछो विष लेवे नाहीं,
तो पड़ जा तूं अगन रे मांही ॥ 2 ॥

विष पाछो नहीं लीनो नाग,
जाय पड़यो जिहां बलती आग ।
सांप अगन में भस्म हुवो,
राय नो कुंवर 'पुरदर' मुवो ॥ 3 ॥

राय-राणी किया केई विलापात,
मोहनी नी कांई अचिरज बात ।
राय नो जाग्यो अन्तर द्वेष,
जीवतो साप न करे प्रवेश ॥ 4 ॥

चाकर छूटा राजा तणा,
देशा मांहे सर्प मार्या घणा ।
थोडी कोई देखावे आय,
तिण ने एक मोहर देवे महाराय ॥ 5 ॥

इम मन्त्रवादो लई जड़ी,
बिल - बारणे करदी खड़ी ।
ते जड़ी रो विष जावे बिल मांय,
ते सर्प बारे आवे सब चलाय ॥ 5 ॥

डोडी देखे तरे रायनी आंख,
घणा सर्पा ने मार्या नांख ।
म्हारे कुंवर ने सर्प मारियो,
राय सुत वैर ने वालियो ॥ 6 ॥

पूरी हुय गई छट्ठी ढाल,
मूयंग[1] ऊपर रूठो भूपाल ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे सुणजो सहू,
आगे बात चले छे बहू ॥ 7 ॥

– दोहा –

'तपोधन' अण गार ते, मरने हुवो सांप ।
इण समे सथारो कियो, पचख्या सगला पाप ॥ 1 ॥
मन्त्र-वादी इण सर्प ने, काढण लागाबार ।
काढ काढ ने काटियो, पिण नाण्यो क्रोध लिगार ॥ 2 ॥

---

1. सापो

सर्प आऊखो पूरो करो, तिर्यंच नो भव मेट ।
'रिपु मर्दन' राजा घरे, उपनो पट राणी रे पेट ।। 3 ।।

नाम अधिष्टायक देवी, तिण कही रायने वात ।
तुम राणी रे वेटो हुसी, अबे मकरो सर्पनी घात ।। 4 ।।

वात सुणी देवी तणो, राय हिंसा दीनी छोड ।
राणी रे वेटो जनमियो, पूगा मन रा कोड ।। 5 ।।

ढाल–7

[राग — नींदड़ली वैरण हुय रही]

मास सवा नव जनमियो,
धारणी हो राणी पुत्र रतन के ।
हुवा रंग - रत्नी ने वधावणा,
राय-राणी हरख्या घणो मन के ।। 1 ।।

थे आवो गावो सहलियां,
सुवागण ए सुन्दर सुख-मालके ।
केई गीत गावे गहरो ढाल रा,
सुणतां हरसे हो घणा बाल गोपाल के ।।थे.।। 2 ।।

घणा वाजा गाजा वाजी रह्या,
वधाई हो वांटे ठामो-ठाम के ।
दियो दसोटन जीमायने,
'नागचन्द्र' हो कुमरजी रो नाम के ।।थे.।। 3 ।।

कुंवर पंच धायां पाली जतो,
उतारे हो वले हाथो हाथ के ।

हीरे रतन-जड़तरे पालणे,
देख देखके हो हरखे मायने तातकि ।। थे. ।। 4 ।।

भर जोवन जब आवियो,
कन्या परणाई हो कुंवर ने जोग के ।
नित सुख विलसे संसार ना,
पांचू इन्द्रिय ना भोगे काम-भोग के ।।थे.।। 5 ।

ए तो कुंवर रहे नित केल में,
भोगी भवंर हो भायणी भरतार के ।
छऊं ऋतु ना सुख भोगवे,
नाटक ना हो पड़ता घुंकार के ।। थे. ।। 6 ।।

ए तो सातवीं ढाल सुहावणी,
व्हाली लागे हो कंठ वाला री राग ।
रिख रायचन्दजी कहे हिवे,
सांभलो 'नागचन्द्र' किम पावे वैराग के ।। थे ।। 7 ।।

:: दोहा ::

तिण काले ने तिण समे, करता उग्र विहार ।
'धर्म-घोष' अणगार समोसरया, साध अनेक परिवार ।। 1 ।।

परिषदा आई वांदवा, 'रिपु-मर्दन' महाराज ।
'नागचन्द्र' पिण आवियो, मुनिवर-वांदण काज ।। 2 ।।

मुनिवर देवे देशना, विध सूं करे वखाण ।
अमृत वाणी साध री, केई समझे चतुर सुजाण ।। 3 ।।

-x-

ढाल–8

[राग— खड़का नो]

जोबन मांय ए जोर झीले रह्यो,
रूप स्वरूप ने चूंप भारी ।
तूं फूट रो फाबतो पानज चावतो,
तूं सिणगार सझतो प्रेम-प्यारी ।। 1 ।।

अथिर संसार मरजावणो मानवी,
एक दिन राखरी होय ढेरी ।
जीवतो पाहुणो माटी मिल जावणो,
साधरी वाणी तो खूब भेरी ।। अथिर. ।। 2 ।।

राय राणी ने पासता[1] श्री पालक,
काल री नोबतां रहो बाजी ।
एकला चालिया किण नहीं पालियां,
जग-चोक में देखलो चहर बाजी ।। अथिर. ।। 3 ।।

बागा ने वेश तूं पहर तो नवा नवा,
केश भंवर थांरा हुता काला ।
तूं होय गयो डोकरो[2] हसे अबे छोकरा,
ज्यूं खंखर होय गया वृक्ष-डाल ।। अथिर. ।। 4 ।।

सेठने शाहजी शाहब हुता शहर में,
ज्यांरे गुमासता गोडे हाथ जोड़ी ।
गादियां बैठते हुकम चलावता,
माल ने महल गया सर्व छोडी ।। अथिर. ।। 5 ।।

---

1. बादशाह 2. वृद्ध

सोलेई सिरणगार कर सोभती सुन्दरी,
सोवन - वर्णी ने शोभ रही ।
झीलती जोवन राजती रूप में,
साध - संगत विना यूंही गई ॥ अथिर ॥ 6 ॥

भोग संयोग मेल गया मानवी,
राय ने रंक सहू नर - नारी ।
देवता देवी ने इन्द्र इन्द्राणी पिण,
काल[1] कने गया सर्व हारी ॥ अथिर. ॥ 7 ॥

धर्म नित्य कीजिये लाहो लीजिये,
ज्यूं चित्त में नित्य थे चैन पावो ।
रोग ने सोग दलद देखो नहीं,
स्वर्ग ने मुगत रा सुख पावो ॥ अथिर. ॥ 8 ॥

मोह नींद थी जागियो वाणी सुण वैरागियो,
कुंवरजी 'नागचंद्र' तो संयम लियो ।
दुक्कर करणी करे अब सांथरो[2],
समता - रस पूरण पीयो ॥ अथिर. ॥ 9 ॥

ढाल आठमी बणी जात खड़का तणी,
वले रिख 'रायचन्दजी' कहे सुणो आगे ।
कुमर वैरागियो मुगत रो रागियो,
विनीत चेलो तो वल्लभ लागे ॥ अथिर. ॥10॥

—卐—

1. आगे-पास 2. अच्छी

– दोहा –

'नागचन्द्र' संयम लियो, पाले[1] पंच आचार ।
महाव्रत पाले निर्मला, विनय विवेक विचार ॥ 1 ॥
भूख लागे भरे हियो, क्षुधा[2] खमी नहीं जाय ।
परभाते लेई पातरा, आहर लेवण ने जाय ॥ 2 ॥
'कूर गडू' कर वो करे, तपसी रा गुण ग्राम ।
आहार करे नित ते सही, तिणसूं 'कूर गडू' दियो नाम ॥ 3 ॥

ढाल–9

[राग—तिण अवसर मुनिराय]

मुनिवर मोटा चार,
ज्यांरे गुणारो नहीं पार के ।
ऋषिजी माध—
चारुं मास मास-खमण करे पारणो ए। ।1॥

तपसी चारुं ही साध,
धन मानव-भव लाध के ।
ऋषिजी साध—
उग्र विहार करता थका ए ॥ 2 ॥

कूरगडू ज्यांरे साथ,
ज्यांरी सेवा करे दिन रात के ।
ऋषिजी माध—
पांचू ही साध सुहावणा ए ॥ 3 ॥

---

1. ज्ञानोचार, दर्शनाचार, चारित्राचार तयाचार, विर्माचार 2. सहन

कूरगड़ निन खाय,
एक पाँखियाँ मोधी न जाय के ।
ऋषिजी साध—
भूख[1] डीलां में अति घणी ए ॥ 4 ॥

भूखरी वेदना साय,
जासे जीव निकलियो जाय के ।
ऋषिजी साध—
कंपे मुनि रो कालजो ए ॥ 5 ॥

भूख महा - विकराल,
समता गिणे नहीं काल के ।
ऋषिजी साध—
भूख थी नाश होवे मरी ए ॥ 6 ॥

भूख सूं कट जावे देह,
भूखो माणस काढे छेह के ।
ऋषिजी साध—
भूखो प्रीत तोड़ै पाछली ए ॥ 7 ॥

भूखां रो कोनी लागे मन,
भूखां रो तड़फे तन के ।
ऋषिजी साध—
भूखां रो जीव [2]जंक पावे नहीं ए ॥8॥

पौं उगते सूर,
कूरगड़ू खावे कूर के ।

1- पेट में....शरीर में । 2- चैन ।

ऋषिजी साध—
एक पोरसी पिण पचखे नहीं ए ॥9॥

एक छमछरी रो करवो वास,
ज्यांलग पिंड में सांस के ।
ऋषिजी साध—
साधु न करे पारणो ए ॥10॥

एक छमछरी रो चौविहार,
कूरगडू खावे आहार के ।
ऋषिजी साध—
वले दूजी बार दाख्यो नहीं ए ॥11॥

मुनि क्षमा में रह्या झूल,
जांणे कमल रो फूल के ।
ऋषिजी साध—
कुमलावे नहीं क्रोध में ए ॥12॥

क्रोध न आवे मन,
तपे नहीं तिण रो तन के ।
ऋषिजी साध—
मुनि उपसमाई आतमा ए ॥13॥

शासन देवीयां चार,
केवली वचना ने धार के ।
ऋषिजी साध—
पांचा में पहली केवल कुण पामसी ए
॥14॥

कूरगडू में क्षमा असमान,
काले पामसी केवल ज्ञान के।
ऋषिजी साध—
देवी केवली कने सांभल्यो ए ॥15॥

च्यारुं आई चलाय,
ज्यां बेठा पाचूं मुनिराय के।
ऋषिजी साध—
पहली कूरगडू ने वंदणा करी ए ।16।

तपसी तो साधु चार,
ज्यांने क्रोध चढ्यो तिण वार के।
ऋषिजी साध—
ज्यां च्यारुं देवीयां ने दाखियो ए ॥18॥

थे इणने वनणा करी करजोड़,
थे च्यारुं तपसी ने दिया छोड़ के।
ऋषिजी साध—
थे देव्यां चारुं चूक गई ए ॥18॥

वलती देव्यां बोले च्यार,
थे सांभलो चारुं ही अणगार के।
ऋषिजी साध—
में पहली वनणा करी विचार ने ए ॥19॥

थांरो तपस्या सूं [1]मुसै गयो तन,
पिण क्रोध थांरे वसियो मन के।
ऋषिजी साध—
अहंकार घणो थांरे अंग में ए ॥20॥

1- कृश, क्षीण।

'कूरगडू' नित खाय,
पण क्षमा घणी पिंड मांय के ।
ऋषिजी साध—
क्षमा तुले तपस्या लागे नहीं ए ।।21।।

धन 'कूरगडू मुनिराय,
मोसूं गुण कह्या कठे लग जाय के ।
ऋषिजी साध—
श्रो काले केवल पामसी ए ।।22।।

इणमें जाणिजो मत फेर न फार,
धन इणरो श्रवतार के ।
ऋषिजी साध—
तिणसूं म्हां वनणा करी ए ।।23।।

च्यारुं तपसी सुण बात,
मानी नहीं तिल मात के ।
ऋषिजी साध—
देव्यां तो चलती रही ए ।।24।।

पूरी हुय गई नवमी ढाल,
रिख 'रायचन्दजी' कही ए रसाल के ।
ऋषिजी साध—
हिवे श्रागे निरणो सांभलो ए ।।23।।

– दोहा –

तपसी साध हांसो करे, कूरगडू कहे एम ।
तूं काले केवल पामसी, थारी करणी रो कहणो केम ।।1।।

म्हें छद्मस्थ तूं केवली, मैं देख लेस्यां प्रभात ।
मैं पुच्छा करस्यां तने, तूं दाखे म्हांरा मनरी बात ।। 2 ।।
मैं मास - मास करां पारणो, तूं तो रोटी - रोड़ ।
मोसा[1] मारे मुलकता[2], च्यारुं हो रह्या मुंह मचकोड़ ।।3।।
'कूरगड़ू' कहे करजोड़ ने, हूं थांहरी वलिहार ।
मोने केवल किम उपजे, हूं नितरो जीमूं आहार ।। 4 ।।
थे च्यारुं तपसी ठाना घणा, हूं आहार करुं नित मेव ।
व्यवहार थे तो देखलो, निश्चय जपो अरिहंत देव ।। 5 ।।

ढाल-10

[राग—एक सदा जिन-धर्म आदरो]

एक 'कूरगड़ू' मन वस रही क्षमा,
मुनि क्रोध ने काने कीधोजी ।
मांहिला वारला परीषह जिण जीतिया,
समता-रस पूरण पीधोजी ।।एक.।।1।।

क्षमा रे तुले कोई तपस्या न लागे,
क्षमा देखतां तपस्या मोरीजी ।
क्षमा - सूर एक अरिहंत देवा,
सर्व करणी में क्षमा दोरीजी ।।एक.।।2

तपसी तो साध क्रोध तणे वसे,
देवे सोले देशां ने वालीजो[3] ।
क्रोध सरीखो दुसमन नहीं कोई,
क्रोध देवे तपस्या ने गालीजी ।।एक.।।3।।

1- तानें । 2- मुस्कराते । 3- जलादेवे ।

'कूरगडू' मुनि श्रो गोचरी उठ्या,
निर्दोष भिक्षा मुनि लायोजी ।
लूखो तो ग्राहार चले नहीं लगावरण,
परण समता सूं सुख पायोजी ।।एक.।।4

तपसी साध ने ग्राहार देखियो,
तपसी ग्राहार मांहे थूक दीधोजी ।
परण 'कूरगडू' क्रोध न ग्राण्यो,
इरणथी ग्रमृत कर लीधोजी ।।एक.।।5।।

क्षमा करतां केवल पाम्यो,
'कूरगडू' रिख - रायोजी ।
देवता महोच्छव कियो केवल नो,
च्यारु साधां ग्रचरज पायोजी ।।एक.।।6

पछे च्यारु तपसी तो मनमां विचार्यो,
'कूरगडू' गुरण भारीजी ।
ग्राहार करतां तो केवल उपनो,
इरण क्षमा करी पीतो[1] मारीजी ।।एक.।।7।।

म्हां तपस्या रो तो जोमज राख्यो,
मैं 'कूरगडू' ने न गिरिणयो कांईजी ।
मैं तो मन रा लाडू तो मनमां खाया,
परण ग्ररू-वरू लियो जोईजी ।।एक.।।8

मैं तपस्या रो मान ज कीधो,
परण जाने मन म्हांरो मेलोजी ।
नित जीमें तेहनो मैं निन्दा कीधी,
मैं गुरण रो न लीधो गेलोजी[2] ।।एक.।।9।।

1- सन । 2- रास्ता ।

च्यारु ही साध करे आपणी निन्दा,
मे कांय[1] काड्या 'करगडू' ना केवाजी ।
उत्तम साधु हुवा केवलज्ञानी,
इणरी सुर-नर सारे सेवाजी ।।एक.।10

चित्त निर्मल हुवा च्यारु ही तपस्वी,
पछे हुवा केवल ज्ञानीजी ।
पांचू ही मुनिवर मुगत विराज्या,
क्षमा - धर्म मन मानीजी ।।एक.।।11।।

सूत्र **भगवती-चूर्णी टीका** में,
इणरी कांईक[2] उठे वात चालीजी ।
ए जोड़ी रिख **रायचंदजी** कथा अनुसारे
दशमी ढाल ए व्हालीजी ।।एक.।।12।।

'कूरगडू' मुनि रा गुण गावतां,
जिण ने उपनो केवल ज्ञानोजी ।
दशमी ढाल सम्पूर्ण कीधी,
क्षमा-धर्म प्रधानोजी ।।एक.।।13।।

इण अधिकार में आयो जे कोई,
अधिको ने ओछो होयोजी ।
आगो पाछो कोई आखर[3],
ते मिच्छामि दुक्कडं मोयोजी ।एक.14।

प्रसादे **पूज्य जयमलजी** रे,
कियो **आसोज मास** अभ्यासोजी ।
संवत **अठारे ने वरस बयालिसे,**
कियो **नागौर** शहर चोमासोजी ।।एक.।।15।।

1- व्यर्थ । 2- कुछ । 3- अक्षर

卐 आषाढ़ - भूति 卐

:: दोहा ::

दर्शन परीषह बावीसमो, काठो तिण रो कान ।
पांचूं दूषण परिहरी, पक्का राखो परिणाम ।। 1 ।।

'उत्तराध्ययन' कथा मध्ये, चाल्यो 'आषाढज भूत' ।
पहले परिणाम पोचा पड़्या, पछे सेंठा दोधा सूत ।। 2 ।।

ढाल-1

(राग— सकोमल सावरी)

आषाढ - भूत अणगार,
बहु शिष्यां रे परिवार ।
मन मोहन स्वामी—
आचारज चढ़ती कलाए ।। 1 ।।

जाणे आगम अर्थ अपार,
हेतु दृष्टान्त अनेक प्रकार ।
मन मोहन स्वामी—
चेला भणाव्या घणी चूंप सूं ए ।। 2 ।।

एक शिष्य कियो रे संथार,
गुरु बोल्या तिण वार ।
सुण [illegible] म्हारा—
[illegible]वे देवता ए ।। 3 ।।

तो तूं म्हाने कहोजे आय,
जेज करजे मती कांय ।
सुण चेला म्हारा—
गुरु सम जग में को[1] नहीए ॥ 4 ॥

दोय तीन चेलां कियो संथार,
पण किणहीन पूछी म्हांरी सार ।
सुण चेला म्हारा—
किण ही आय कह्यो नही ए ॥ 5 ॥

थूं म्हारे चोथो चेलो होय,
तो समो व्हालो नहीं कोय ।
सुण चेला म्हारा—
मैं साज दियो संथारा तणो ए ॥ 6 ॥

तूं म्हारे सीस छे सुविनीत,
थांरी म्हाने पूरी प्रतीत ।
सुण चेला म्हारा—
तूं अन्तर भक्ता माहरो ए ॥ 7 ॥

तूं मत जाजे मने भूल,
कह्यो राखीजे कबूल ।
सुण चेला म्हारा—
तूं तो वेगो आवजे ए ॥ 8 ॥

चेलेजी छोडया प्राण,
उपनो है देव विमाण ।

---

1. कोई अन्य

मन मोहन स्वामी—
ऋद्धि वृद्धि पामी घणी ए ।। 9 ।।

जग-मग महलां री जोत,
जाणेक सूरज उद्योत ।
मन मोहन स्वामी—
जालि झरोखा झील रह्या ए ।।10।।

थांभे पुतलियां रही फाब[1],
महलां रे ओलूं दोलूं बाग ।
मन मोहन स्वामी—
रतन जड़ित रा आंगणा ए ।।11।।

पागा हीरां जड़ियां जोय,
ईस ऊपला सोना रा होय ।
मन मोहन स्वामी—
मणियां रो वाण पंच रंगनो ए ।।12।।

लूम्बा रो कसियो सेज,
दीठा ही उपजे हेज[2] ।
मन मोहन स्वामी—
सुहालो माखण सारखो ए ।।13।।

चोवा चन्दन चंपेल,
जाणे अन्तर हुवो रेला पेल ।
मन मोहन स्वामी—
चम्पा चमेली खिल रह्या ए ।।14।।

---

1. शोभित हो रही 2. प्रेम

कपड़ा मई[1] गलतान,
गहणा रो नही कोई ज्ञान ।
मन मोहन स्वामी —
देखंता लोचन ठरे ए ॥15॥

सुन्दर महल रु बाग,
निकले छत्तीस ही राग ।
मन मोहन स्वामी —
नाटक बत्तीस प्रकारना ए ॥16॥

दीपती देवियां री देह,
लागो नवलो नेह ।
मन मोहन स्वामी —
देव्यां सूं मोह्यो देवता ए ॥17॥

एक नाटक रो धुंकार,
वरस निकले दोय हजार ।
मन मोहन स्वामी —
गुरु कह्यो याद आवे कठे ए ॥18॥

लग रह्या सुखां रा ठाठ,
गुरु जोवे चेला री वाट ।
मन मोहन स्वामी —
देवता किम आयो नहीं ए ॥19॥

चेलो न आयो अजेह[2],
पड़ियो गुरां ने सन्देह ।

---

1. बारीक 2. अभी तक

मन मोहन स्वामी—
समकीत में शंका पड़ी ए ॥20॥

ए थई पहली ढाल,
रिख 'रायचन्दजी' भाखे रसाल ।
मन मोहन स्वामी—
आगे निर्णय सांभलो ए ॥21॥

– दोहा –

आषाढ भूत इम चितवे, नहीं स्वर्ग नहीं मोख।
निश्चय नहीं नारकी, सगली बातां फोक[1] ॥ 1 ॥
चित वल्लभ चेलो हुतो, थो म्हारे पूरो प्रेम।
सूत्र वचन साचा हुवे, तो पाछो नावे केम ॥ 2 ॥

ढाल-2

(राग—सहेल्यां ए आंबो मोरियो)

अषाढ भूत आ तेवड़ी[2]
पाछो जाऊं हो म्हारे घर-वासक।
सुन्दर थी सुख भोगवूं,
हूं विलसूं हो वले लील-विलास को ॥
चारित्र थी चित्त चलगयो,
घर चाल्यो होई श्रद्धा भ्रष्ट को ॥ 1 ॥

तिण समे सिंहासण कंपियो,
अरिहन्त वचन उथापिया ।

1. मिथ्या 2. सोचा

हुवो खाली हो गमाई सम्यक् ज्ञान ।।
देव दीधो हो तव अवधि ज्ञान के ।
गुरां ने घरे दीठा जावतां—
मारग मांडयो हो नाटक प्रधान के ।चा.।।2।।

छः मास तांई नाटक निरखियो,
आजारज हो मन हुवा हुलास के ।
पूरो हुवो नाटक पांगुर्या[1],
विहार करता हो आया वन वासके ।।चा०।।3।।

दया परीक्षा करवा भणी,
देव कीधा हो नाना छ वालके ।
गहणा भारी ज्यांरे पहरवा,
रिमझिम हो करता सुकमाल के ।।चा०।।5।।

छऊं वालक वोल्या तिण समे,
पाय लागां हो जोड़ी दोनूं हाथ के ।
साता छे पूज ! आपरे,
खमावां हो हम स्वामी नाथ के ।।चा०।।6.।

पृथ्वी अप तेऊ वायरो,
वनस्पति हो छठो त्रस काय के ।
छेऊं मैं नाना छोकरा,
म्हारा दीना हो मांयता नामके ।।चा०।।7।।

दया पाली मैं घणी छ कायनी,
दीठी नहीं हो दया में भली वार के ।

---

1. चलने लगे

कोई पुन्य पाप रो फल पावे नहीं,
तो छऊं रा हो लेऊं गहणा उतार के ।।चा०।।8।।

छः वांने पास बुलाय ने,
गहना गाण्ठा हो सहू लीधा खोलक ।
छऊं रा गला मसोसिया,
बालुडा हो मूंडे नसकिया बोल के । चा.।9।।

गृहस्थी रे धन विना ना सरे,
पाने[1] पड़ियो हो म्हारे मोकलो[2] माल के ।
पात्रा गहणा सूं भर करी,
मुलकंता हो चाल्या मन खुशाल के ।।चा०।।10।।

दया पण दिल सूं गई,
देव दीठा हो गुरु कीधो अकाज के ।
हूं अजेही मारग आणसूं
जो रही छे आंखों में लाज के ।।चा०।।11।।

ए दूजी ढाल पूरी थई,
रिख 'रायचन्दजी' कहे एम के ।
चतुराई देखो देवता तणी,
गुरां ने हो घाले ज्ञान में केम के ।चा०।।12।।

ढाल-3

(राग— धर्म आराधिये)

सथवाड़ो[3] घणो बेकरियो ए,
करिया नर नारी ना ठाठ के ।

---

1. प्राप्त हुआ 2. बहुत 3. समूह

सेजवाला ने घोड़ा घणा ए,
चेल[1] घणी गह घाट के ।
पूज पधारिया ए ।। 1 ।।

जाण जूना श्रावक समझणा ए,
मूंडे मुखपति वांध के ।
प्रदक्षिणा दई करी ए,
भली तरे पग वांद के ।। पूज० ।। 1 ।।

म्हैं आपने वांदण आवता ए,
म्हांरे पूरो धर्म सूं राग के ।
आप सामां मिल्या ए,
भला छे माहरा भाग के ।। पूज० ।। 3 ।।

मैं दर्शन दीठो राज रो ए,
म्हारे दूधां वूठा मेह के ।
मन वांछित फल्पा ए,
आज पावन हुई देह के ।। पूज० ।। 4 ।।

इण दरसण रे वारणे ए,
म्हैं वारी जावां वार हजार के ।
किरपा कीजिये ए —
लीजे सूझतो आहार के ।। पूज० ।। 5 ।।

गुरु कहे श्रावक सांभलो ए,
थांरे भलो धर्म नो रंग के ।

1. चहल-पहल

पिण आहार वहरण तणो ए,
हिवड़ां[1] नहीं छे म्हारे ढंग के ॥पूज०॥ 6 ॥

म्हारे वहरण रा भाव को नही ए,
थे मत करो खांचा ताण के।
हठ नहीं कीजिये ए,
थे छो अवसर ना जाण के ॥पूज०॥ 7 ॥

तब वलता श्रावक बोलिया ए,
जोड़ी दोनू हाथ के ।
हठ नहीं कीजिए ए,
क्यांने[2] खांचो आगी वात के ॥ पूज० ॥ 8 ॥

दोय प्रहर तो ढल गया ए,
थांरे हुवो भिक्षा रो काल क ।
खीचड़ी ने बड़िया भली ए,
ऊना रोटा ने घृत दाल के ।। पूज० ॥ 9 ॥

ओ दाखा रो धोवण देख लो ए,
आ पूड़ियां भरी है परात के ।
मन हुवे तो मिठाई लीजिये ए,
लिराओ आला मिसरी नीवात के ।पू.।10।।

गुरां ने विना वह राविया ए,
मांने जीमण रो नेम के ।
बेगा काढो पातरा ए,
थे झोली खोलो नहीं केम ।। पूज० ॥11॥

---

1. इस समय 2. किसलिये

थे किम बहराव सो ए,
कोई नहीं जोरावरी को काम के।
थे झोली खेंची झेली रह्या ए,
म्हारा निश्चय नहीं परिणाम के ।।पू.।।12।।

श्रावक मिलिया सांवठा ए,
लीधा म्हांने घेर के ।
जावण क्यूं दो नहीं ए,
हूं हुय गयो मण रो सेर के ।।पूज०।।13।।

मैं श्रावक घणा ही देखिया ए,
पण ओ हठ ने ओ झोड़ ।
कठे नही देखियो ए,
ओ दीठो इणहिज ठोड़ के ।।पूज०।।14।।

पूज सुणो थे पाधरा[1] ए,
मांडो पात्रो मत करो जेज के ।
मैं समगति श्रावक आपरा ए,
हुलसे म्हांरो हेज के ।। पूज० ।।15।।

इतरा चरितज चालिया ए,
तीजी ढाल मझार के ।
रिख 'रायचन्दजी' इम कहे ए,
आगे सुणो अधिकार के ।। पूज० ।।16।।

—●—

1. सीधी तरह

ढाल 4
(राग—नणदल री)

आमी ने सामी खांचता,
झोली खोली नीठा मीठ ।।गुरांहोजी ।।
पात्रा गहनासूं भरया,
चवड़े लोकां दीठ ।।गुरांजी.।। 1 ।।

थे गहणा कठासूं लाविया,
कहो थांरी बीतक बात ।।गुरांजी.।।
थे बेस लजायो लोक में,
कह्यो कठा लग जात ।।गुरांजी.।। 2 ।।

इतरे वाहरु[1] आविया,
वले आया बाप ने माय ।।गुरांजी.।।
गहणा तो गया आगड़ा,
म्हांरा बेटा देवो बताय ।।गुरांजी.।।3।।

तात मात कहे रोवतां,
सुत विन गेणां साल ।।गुरांजी.।।
कुरले म्हांरा कालजा,
ज्यां लग नहीं निरखां लाल ।।गु.।।4।।

वेगा मोयने बतायदो,
जेज करो मती काय ।।गुरांजी.।।
थे छाने कठेई छिपाविया,
म्हांरो जीव निकलियो जाय ।।गु.।।5।।

1- ढूढने वाले

जीवता हुवे तो जोयलां,
मुवा हुवे तो देश्यां दाग ।।गुरांजी.।।
गुरु आंख्या मीच उभा रह्या,
आवी लाज अथाग ।।गुरांजी.।। 6 ।।

जो धरती फाटे परी,
तो हूँ पेश[1] जाऊं पाताल ।।गुरांजी. ।
मोटो नरथ में कियो,
में मार्या नाना बाल ।।गुरांजी. ।।7।।

अरिहंत सिद्ध साध धर्म नो,
चित्त धर्या शरण चार ।।गुरांजी.।।
अवकी[2] आण विरिया पड़ी,
मुझ शरणां रो आधार ।।गुरांजी.।।8।।

ए देवता चरित देखाविया,
एक रही गुरां में लाज ।।गुरांजी ।।
लाज रही तो मारग आवसी,
लाज सूं सुधरे काज ।।गुरांजी.।। 9 ।।

गुरु समझावा कारणे,
चोथी ढाल में देख ।।गुरांजी.।।
रिख 'रायचन्दजी' कहे सांभलो,
आगे पांचमी ढाल विशेष ।।गुरा.।।10।।

— दोहा —

वाहरु लागां बाघ ज्यूं, गुरु हुवा घणा भय-भ्रंत ।
देवता ज्ञान में देखियो, आण वण्यो अब तंत ।। 1 ।।

1- प्रवेश 2- कठिन

सर्व माया समेट ने. साधु रूप बणाय ।
मत्थेण वनणा मुख सूं कही, ऊभो आगे आय ।। 2 ।।
आप आवता कठे अटकिया, कांई दीठो मारग मांय ।
एक पलक नाटक पेखियो[1], तब चेलो बोले आय ।। 3 ।।
पलक कहो किण कारणे, नाटक निरख्यो छ मास ।
देखो सूरज मांडलो, जोवो हिये वीमास ।। 4 ।।

ढाल-5

(राग – कोयलो पर्वत धूंधलो)

रूप प्रगट कियो देवता रे लाल,
करी ऋद्धि नो विस्तार ।। गुरांजी लाल ।
हूं चित्त-बल्लभ चेलो पूजरो रे लाल,
हूं उपनो स्वर्ग मझार हो ।। गुरांजी. ।। 1 ।।

राखो अरिहंत वचनां री आसता रे लाल,
टालो समकित दोष हो ।। गुरांजी ।।
स्वर्ग नरक निश्चय जाणजो रे लाल,
कर्म मुकाया मिलसी मोक्ष हो गुरां. राखो. ।।

हूं संजम पाली हुवो देवता रे लाल,
रतन जड़त रा विमाण हो ।। गुरांजी. ।।
दोय हजार वर्ष पूरा हुवे रे लाल,
एक नाटक रो प्रमाण हो ।।गुरां राखो.।।3।।

ज्यूं थांने नाटक मोहिया रे लाल,
जिम मैं मोह्या एम हो ।। गुराजी. ।।

1. देखा

मैं थांने विसर गयो ए लाल,
लागो नवलो प्रेम हो ।।गुरां. राखो.।। 4 ।।

समकित में सेंठा किया रे लाल,
टाल दियो मिथ्या शाल हो ।।गुरांजी.।।
गुरु सूं[1] उसरावण हुवो रे लाल,
कर दिया धर्म में लाल हो ।।गुरा. राखो.।।5।।

देवता प्रतिबोध परो गयो रे लाल,
गुरु लीधो वले संजम भार हो ।।गुरांजी.।।
पछे चारित पाली चित्त निर्मले रे लाल,
वले अवरां[2] सूं कियो उपगार हो ।।गु.राखो.।।

आषाढ - भूत भली तरे रे लाल,
जिन मारग दीपाय हो ।।गुराजी.।।
अन्त समे अणसण कियो रे लाल,
मोक्ष गया कर्म खमाय हो ।।गुरांजी. राखो.।।7।।

जिम आषाढ भूत दिढ[3] रया रे लाल,
तिम दृढ रहिजो चतुर सुजाण हो ।। गुरां. ।।
दर्शन परीषह जीतवो रे लाल,
ज्यूं पावो निर्वाण हो ।। गुरां. राखो. ।।8।।

'उत्तराध्ययन' अध्ययन **दूसरे रे लाल,**
कथा में अधिकार हो ।। गुरांजी. ।।
तिण अणुसारे माफक करी रे लाल,
रिख **'रायचन्दजी'** कि विस्तार हो ।।गुरां. राखो.।।9।।

---

1. उऋण 2. दूसरो से 3. दृढ़

'समकित दृढ' पंच ढालियो रे लाल,
कह्यो कथा मांय जोय हो ।।गुरांजी ।।
ओछो अधिको कोई आवियो रे लाल,
मिच्छामि दुक्कड़ मोय हो ।।गुरां. राखो.।10।

पूज्य **जयमलजी** प्रसाद थी रे लाल,
कियो '**नागौर**' शहर **चौमास** हो ।।गुरां ।।
पंच ढालियो जोड़यो जुगत सूं रे लाल,
समकित जोत प्रकाश हो ।। गुरांजी. राखो. ।।11।।

संवत अठारे छत्तीस में रे लाल,
आसोज वद दशमी दिन हो ।।गुरांजी.।।
राखो समकित निरमलो रे लाल,
ते जग मांही धन्न हो ।।गुरांजी. राखो।।12।।

:: नंदन मणिहार ::

- दोहा -

'ज्ञाता' सूत्र के मध्ये, 'तेरमें' अध्ययन विस्तार ।
चरित्र नंदन-मणिहार नो, तेहणो सुणो अधिकार ।। 1 ।।

मानुष - भव में हारियो, समकित नो फल सार ।
तिर्यंच भव में पामियो, समकित ज्ञान विचार ।। 2 ।।

ढाल-1

(राग— धर्म दलाली चित्त करे)

तिण काले ने तिण समे,
'सौधर्म' नामे देव लोकोजी ।
बत्तीस लाख विमाण छे,
घणा देव देवी नो थोकोजी[1] ।।
ज्ञानी गुरु इम उपदिसे ।। 1 ।।

च्यार सहस्र सामानिक देवता,
च्यार अग्र-महीषी नारोजी ।
परिषदा तीनज तिम वली,
सूर्याभ जिम विस्तारोजी ।।ज्ञानी.।। 2 ।।

भोग भोगवे देवता सम्बन्धि,
सवने लागे मीठोजी ।
अवधि ज्ञान प्रयुंजने[2],
'जम्बू' द्वीप ने दीठोजी ।। ज्ञानी. ।। 3 ।।

विचरे श्री वर्द्धमानजी,
'सूर्याभ' देव ज्यूं आयोजी ।
जिम नाटक 'दर्दुर' करो,
आयो जिण दिस जायोजी ।।ज्ञानी.।। 4 ।।

वीर भणो वनणा करी,
पूछे गौतम स्वामोजी ।

1. समूह 2. ज्ञान लगाकर देखा

ए रिध एणे देवता,
किण करणी सूं पामीजी ।। ज्ञानी. ।। 5 ।।

-: दोहा :-

वीर कहे सुण गोयमा ! इण हिज जम्बू द्वीप ।
'भरत' क्षेत्र नामे भलो, सांभल मुझ समीप ।। 1 ।।

ढाल-2
(राग — कपूर हुवे अति ऊजलो ए)

'राजगृही' नगरी भलीजी,
'गुणशील' नामे बाग ।
'श्रेणिक' नामे राजियोजी,
घणो धर्म सूं राग ।।
हो गौतम ! भाखे वीर जिनन्द ।। 1 ।।

'नन्दन' मणिहार वसे तिहाजी,
दीपन्तो रिधवन्त ।
तिण काले ने तिण समेजी,
समोसया अरिहन्त हो ।। गौतम ।। 2 ।।

परिषदा आई वांदवाजी,
आयो 'श्रेणिक' राय ।
'नन्दण' मणिहार आवियोजी,
वन्द्या जिनना[1] पाय हो ।।गौतम ।। 3 ।।

---

1. जिनेन्द्र भगवान के

धर्म सांभल ने समझियोजी,
लिया श्रावक ना व्रत बार ।
'राजगृही' नगरी थकीजी,
कियो वीर विहार हो ।। गौतम ।। 4 ।।

'नन्दन' ने हिवे एकदा जी,
मिल्या मिथ्याती आय ।
कर्म ने जोग क्रिया घटीजी,
विरह साधुनो थाय हो ।। गौतम ।। 5 ।।

- दोहा -

संगत घटी साधु तणी, नहीं दर्शन नहीं सेव ।
साध - वचन नहीं सांभले, लगी मिथ्यातनी टेव ।। 1 ।।

समकितनी पर्याय घटी, वधियो अति मिथ्यात ।
मिथ्या मत मांहे पड़यो, देखो कर्म की वात ।। 2 ।।

ढाल-3

(राग— गोरी दिल व्रस रह्यो)

ग्रीषम काले एकदा, करड़ो[1] महिनो जेठ ।
चौविहार तेलो कियो, 'नन्दन' नामा सेठ ।।
संग बुरो मिथ्यात नो ।। 1 ।।

पौषध - शाला पोसह लियो,
भूख तृषा लागी आय ।

1. कठिन

परीषह करड़ो ऊपनो,
जाणं जीवड़ो जाय ।। संग० ।। 2 ।।

इसा भाव मन ऊपना,
'नन्दन' रे मन मांय ।
धन ते राज - राजे सरु,
मन्त्री सेठ कूं हाय ।। संग ।। 3 ।।

राजगृही ने वारणे[1],
करावे सर - वर - सार ।
कुवा पुष्करणी बावडी,
धन तेहनो अवतार ।। संग० ।। 4 ।।

तिहां घणा लोग नावण[2] करे,
पाणी भर भर जाय ।
पाणी पीवे प्रेम सूं,
इम चितवे मन मांय ।। संग० ।। 5 ।।

※ दोहा ※

सूर्य प्रभाते ऊगते, पूछी श्रेणिक राय ।
कराऊं 'नन्दा बावड़ी, आवे घणां रे दाय ।। 1 ।।
इम चितवतां ऊगियो, प्रगटयो तांम प्रभात ।
पहिर वेश आभरण भला, वली न्यातिला रे साथ ।। 2 ।।
राय कने मेली भेटणो, जोड़ी दोनूं हाथ ।
हुकम हुवे तो वावड़ी, हूं कराऊं नर नाथ ।। 3 ।।

1. बाहर 2. स्नान

जिम सुख होवे तिम करो, भाखे श्रेणिक - राज ।
सेठ सांभल हर्षित थयो, सरिया वांछित काज ॥ 4 ॥

ढाल-4

(राग:- तूं जई कहिजे माय-माह)

निकलियो नगर-मजार, खिणवा पुष्करणी,
सखर भूमि जोई भली ए ।

इम अनुक्रमे तेह - खिनतां ते पूरी थई-
पुष्करणी पाणी भरी ए ॥ 1 ॥

शीतल पानी सहीत[1]
पाखतो[2] कोटड़ो[3]–
कमलज सोभे वीच में ए ॥ 2 ॥

उत्पल कमल कर सहित,
चन्द्र विकासिया–
सुगन्ध फूल कर सोभतो ए ॥ 3 ॥

श्वेत कमल वहु जाण,
सहस्र[4] कर तणा–
किरण सहित फूलो कली ए ॥ 4 ॥

तिहां घणा आवे लोक,
पूरे मन रली–
घणा मच्छ कच्छ ने डेडका ए[5] ॥ 5 ॥

---

1. सहित 2. निकट 3. कमरा 4. पखुड़ियां 5. मेढक

टउका कोयल कराय,
मन प्रसन्न हुवे-
वले बोले सुवा सुहावणा ए ।। 6 ।।

तिवारे नन्दन मणिहार,
बावड़ी - पाखती-
चऊं दिश च्यारे वन भला ए ।। 7 ।।

अति ऊंचा वले रूंख,
फलिया फूलिया-
हरिया बरिया बाग में ए ।। 8 ।।

ए थई चौथी ढाल,
रिख 'रायचन्दजी' कही-
हिवे तुमें आगे सांभलो ए ।। 9 ।।

ढाल-5

(राग— अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी)

सेठ 'नन्दन' मणियार तिण समें,
पूरब वन - खण्ड पेखोजी ।
एक चित्रामणी सभा रची भली,
सोभे स्तम्भ अनेकोजी ।।
नन्दन करायो रे वन पूरब तणो ।। 1 ।।

काला नीला, राता, पीला सहू-
वले धवला रंग धारोजी ।

काष्ठ पूतली रंगोली करे,
चित्राम सभा मझारोजी ।।नन्दन०।। 2 ।।

वेसण रा आई ठाण[1] मांड्या घणा,
नाटक नाचे अपारोजी ।
तेहनो खान - पान - पहिरणो,
दे नन्दन मणियारोजी ।।नन्दन०।। 3 ।।

पेखि[2] मानस[3] जोवे जुगत सूं,
नयण[4] लगायने देखोजी ।
नाटक होवे बहु भातरा,
सुख में विचरे विशेषोजी ।।नन्दन०।। 4 ।।

पहला रो वर्णन तो इम कह्यो,
वले सूतर में बहु विस्तारोजी ।
रिख 'रायचन्दजी' ढाल कही भली,
हिवे दूजा नो अधिकारोजी ।।नन्दन०।। 5 ।।

दक्षिण वन - खंड अन्न नीपजे,
समण[5] माहण[6] नर-नारोजी ।
अतिथि कृपण वणिवग[7] रांकने,
तिहां देवे सतुकारोजी ।। नन्दन० ।। 6 ।।

पश्चिम वन में शाला वैधनी,
तिगिच्छा औषधी जाणोजी ।

---

1. स्थान 2. देखं 3. मनुष्य 4. अपलक 5. श्रमण 6. ब्राह्मण
7. भिखारी ।

दवा दारू दे पथ्य - पाणी करी,
साजा[1] करे गिलाणा[2] जी ।।नन्दन०।। 7 ।।

उत्तर वन में सभा अलंकारनी,
पुष्करणी तिण मांयोजी ।
स्नान करी शुद्ध वसनज[3] पहिनने,
हिवड़े हर्षित थायोजी ।।नन्दन०।। 8 ।।

- दोहा -

धन धन लोक करे बहु, 'नन्दन' मणियार सेठ ।
जन्म कृतारथ इण कियो, 'नन्दा'[4] कराई[5] एठ ।। 1 ।।

इसी कराई बावड़ी, आवे मीठी सीर ।
च्यार बाग सोभे भला, सोभे सखरो नीर ।। 2 ।।

धन्न ते पुण्य तणो धणी, सफल कियो अवतार ।
भली कराई बावड़ी, सेठ 'नन्दन' मणिहार ।। 3 ।।

ढाल-6

(राग :- ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़)

राजगृही नगरी मध्ये,
बाट[6] तीन मिले च्यार ।
लोग माहो मांही इम कहे,
धन नन्दन अवतार ।। 1 ।।

---

1. निरोगी 2. ग्लानि 3. वस्त्र 4. बापिका 5. यहां 6. रास्ते ।

जोवो[1] विचित्र गति कर्म नी,
मिटी किण सूं न जाय ।
रंक ने राव गिणे नहीं,
इम भाख्यो जिन-राय ।। जोवो० ।। 2 ।।

घणां जणां कने सांभली,
पामे हरस सनेह ।
मेंघ धारा फूले वन सही,
तिम 'नन्दन' री देह ।।जोवो०।। 3 ।।

विचरे घणो सुख भोगतो,
तिण अवसर तिण जोग ।
सेठ शरीर में ऊपना,
साथे सोले रोग ।। जोवो० ।। 4 ।।

वेदन नो व्याप्यो थको,
नन्दन मणि - हार ।
आज्ञाकारी ने इम कहे,
जावो नगर मझार ।। जोवो० ।। 5 ।।

छि - त्रि - च्यार वाट मिले,
करो हेलो जाय ।
वेद वेगा ले आवजो,
विगड़ी छे मांरी काय ।। जोवो० ।। 6 ।।

'नन्दन' रे रोग ऊपनो,
हुवो घणो वेहाल[2] ।

---

1. देखो 2. खेद खिन्न (आकुल व्याकुल)

एक रोग जिण रो हटे,
वणो देवे माल ।। जोवो० ।। 7 ।।

- दोहा -

उद्घोषणा इम सांभली, वैद्य वैद्य का पूत ।
शास्त्र जाणे सांवठा,[1] रोग हरण ना सूत ।। 1 ।।

शास्त्र कोथली हाथ ले, वले बीजा वाणा ठाण ।
नाड़ी वेद[2] नवा नवा, आया सव विध जाण ।। 2 ।।

निज-निज घर सू निकली, राजगृही पद्य[3] थाय[4] ।
आया 'नन्दन' रे घरे, देखी तिण री काय ।। 3 ।।

ढाल-7

(राग :- लाखां फुलाणी)

देख नन्दन री देह, रोग पूछे वैद्य भली तरे ।
घणा लगावे लेप, उगटणा[5] अधिका करे ।।1।।

लगावे वले तेल, संघटे जल मज्जन करे ।
देवे करड़ा दाम, पिण तन-वेदन नो हरे रे ।।2।।

इम वले घृत ने तेल, अति अधिका औषध करे रे ।
वाली[6] तेल तुरन्त, शेक[7] लेई ऊपर धरे रे । 3।।

मूल पत्र ने फूल, फल बीजा तिम वली रे ।
गोली घणा प्रकार, औषध थी वेदक ना टली रे ।।4।।

---

1. अत्यधिक 2. नब्ज के ज्ञाता 3. बीज में से 4. होकर 5. उबटन
6. जला कर 7. धूप - दीप आदि ।

ढाल-8

(राग : अल बोल्या नी)

'नन्दन' रोगे पीड़ियो रे लाल,
वापो नी मुरछा[1] पाम[2] सुविचारी रे ।
वांध्यो तिर्यचनो आउखो रे लाल,
कीधो भूडो काम—सु०
नन्दन नर - भव हरियो रे लाल ।। 1 ।।

'नन्दन' पुष्करणी रे मांय ने रे लाल,
डेडकी ना गर्भ मांय - सु०
डेडका पणे में ऊपनो रे लाल,
दियो कर्मा गोता खवाय सु. ।।नन्दन।।2।।

अनुक्रमे मोटो थयो रे लाल,
पाम्यो तद[3] विज्ञान[4] – सु०
भली कराई वावड़ी रे लाल,
लोग कहे इम वाण सु० ।।नन्दन।। 3 ।।

लोग करावे सांवठा रे लाल,
धन धन 'नन्दन' मणिहार - सु०
याद करे नर - नार सु. । नन्दन।। 4 ।।

एहवा वचन श्रवणे डेडके रे लाल,
कीनो मनसूं विचार – सु०
इणहिज नगरी मां हुतो रे लाल,
हूँ 'नन्दन' मणियार सु० ।।नन्दन।। 5 ।।

---

1. आसक्ति 2. प्राप्त कर 3. तब 4. जाति स्मरण ज्ञान

तिण काले ने तिण समे रे लाल,
समो सर्या वर्द्धमान सुखकारी रे ।
अरिहंत पासे आदर्यो रे लाल,
श्रावक व्रत शुभ ध्यान सु० ।।नन्दन।।6।।

मुनि-विह[1] रे संग मिथ्यात ने लाल,
कर समकित नो नाश – सु०
वन-खण्ड बायो करायने रे लाल,
लियो तिर्यंच गति वास सु० ।।नन्दन।।7।।

ए बात जाणी ने पाछली रे लाल,
जाति-समरण कर ज्ञान – सु०
व्रत वले पिण आदर्यो रे लाल,
कर साक्षी वर्द्धमान सु० ।। नन्दन ।। 8 ।।

– दोहा –

कलपे 'छट्ठ' मुझ जावजीव, इसड़ो कोधो नेम ।
प्रासुक ते सेवालिया, पग नो धोवण जेम ।। 1 ।।

वीर - जिणंद समोसर्या, परिषदा वांदण जाय ।
जिन-आगम जन-मुख सुणी, मिंडक हर्षित थाय ।। 2 ।।

ढाल 9

[राग— बे वे तो मुनिवर वहरण पांगुर्या रे]

वापी रे मां सूं मींडक नीसरी रे,
आयो छे राज - पंथ रे मांय रे ।

---

1. विचरण करे 2. वेले का तप

उत्कृष्टी गति चाले उतावलो रे,
वांदु श्री वीर जिणंद ना पाय[1] रे।
जोइजो इम रसायरा[2] नीपजे रे ।। 1 ।।

तिरा मारग मे जातां डेडके रे,
एहवे तो श्रेणिक आवे एत[3] रे।
जातिवंत घोड़ो श्रेणिक तणो रे,
मींडको तो आयो पग हेठ रे ।।जो०।। 2 ।।

व्याकुल तन जाणी एकंत जायने रे,
जोड़ी ने दोनूं निज हाथ रे।
'नमोत्थुणं' श्री अरिहंत सिद्ध ने रे,
धर्माचार्य मुझ कृपा नाथ रे ।।जो०।। 3 ।।

पूर्वे मैं श्रावक ना व्रत आदर्या रे,
वीर जिणंदजी रे पास रे।
पाप आलोई पचखी आहार ने रे,
अणसण कीधो मन हुलास रे ।।जो.।।4।।

– दोहा –

काल करी ने डेडको, हुवो प्रथम देवलोके देव।
इन्द्रावन्तसक विमाण मे, वहु सुर सारे सेव ।। 1 ।।

1. चरण 2. भावना 3. उधर से

ढाल-10

(राग— जगत गुरु त्रिशला-नन्दन वीर)

वीर कहे सुण गोयमाजी,
पूरब भव करतूत[1] ।
इम रिध लाधी सुर तणीजी,
ए सगला ई सूत हो—
गौतम भाखे वीर जिनन्द ।। 1 ।।

गौतम पूछे वीर ने जी,
चव जासी किण ठाम ।
स्थित इणरी छे केतलीजी,
मुझने प्रकाशो स्वाम हो ।। गौ० ।। 2 ।।

वीर कहे 'दर्दुर' देवनी जी,
स्थिति पल्योयम च्यार ।
चव जासी 'महा - विदेह' में जी,
उत्तम कुल अवतार हो ।। गौ० ।। 3 ।।

'दृढपइन्ना' नी परे जी,
लेसी संजम - भार ।
केवल ज्ञान पामी करीजी,
जासी मुगत मझार हो ।। गौ० ।। 4 ।।

'सुधर्म' कहे 'जम्बू' भणीजी,
मैं सुणियो वीर नें पास ।

1. क्रिया

तिम तुझने आगल कह्योजी,
पिण स्वयं मत न प्रकाश हो ।। गौ० ।। 5 ।।

चरित्र 'नन्दन' मणिहार नो जी,
जोड़्यो रिख 'रायचन्द' ।
सूत्र 'ज्ञाता' में जोयने,
सगलो कह्यो सम्बन्ध हो ।। गौ० ।। 6 ।।

पूज्य 'जयमलजी' रे प्रसाद थीजी,
वले आतम - उपगार ।
शहर 'नागोर' में हरस सूं जी,
चैत्र मास मजार हो ।। गौ० ।। 7 ।।

संवत अठारे इक्कीस में जी,
सुणजो सहू नर - नार ।
करो सगत साधां तणीजी,
श्रावक ते श्री कार हो ।।गौ०।। 8 ।।

धनमित्र

:: दोहा ::

साधु धन संसार में, छोड्या माया - जाल ।
उत्तम - करणी आदरी, षट् - काया प्रति - पाल ।। 1 ।।
वावीस परीषह जल तणो, तिण विन छूटे प्राण ।
सहे मोटा साधजी, ज्यांरो नाम लियां निस्तार ।। 2 ।।

वावीस परीषह - मझे[1], करड़ा परीषह दोय ।
एक तो पाणी तणो, दूजो स्त्री नो होय ॥ 3 ॥

पूरो परीषह जल तणो, तिण विन छूटे प्राण ।
किण विध सह्यो ते कहूं, सुणजो चतुर सुजाण ॥ 4 ॥

ढाल-1

(राग: – शंकर वसे रे कैलास में)

नगर 'उज्जयिनी' अति भली,
'जित-शत्रु' तिहां राजा रे ।
सेठ सेनापति मंत्रवी,
वसे ऋद्धिवन्त ताजा रे ॥ 1 ॥

पुन्य थकी सुख पामिये,
इम जाणी पुन्य कीजे रे ।
लाहो लीजो लछमो तणो,
दाव सुपात्र दीजे रे ॥ पुन्य. ॥ 2 ॥

व्यापारी वसे अति घणा,
प्रगटी ज्यांरी पुन्याई रे ।
श्रावक घणा साधां तणा,
सुध समकित पाई रे ॥ पुन्य. ॥ 3 ॥

'धनमित्र' एक वाणियो[2],
'धन-दत्त' तेह नो नन्दो रे ।
रूपवन्त रलियावणो[3],
दीठां उपजे आनन्दो रे ॥ पुन्य. ॥ 4 ॥

---

1. वीच मे 2. वणिक 3. सुन्दर

तात - पुत्र दोनूं जणा,
जिन धर्म मांहे राता रे ।
साधां री सेवा करे,
उपजावे घणी साता रे ।।पुन्य.।। 5 ।।

पछे वैराग मन ऊपनो,
जाणी अथिर संसारो रे ।
पुत्र - पिता दोनूं जणा,
लीनो संजय भारो रे ।। पुन्य. ।। 6 ।।

उग्र विहारज आदरी,
साधु आचार पाले रे ।
महाव्रत पाले भली तरे,
दूषण सगलाई टाले रे ।। पुन्य. ।। 7 ।।

सिंह जिम संयम आदर्यो,
पाले सिंहज जेम रे ।
रिख रायचन्दजी कहे सांभलो,
मुनि करणी करी केम रे ।। पुन्य. ।।8।।

ढाल-2

(राग— तिण अवसर मुनि)

गुरु ने चेला दोय,
तीजा रो तन्त[1] नहीं कोय के ।
ऋषिजी साध—
उग्र विहारज आदर्यो रे ।। 1 ।।

1. साथ (संयोग)

माथे आयो सूर[1],
तातो[2] तावड़ों पूरके ।
ऋषिजी साध—
लूवा[3] बाज रह्यो वायरो ए ॥ 2 ॥

पड़े तावड़ा री धूप,
कुमलाणों मुख रूप के ।
ऋषिजी साध—
पांव तपे वेलू पर जले ए ॥ 3 ॥

रोही[4] दण्डार,
सूनी सगली उजाड़[5] ।
ऋषिजी साध—
कोई वसतो गाम नेड़ो नहीं ए ॥4॥

पड़ें तावड़ा री झोट,
सूक गया जीभने होठ के ।
ऋषिजी साध—
तृषा लागी सूको तालवो ए ॥ 5 ॥

तिरखा लागी गुरां ने आय,
पिण चेला री कही यन जाय ।
ऋषिजी साध—
जल परीषह जोरावर घणो ए ॥6॥

गुरु तो आगा दिया पाय,
चेलो खीसियो[6] नहीं कायके ।

1. सूरज 2. तीव्र 3. गर्म हवा 4. अरण्य 5. जन हीन
6. खिसकना ।

ऋषिजी साध—
पिण गुरां जाण्यो उरो आवसी ए ।।7।।

जीव तो जल विन जाय,
नदी देखी मारग मांयके ।
ऋषिजी साध—
काम आप वण्यो इण जायगाए ।।8।।

नदी रो निर्मल नीर,
साधुजी आया तीर के ।
ऋषिजी साध—
फुसली[1] भरी पाण्णी तणी ए ।।9।।

जल लियो फुसली मांय,
पिण मुख में घाल्यो नांय के ।
ऋषिजी साध—
मुनिवर मनमां विचारियो ए ।।10।।

मुझने छे धिक्कार,
पांच महाव्रत धार के ।
ऋषिजी साध—
मै वमीया री वांछा करी ए ।।11।।

एक विन्दु में जीव असंख,
सूत्र ना वचन निःशंक ।
ऋषिजी साध—
वले जीव अनंता जिन कह्या ए ।।12।।

1. अञ्जुली।

मोने देखे नहीं कोय,
पिण सिद्ध अनंता रह्या जोय ।
ऋषिजी साध—
जांसू कांई छानो नहीं ए ॥ 13 ॥

पाणी पाछो दियो मेल[1],
पाछी संभाई[2] सेल[3] के ।
ऋषिजी साध—
चेले मांड्या सामां मोरचा ए ॥ 14 ॥

सल दूषण सहू काढ,
माल लेई ने कलायां चाढ के ।
ऋषिजी साध—
कियो संथारो साधजी ए ॥15॥

पछे छोड्या प्राण,
उपनो देव विमाण के ।
ऋषिजी साध—
जोरावर परीषह जीतियो ए ॥16॥

ए थई दूजी ढाल,
साधु सुव्रत पाल के ।
ऋषिजी साध—
रिख रायचन्दजी कहे सांभलो ए ॥17॥

ढाल-3

म्हा आतम नन्दा करा,
देवता माया वणाई रे ।

---

1. रख दिया 2. संभाली 3. हथियार-माले की तरह

गोकुल किया गायां तणा,
साधु ने दूध छास वहीराई रे।
तुमे जोवो रे जिम देवता करे ॥ 1 ॥

साधु तो मांणस जाणे रे,
अन्न ने पाणी सूझतो ।
जोइजे जितरो आण रे ॥तुमे.॥ 2 ॥

चेलो रूप वणायने,
देव आयो गुरां रे पासो रे ।
पाछलो वात वीती जका,
गुरु-मुख आगल[1] भाखे रे ॥तुमे.॥ 3 ॥

गोकल पाछा गोपिया[2],
साधु ऊभो आणी रे ।
गोकुल कठीने छिप गया,
एतो देवनो माया जाणी रे ॥तुमे.॥4॥

रूप करी देवता तणो,
सगली वात वताई रे ।
गुरु साधां ने वन्दने,
देव निज - थान सिधाई रे ॥तुमे.॥5॥

अनुक्रमे युगते जावसी,
कर्म करी चक चूरो रे ।
रिख 'रायचन्दजी' इम केहे,
साध तिकोई सूरो रे ॥ 6 ॥

1. सामने 2. छिपाया

पूज्य 'जयमलजी' प्रसाद थी,
'नागौर' शहर चौमासो रे ।
संवत अठारे बत्तीस में,
साभलजो नर-नारी रे ॥ 7 ॥

ॐ मेतार्य-मुनि ॐ

:: दोहा ::

शासन-नायक सिमरिये, भगवन्त वीर-जिणंद ।
मेतारज मुनि तणो, सुणजो सहू सम्बन्ध ॥ 1 ॥

दुगुन्छा न कीजे केहनी, साधु तणी विशेष ।
दुख पावे दुर्गति तणा, तिण में मीन न मेख ॥ 2 ॥

तिण ऊपर सुणजो सहू, आलस अंग निवार ।
बीच वातां करे नहीं, चतुर तिके नर-नार ॥ 3 ॥

ढाल-1

(राग— चउपाई)

जम्बू द्वीप मांहे भरत चली वली,
काशी देश बनारसी भली ।
'जित-शत्रु' राजा तिण ठाम,
पट-राणी 'धारिणी' अविराम ॥ 1 ॥

एक 'वल्लभ' ब्राह्मण नगर मझार,
'लक्ष्मी' ब्राह्मणी तस घर-नार ।

तिण रे पुत्र जनम्या दोय,
वड़ो 'ईश्वर' छोटो 'गोविन्द' होय ॥ 2 ॥

वेहूं भाई विद्या भणिया घणी,
शास्त्र जाणे ब्राह्मण-तणा ।
वेहूं मोटा हुवा सुरत[1] सम्भाल,
माय-बाप वेहूं कीधो काल ॥ 3 ॥

कने[2] विशेष कोडी न दाम,
कण[3] मांगी कर सारे काम ।
दोनू कंवारा परण्या न कोय,
अर्थ न पासे किम आदर होय ॥ 4 ॥

इण अवसर आया 'धर्म-घोष',
तप जप संयम शील सन्तोष ।
चऊ नाणी पंच-सप परिवार,
समोसर्या मुनि बाग मझार ॥ 5 ॥

नर-नारी आया वांदण काजे,
सफल दिहाड़ो गिणता आजे ।
सरस वचने मुनि कियो वखाण,
मोटां साधां री अमृत वाण ॥ 6 ॥

'ईश्वर' 'गोविन्द' दोनूं भाय,
कौतुक निमित्ते आया चलाय ।
वाणी सुण उपनो विराग,
वेऊ ने धर्म सूं हुवो राग ॥ 7 ॥

---

1. होश 2. पास 3. धान (अन्न)

बेऊं लीनी दीक्षा लोच्या केश,
देवता दीधो साध रो वेश ।
बेऊं ने सिखायो साध-आचार,
भणिया ज्ञान विवेक विचार ॥ 8 ॥

बडो भाई वेराग में लाल,
ज्ञान घट में दीधो घाल ।
छोटा रा पोचा[1] परिणाम,
इण री आगे बात सुणजो नाम ॥ 9 ॥

पहली ढाल पूरी ए थई,
बेऊं भायां री बात इतरी कही ।
पण वले बात आगे छे बहू,
रिख 'रायचन्दजी' कहे सुणजो सहू ॥10॥

ढाळ-2

(राग:- सीता रूप में सोहे)

'गोविन्द' कहे लघु भाई,
हूं तो इण वेष में गयो मुरझाई रे ।
बंधव बात सुणो-
दोरो मिले अन्न - पाणी,
एक तो आहीज बात जाणी रे ॥बंधव॥1॥

धोवण पाणी रो तासो[2],
इण भेख रो बडो तमासो रे-बंधव.

1. शिथिल 2. कमी

चाहीजे ऊनो[1] मिले ठाडो[2],
हूं तो घणो दुखियो गाढो[3] रे ।।वंधव।।2।।

चाहीजे ठाढो मिले ऊनो,
हूं तो फिरूं हिया सूनो रे-वंधव.
म्हारा फिरतां फिरतां थाक जावे गोड़ा,
कहे मांहे मत आवे मोडा रे ।।वंधव।।3।।

करणो माथा रो लोच,
छट्टे महिने पडे मोने सोच रे-वंधव.
ऊखणी[4] पट्टा मूंछ दाढी,
जरे देही दुखी हुवे गाढी रे ।।वंधव।। 4 ।।

सीयाले रो सीय सहणो,
इण दुख रो कांसु कहणो रे-वंधव.
सीय[5] आगे हियो हार्यो,
जाणे काग गिरां रो मार्यो रे[6] ।।वंधव।।5।।

ऊनाले धरती तप ऊठे,
जाणे भोभर पगने चूंटे रे-वंधव.
वले वाजे लू दो झाल,
दाझे देही सुकुमाल रे ।। वंधव. ।। 6 ।।

तावड़े लागे तिरखा,
दु:ख नहीं ऊनाले सरखा रे-वंधव.

---

1. गरम 2. ठण्डा 3. खूब 4. उखाडना 5. सर्दी 6. जैसे कौए पर ओले गिरे हो ।

उतरे गर्मी ना रेला,
इण भेख में बीते वेहला[1] रे ।।वंधव।।7।।

बरसाले मेह बरसे,
भूख लागे ने मन तरसे रे-बंधव.
भूख सूं कालजो भागे,
हूं दुख कहूं किण रे आगे रे ।।बंधव।।8।।

कपड़ा मेला ने जूं व लीख,
चले पुर - पुर[2] मांगणी भीख रे-बंधव.
घली कदे न करणी सिनान,
ओ भेख दुखां री खान रे ।।बंधव।।9।।

कपड़ा लगावे तेल,
तें पिणे हुवे मांय मेल रे-बंधव.
म्हारां सरिखो रहो सदा मेल,
हूं तो छोड देसू-आं गेल[3] रे ।।बंधव।।10।।

मैं भोले[4] भेख लियो दु:ख - दाई,
मैं तो वडी विपत पसाई रे-बंधव.
मैं तो खांच गला में लीनी पासी,
रहूं आठ पहर उदासी रे ।।बंधव.।।11।।

कायर ने साधपणो दोरो,
देखो करमां रो जोरो रे-बंधव.
साध पणा ना सुख भारी,
पिण करमां री गति न्यारी रे ।बंधव।।12

1. मुसिवत 2. गांव-गांव 3. रास्ता 4. भोलेपन में

'गोविन्द' हुय गयो कायो[1],
मोह-निद्रा-उदय-आयो रे-वंधव.
ढाल पूरी हुय गई दूजी,
रिख 'रायचन्दजी' कहे तीजी रे ।।वंधव।।13।।

:: दोहा ::

ईश्वर गोविन्द ने कहे, थे तो दाख्यो दुःख ।
अरिहंत वचन न ओलख्या, नवमो संजम नो सुख ।। 1 ।।
अन्न भेष उदर-पूरण, विण नहि कोई जाणे धर्म ।
ओ तो मारग मोखरो,[2] काटे आठूं कर्म ।। 2 ।।

ढाल-3

(रागः– मन मधुकर मो)

ईश्वर गोविन्द ने कहे,
आये लीनो संजम - भार रे ।
संजम थी सुख सासता,
तूं हियो[3] मत हार रे ।।
संजम नूं[4] स्यूं दोहिलो ।। 1 ।।

ज्यां कने शीयल - सन्तोष रे,
सुर नर ज्यां की सेवा करे ।
मुनिवर पामे मोख रे ।।संजम.।। 2 ।।

काग निम्बोली री करे,
परिहरे मीठी दाख रे ।

1. हेरान 2. मोक्ष का 3. हृदय 4. क्या

काग - सरीखो तूं क्यूं हुवे,
जीव ठिकाणे राख रे ।। संजम. ।। 3 ।।

चिन्तामणी रतन छोड़ने,
तूं बांधे काच कथीर रे ।
पण मोल महंगो देखने,
नयणां नाखसी नीर रे ।। संजम. ।। 4 ।।

संजम अमृत सारिखो,
खल खावे कहो कूण रे ।
सीरे मांहे सानियो,
मूरख घाले लूण रे ।।संजम.।। 5 ।।

इत्यादिक वचने करी,
कह्यो विविध प्रकार रे ।
पण गोविन्द समझ्यो नहीं,
खोयो संजम भार रे ।। संजम. ।। 6 ।।

एक सहस्र वरसनो अउखो,
संजम सुध मन पाल रे ।
ईश्वर सातवें स्वर्ग में संचर्यो,
पूर्व पुण्य विशाल रे ।।संजम.।। 7 ।।

गोविंद गति गयो पाड़वी[1],
संजम दीनो खोय रे ।
नीच गौत्र कई बांधियो,
तिको आगे लीजो जोय रे ।।संजम.।8।।

1. नीच

तीजी ढाल पूरी थई,
रिख रायचन्दजी कहे एम रे ।
ईश्वर ने गोविन्द तणो,
आगे चरित चाले केम रे ।।संजम.।। 9 ।।

— दोहा —

'साकेतपुर' नगर भलो, 'चन्द्रावतंसक' राजान ।
दोय राणी प्रिय दीपती, 'धारिणी' प्रिय दर्शन नाम ।। 1 ।।

धारणी राणी तणा, पुत्रज हुआ होय ।
'सागरचन्द' 'मुनिचन्दजी' नल - कुबेर जिम दोय ।। 2 ।।

प्रिय - दर्शना राणी रे हुवा, पुत्र दोय अभिराज ।
'गुणचन्द' 'बालचन्द' रु, एवेऊ पुत्रना नाम ।। 3 ।।

'चन्द्रावतंसक' राजवी, पाले श्रावक - धर्म ।
दृढ - धर्मी दृढ आतमा, जाणे धर्म नो मर्म ।। 4 ।।

ढाल-4

(राग:— चौपाई)

'साकेतपुर' नगर नो धणी,
धरमी रहमी[1] महिमा घणी ।
सामायिक कीधी मन - शुद्ध,
न्याय रायनी निरमल बुद्ध ।। 1 ।।

---

1. करूणाशील

पहिले पड़िकमणो नो काउसग्ग कियो,
एक निश्चल मन ध्याने लियो ।
दासी महल में रायने दीठो,
देख अंधारो भय मन पईठो[1] ॥ 2 ॥

दासी मेल गई तिहां दीयो,
राजा मन में अभिग्रह कियो ।
जहां लग जोत दिवा नी तेम,
तिहां लग कावसग पारण रो नेम ॥ 3 ॥

ऊभो राजा ध्यानज रूप,
बले दासी ऊभो दीठो भूप ।
दीवे तेल वाटी पुन सींचियो,
पिण राजा कोप नहीं कियो ॥ 4 ॥

रखे रायने हुवे अंधारो,
आज दिवा रो वारो हमारो ।
सखरी[2] चाकरी[3] करसूं आज,
म्हांसूं राजी हो से श्री महाराज ॥ 5 ॥

दासी आखी रात दीवो रही देख,
तेल वाटी साचवी ते विशेष ।
राजा ने वेदन हुई भारी,
पण न कंप्यो आतम - विहारी ॥ 6 ॥

प्रचण्ड पीड़ा उपनी आण,
राजा आउखो आपणो जाण ।

1. प्रवेश 2. अच्छी 3. सेवा

कर संथारो अण सण लियो,
चोथे पोहरे काल कियो ॥ 7 ॥

शुभ परिणामे स्वर्ग जे गयो,
एक भव वले वाकी रह्यो ।
पूरी हुय गई ए चोथी ढाल,
रिख रायचन्दजी कही रसाल ॥ 8 ॥

– दोहा –

'चन्द्रावतंसक' राजा तणो, मृतक कारज कीध ।
'सागरचन्द' कुमर पाटवी, जग मांहे जस लीध ॥ 1 ॥

पाट बैठो पिता तणे, वटती सागर चन्दनी आण ।
तेज घणो तपस्या तणो, कंपे वैरी ना प्राण ॥ 2 ॥

श्रावक धर्म पिण साचवे, एक दया धर्म सूं प्रेम ।
मोह माया मिटाविया, मद्य मांस नो नेम ॥ 3 ॥

देश गांव ने नगर में, कोई मारण न पावे जीव ।
सेणो राजा समकिती, दीधी दया-धर्म नी नीव ॥ 4 ॥

मांई माता आगले, पाय लागे जोड़ी हाथ ।
सागरचन्द कुंवर कहे, सुणो मात मम वात ॥ 5 ॥

ढाळ-5

(राग— रमो रमो हे चल कराफू)

आज्ञा हुवे जो आपरी, सुण माई ! मोरी,
'गुणचन्द' ने देई राज, सांभल विनती मोरी ।
हूँ संजम मारग आदरूं, सारूं आतम-काज ।।सां.।।1।।

तब वलती माता इम कहे, बलिहारी तोरी-
तूं तो म्हारो आज्ञाकारी । सां०
थारो मनतो लागो मुगत सूं,
थांरा तो धन अवतार ।। सां० ।। 2 ।।

गुणचन्द्र तो नान्दो घणो, बलि
जब लग मत छोडो राज । सां०
राज - जोग मोटो हुवे - बलि.,
कर जाणे सगला काज ।। सां० ।। 3 ।।

पछे थे दीक्षा लीजो दीपती, बलि.
पछे गुणचन्द्र नी हुसी आण । सां०
सागरचन्द कहे माजी सुणो, बलि.
आपरो वचन प्रमाण ।। सां० ।। 4 ।।

राज-काज पाले प्रजा, बलि.
राजा रा लूखा परिणाम । सां०
सागरचन्द चित्त निरमले, बलि.
करे नित धर्म रो काम ।। सां० ।। 5 ।।

काल कितोई नीकल्पो, बलि.
माई तब चिंतवे एम । सां०

सागरचन्द ने मारण-भणी, वलि.
धूरताई चितवे दिल केम ॥ सां० ॥ 6 ॥

घोड़ा - रमावण नीसर्या, वलि.
सागरचन्द महाराज । सा०
माई मनमां चितवे, वलि.
अवसर लाधो आज ॥ सां० ॥ 7 ॥

विष घाली मोदक मेलिया, वलि.
दासी ने कहे वात । सा०
सागरचन्द ने सीरावणो[1], वलि.
दीजे तूं हाथो - हाथ ॥ सां० ॥ 8 ॥

ले लाड़ू दासी गई, वलि.
वन मांहे जठे भूपाल । सां०
रिख 'रायचन्दजी' जोड़ी जुगत सूं, वलि.
पूरी हुय गई पांचवी ढाल ॥ सा० ॥ 9 ॥

:: दोहा ::

वीच सभा वैठा हुता, सागरचन्द सुजाण ।
छत्र चामर विंजेता[2], देखो पुण्य प्रमाज ॥ 1 ॥

इतरे दासी आयने, अरज करे जोड़ी तस हाथ ।
आ माजी मेली सूंखड़ी, आरोगो पृथ्वी नाथ ॥ 2 ॥

लीधो राजा लाडवो, खावा केरे काज ।
गुणचन्द बालचन्द, वेऊं भाई ऊभा आय ॥ 3 ॥

---

1. नास्ता (सुबह का भोजन) 2. ढुलाते

ढाल-6

(राग :- हूं तुझ आगल सो कहूं वन्धविया)

वेय वंधव देखी करी, बन्धविया !
सागरचन्द कहे एम रे, बन्धविया लाल ।
म्हांरा निरखतां नेण धापे नहीं, बन्धविया !
प्यारो थांरो प्रेम रे ।। बन्धविया० ।। 1 ।।

थांसू मन म्हारो मोहियो, बन्धविया !
ज्यूं मेह सूं राजी मोर रे, बन्ध०
थांसू हरस हिवडे मावे नहीं,
चित्त जिम चन्द-चकोर रे ।।बन्ध०।। 2 ।।

थे मुज जीवन की जड़ी, बन्धविया !
थे मुज प्राण - आधार रे, बन्धविया !
निरखत नैण राजी हुवे, बन्ध०
प्रेम थांसू पहिले पार रे ।।बन्ध०।।3।।

ए माता लाडू मेलिया, बन्धविया !
इण में मेवो अथाग रे, बन्ध०
थांने भूखड़ली लागी हुसी, बंधविया !
कर दीधा दोय विभाग रे ।।बन्ध०।। 4 ।।

वे वांधव खाधा लाडवा, बन्धविया !
मोदक मांहे खोट रे, बन्धविया लाल ।
गुणचन्द ने बालचन्द, बन्धविया०
वे हुय गया लोट - पोट रे ।।बन्ध०।। 5 ।।

लाडू जहर जोर घणो कियो, वन्धविया !
वेऊं हुवा अचेतन वाल रे, वन्ध०
नैणे नैण मिले नहीं, वन्धविया !
जाणे कोप्यो काल रे ।।वन्ध०।। 6 ।।

सागरचन्द तो खाधो नहीं रे, वन्धविया !
लघु भायां ने दीधो कर हेत रे, वन्ध०
अव माई रो कपटज जाणियो, वन्ध०
वेहूं वन्धव हुआ अचेत रे ।.वन्ध०।। 7 ।।

जेहनो पुण्य सिखाविया[1] रे, वन्ध० !
तिण ऊपर नही चाले वेख[2] रे । वन्ध०
माई रो चिंतवियो माई रे हुवो, व०ल०
दोनूं वेटा लेवो देख रे ।। वन्ध० ।। 8 ।।

सागरचन्द देखी ने डरपियो, वन्ध. !
रखे मरजावे वाल रे । व. ला.
मणि मन्त्री पाणी पावियो रे, वन्ध.
विष टल्यो ततकाल रे ।। वन्ध. ।। 9 ।।

गुणचन्द्र वालचन्द्र नो, वन्धविया !
निरमल हुवो शरीर रे । व. ला.
सागरचन्द नो मन हरखियो, वन्ध.
वैठो वन्धव ने ले तीर[3] रे ।।वन्ध ।।10।।

ए छट्ठी ढाल पूरो थई, वन्धविया !
पिण कर्म सूं कीजे केम रे, व. ला.

---

1 सुरक्षित हो 2. द्वेष 3. निकट

पुण्य दीठो 'सागरचन्द' नो बंधविया ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे एम रे ।। बं. ला. ।।11।।

– दोहा –

सागरचन्द राजा कोपियो, आई माई कने तिणवार ।
फिट[1] फिट तोने पापणी, धिक थारो जमवार ।।1।।

पापण ! थे प्रपंच कियो, मोनो मारण - काज ।
मैं पेलां ही कह्यो, हूं देऊं गुणचन्द ने राज ।।2।।

म्हारा तो निश्चय हुता, दीक्षा रा परिणाम ।
हूं थारे कह्यां रयो राज में थे खोटो किधो काम ।।3।।

सागरचन्द वैरागी हुवो, गुणचन्द ने देई राज ।
दीक्षा लीधी दीपती, सारण आतम - काज ।।4।।

सागरचन्द मोटो मुनि, चवदे पूरब धार ।
द्वादशांगी – गुण निलो, आगम – अर्थ अपार ।।5।।

– ढाल 6 –

[राग : यह मिलियो मेंवासी]

गुणचन्द्र हुवो राजा ।
नगरी रा लोग ताजा रे ।। भ. भा.
राजा रे 'पद्मावती' राणी ।
जाणे इन्द्र तणी इन्द्राणी रे ।। भवियण भाव सुणो ।।1।।

ईश्वर रो जीव गर्भ में आयो ।
राणी पद्मावती पुत्र जायो रे ।। भ. भा.

---

1. धिकार

कुंवर अनुक्रमे जोवन पायो ।
चवी देवलोक थी आयो रे ।। भ. भा. ।।2।।

मोह मिथ्यात में लाल ।
रह्यो खोटो मत झाल रे ।। भ. भा.
राज-कुंवर पुरोहित साथे ।
भेला हुवे दिन ने राते रे ।। भ. भा. ।।3।।

राय-कुंवर संगति लोटी कीधी ।
तिका खांच गला मां लीधी रे ।। भ. भा.
दोनूं जिन - धर्म ना वेखी ।
साधु ने देवे ते दुःख विसेखी रे ।। भ. भा. ।।4।।

दोनों साधां ने दुख - दाई ।
करमानी खवर न कांई रे ।। भ. भा.
साधु देख्यां चले आंख रा डोला ।
दुःख देवरण ने होय जावे दोला[1] रे ।। भ. भा. ।।5।।

सातमी ढाल थई पूरी ।
आछे बात अजे अधूरी रे ।। भ. भा.
'रिख रायचन्दजी' कहे सुराजो आगे ।
कंठ सूं गाया वल्लभ लागे रे ।। भ. भा. ।।6।।

– दोहा –

'उज्जैरणी' थी आवियो, एक साध तिरणवार ।
'सागरचन्द' मुनि भरणी, कह्या सगला समाचार ।।1।।

---

1. इर्द - गिर्द

पुत्र गुणचन्द रायनो, तुमचो भती जो होय।
राय-कुंवर, पुरोहित-पुत्र, दोनूं ए मंत्री होय ॥2॥

ए संतावे साधु ने, काढ़े अणहूती खोड़ ।
कुमति कजिया करे, साधां नगर दीधो छोड़ ॥3॥

सागरचन्द मुनि कहे, हूं जाऊं उज्जयिनी-मझार।
दोनों ने देऊं दीक्षा, ए करूं बड़ो उपगार ॥4॥

ढाल–8

[राग:–चोथा प्रत्येक बुद्धिनी]

नगर उज्जयिनी पधारिया। सुणो भवियण
सागरचन्द मुनिराय ए ॥
साथ - संघाते सोभता। सु. भ
उतर्या वनवाड़ी रे मांय ए ॥ सु भ. ॥1॥

श्रावक आव्या अति घणा, सु. भ.
विनवे जोड़ी हाथ ए ।
अठे आप पधारिया, सु. भ.
म्हारा मोटा भाग ए ॥ सु.भ. ॥ 2 ॥

पुरोहित कुंवर पापियो, सु.भ.
राय - कुंवर राखे धेख ए।
ए दोनों ने साधु सुहावे नहीं, सु.भ.
अब वधसी कजियो विशेष ए ॥ सु.भ. ॥3॥

सागरचन्द कहे श्रावकां ! सांभलो, सु.भ.
हूं तो जाण ने आयो चलाय ए।

दोनो ने प्रतिबोधवा–सु भ.
थे चिन्ता म करो मन मांय ए ।। सु.भ. ।।4।।

सागरचन्द चित्त विचार ने, सु.भ.
तिहां पुरोहित राज-कुंवार ए ।
सागरचन्द मुनि आविया, सु.भ.
काका ने ओलखियो तिणवार ए ।। सु.भ. ।.5।।

पिण दुर्मति दोनूं जणा, सु.भ.
मांड्यो मुनि घणो झोड़ ए ।
देव प्रयोगे दोनों कुंवर रे, सु.भ.
वेदना व्यापी थोड[1] थोड ए ।। सु.भ. ।।6।।

दोनों रे दुख ऊपनो ए, सु.भ.
पीड़ प्रगटी शरीर ए ।
दोनूं जणा विल विल करे, सु.भ.
नैणा सूं झरे नीर ए ।। सु भ. ।।7।।

सागरचन्द मुनि संचर्या, सु.भ.
कियो वनवाडी विसराम ए ।
सूत्र 'ठाणंग' में कह्यो, सु.भ.
अरथ में सागरचन्द नो नाम ए ।।सु.भ.।।8।।

ए थई ढाल आठमी, सु.भ.
कियो कंवरा ने कष्ट विख्यात ए ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे, सु.भ.
ए छे आगम व्यवहार नी वात ए ।।सु भ.।.9।।

---

1. शरीर के हर स्थान पर

– दोहा –

मुनिचन्द्र राजा भणी, खबर गई ततकाल ।
दोनों रे पीड़ा प्रगट थई, कंपण लागी काय ।। 1 ।।

राजा देखि डरपियो, ए किणविध हुवो काम ।
साध कष्ट कर गयो, सेवक बोले आय ।। 2 ।।

राय खबर करावी साधनी, वनवाड़ी विसराम ।
राजा वांदण आवियो, कर वन्दण गुण-ग्राम ।। 3 ।।

सागरचन्द मुनि ने ओलख्या, मुनिचन्द महाराज ।
ए बड़ो भाई माहरो, मैं दीठो दरसण आज ।। 4 ।।

ढाल–9

(राग :– अलवेल्या री)

बे कर जोड़ी राय वीनवे रे लाल,
हूं तुम आगल करूं अरदास हो–स्वामीजी साहब !
थे परमेश्वर सारखा रे लाल,
हूं थांरो सेवक आव्यो खास हो ।।स्वा.सा.।।1।।

मया करो म्हां ऊपरे रे लाल,
दो मुझ ने दरसण दिल खोल हो । स्वा. म.
थांसूं अरज करे म्हांरी आंखियां रे लाल ।
सो बोले एक बोल हो ।।स्वा.सा.म.।। 2 ।।

थे गुण - समुद्र सूं भर्या रे लाल,
थे सागर जेम गम्भीर हो । स्वा.सा.

पर ने पीड़ा किम कीजिये रे लाल,
थे खट्काया[1] रा हो पीर[2] हो ।।स्वा.सा.म.।।3।।

दुखीय छे दोनूं डावड़ा[3] रे लाल,
थे मया करो महाराज हो । स्वा.सा.
आ अरज मानीजे म्हारी रे लाल,
थे राखो माहरी लाज हो ।।स्वा सा.म.।।4।।

थांरे दया-धर्म दिल में वस्यो रे लाल,
थे ज्ञान तणा भण्डार हो । स्वा.सा.
देवता थांरी सेवा करे रे लाल,
हूं थांहरी वलिहार हो ।।स्वा.सा.म.।।5।।

दोनूं कुवर आण्या साधां खने रे लाल,
साधु रे चरणे लगायो सीस हो । स्वा.सा.
कहे हमें अपराधी आपरा रे लाल,
म्हैं तुमचा[4] चाकर आज्ञाकार हो ।।स्वा.सा म.

:: दोहा ::

सागरचन्द मुनिवर कहे, जो थे ल्यो संजय - भार ।
चित्त लगाय चेला वणो, तो न रहे वेदना लिगार ।। 1 ।।
बात मानी मुनिवर तणी, कहे मेटो म्हारी पीड़ ।
म्हैं संजम ले हूं सा सुखी, सुर जोगे सखरो हुवो शरीर ।। 2 ।।
राय कुंवर दीक्षा लिवी, पुरोहित नो पिण पूत ।
दोनूं साधपणो पाले सदा, सेठां दीधा सूत ।। 3 ।।

---

1. छकाय के 2. रक्षपाल 3. लड़के 4. आपके

–ढाल वही–

मुनि जिन मारग दीपावियो रे लाल,
सागरचन्द्र रिख-राय हो। स्वा. सा.
सर्व साधुनी करे चाकरी रे लाल,
दीधी करमां री कोड़ खपाय हो ।।स्वा सा.म.।।7।।

ए नवमी ढाल पूरी हुई रे लाल,
इण में सागरचन्द नो सम्बन्ध हो । स्वा. सा.
अब दोनूं चेलां री बात चालसी रे लाल,
रिख रायचन्दजी कहे खेड़ो फंद हो ।। स्वा.म

:: दोहा ::

रायकुंवर 'शिव भद्र' मुनि, पाले पांच आचार ।
पांच समिति तीन गुप्ति ते, पाले निरति चार ।। 1 ।।
अंग इग्यारे सूत्र भण्यो, पाई निरमल बुद्ध ।
विनयवन्त गुरु-आगन्या, आराधे मन शुद्ध ।। 2 ।।
पुरोहित पुत्र 'सोमदत्त', मुनि पाले शुद्ध आचार ।
ए मद मांहे मावे नहीं, करे जात तणो अहंकार ।। 3 ।।
नीच गोत्र इहां बांधियो, तिको आगे लीजो जोय ।
आ उदय हुवे ते जाणसी, किसने कर्म न छोड़े कोय ।। 4 ।।
वे हूं चारित्र पालने, काल अवसर करि काल ।
देवलोक हुवा देवता, एक विमाण विसाल ।। 5 ।।
दोनूं मन्त्री देवता, दीधो मांहो-मांहे वचन ।
पेली चवे तिणने समझावणो, दीरावणो संयम ।। 6 ।।

रायकुंवर देवता तणो, आयू अधिकी जाण ।
पुरोहित पुत्र नो थोड़ो हुवो, हिवे सुणो चतुर सुजाण ॥ 7 ॥

ढाल-10

(राग : तिण अवसर मुनिराय)

नगरी 'राजगृही' नाम,
राजा 'श्रेणिक' तिम ठाम-सुणो भवियण लाल
मानी जती राणी चेलणाए ॥ 1 ॥

मन्त्री 'अभय' कुमार,
बुद्धि तणो भण्डार-सु. भ.
न्यायी ने सेणो समकिती ए ॥ 2 ॥

'हरदत्त' वसे चण्डाल,
तेहने 'मूला' वहू सुखमाल-सु.भ.
षट्[1] बेटा जणिया चंडालनी ए ॥ 3 ॥

पुरोहित पुत्र जीव आय,
उपनो चंडालनी रे गर्भ आय-सु.भ.
देवलोक थकी चव करी ए ॥ 4 ॥

पाछला भव - मझार,
कियो जात तणो अहंकार-सु. भ.
तिण सूं नीच कुल में ऊपनो ए ॥ 5 ॥

'युगन्धर' सेठज एक,
तिण रे घर में धन विशेष-सु.भ.
ए 'नालंदा' पहाडे वसे ए ॥ 6 ॥

---

1. छः

तेने 'ईश्वरी' नामे नार,
प्रीतम सूं घणो प्यार-सु.भ.
पिण छे मृत बांझड़ी ए ।। 7 ।।

चंडालणी आवे सेठ ने गेह,
धरती सेठाणी तेह सूं नेह-सु.भ.
दोनूं पूरे महिने कामणी ए ।। 8 ।।

दोनों रे घणो प्रेम,
कहणी में आवे केम-सु. भ.
बहूं वातां करतां धापे नहीं ए ।। 9 ।।

माहरे बेटा छव जोय.
सातमो पेट में होय-सु.भ.
बलती सेठाणी कहे तेहने ए ।।10।।

म्हारे टावर न जीवे कोय,
सेठाणी दीयो रोय-सु. भ.
हूं कांई सरजी बांझणी ए ।।11।।

थारे बेटो मूवो न कोय,
तूं तो पुत्रां ने रही जोय-सु.भ.
भाग्यवन्त तूं भामणी ए ।।12।।

म्हारे वेटो नहीं एक,
देखो कर्म नी रेख-सु. भ.
मैं पूर्व पाप घणा किया ए ।।13।।

पुत्र बिहूणी नार,
तिण रो अल[1] जमार-सु.भ.
तिणने तीज तिवार आसींगे[2] नही ए ।।14।।

---

1. बेकार 2. गमे नही

हिव सुणो देवता नी वात,
रायकुवंर रो जीव साक्षात-सु.भ.
म्हारो मन्त्री कठे चवने ऊपनो ए ।।15।।

देखे तो उपनो महतरणी रे पेट,
पिण मन्त्री म्हारो नेठ-सु भ.
देव अवधि ज्ञान में देखियो ए ।।16।।

म्हारे हण रे अन्य - मन्य वेण,
ओ म्हारो मन्त्री सेण-सु. भ.
इण ने ऊंचा कुल में मेलणो ए ।।17।।

नीचे कुल में अशुद्ध,
ऊंचे कुल में ऊंचो बुद्ध-सु. भ.
तुरत धरम हिये धरे ए ।।18।।

दोनूं गर्भ जनम्या समकाल,
आयो देवता ततकाल-सु. भ
देव दोनां ने निद्रा देई ए ।।19।।

चण्डालणी रो सुत झेल,
दियो सेठाणी कने मेल-सु. भ.
मरतक चण्डालणी कने मेलियो ए ।।20।।

सेठाणी रो हरस्यो मन,
म्हारो आज दिहाड़ो धन-सु.भ.
मैं जीवतो बेटो जनमियो ए ।।21।।

जाव जनम महोच्छव कीध,
मेतारज नाम तिणरो दीध-सु.ध.
न्यात जिमाई जुगत सूं ए ।।22।।

चण्डालणी चिंतवे एम,
कर्म सूं कीजे केम–सु.भ.
म्हारे मूवो बेटो हुवो ए ॥23॥

सुखे सुखे बरस हुवा सात,
देख देख हरसे मात - तात–सु भ.
कुंवर कला बहोत्तर भण्यो ए ॥24॥

किण ने खबर न कोय,
देवतां रा चरित जे जोय–सु.भ.
मेतारज सोले बरसां में हुवो ए ॥25॥

कुंवर नी सगाई कीनी आठ,
रचिया ब्याह तणा गह-घाट-सु.भ.
वींद विंदणियां जुगत सूं चला ए ॥26॥

वींद तो सोभे जाणे इन्द्र,
सुन्दर रूप महेन्द्र - सु. भ.
आठूं जाणे इन्द्राणी वींदणी ए ॥27॥

ए थई दशमी ढाल,
सुख में गमावे काल–सु. भ.
रिख रायचन्दजी कहे आगे सांभलो ए ॥
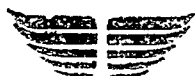
ढाल-11

[राग– जम्बू द्वीप मझार]

मन्त्री नो जीव–
देवता–
ज्ञान अवधि दियो ए ॥ 1 ॥

स्वर्ग तणा सुख छोड़,
आयो देवता–
मेतारज प्रतिबोधवा ए ॥ 2 ॥

पहले पहर मझार,
मेतारज महल में,
तिण कने आयो देवता ए ॥ 3 ॥

पूरब - भव विरतन्त,
भाख्यो देवता,
मेतारज आगले ए ॥ 4 ॥

हूं 'ईश्वर' नो जीव,
तूं गोविन्द तणो–
तें म्हारो कहणो नहीं मानियोए ॥ 5 ॥

तूं भमियो संसार,
गोता खावतो,
पुरोहित नो पुत्र हुवो ए ॥ 6 ॥

हूं देव तणो भव[1] मेट,
राय नो कुंवर हुवो–
आंपे दोनूं संजम आदर्यो ए ॥ 7 ॥

---

1. छोडकर

तूं चव हुवो चण्डाल,
माता थारी महतराणी-
वात सर्व सुणाई पाछली ए ॥ 8 ॥
हिवे ले तूं संजम भार,
परणे मत तूं पदमणी-
तूं भोग सामो भाले मती ए ॥ 9 ॥
त्यागन करो तेह,
विषय - रस भोगवो-
मधु - बिन्दु सारसो ए ॥10॥
तूं पंच महाव्रत धार,
गुरु ज्ञानो कने-
मोक्ष-दायक महावीरजी ए ॥11॥
जोग भोगवे बात,
जे तुझने रुचे-
मन माने जे दाखदे ए ॥12॥
कहे मेतारज कर जोड़,
नेह म्हारो नार सूं-
हूँ आठूं परणसूं पदमणी ए ॥13॥
जोवन वां में जोग,
हूं नहीं आदरूं-
भुगत भोगी हुवां पछे ए ॥14॥
लेसूं वुढ़ापे व्रत जोग,
ओ मन माहरो-
मेतारज कहे देवता भणी ए ॥15॥
कहे देवता कर कोप,
करूं जे देखजे घणी-
जे तूं परणे पदमणी ए ॥16॥

इम कही देव हुवो अदृश्य,
कुंवर कोई ना डर्यो-
हिवे चरित्र सुणो आगलो ए ।।17।।

लगन तणो दिन तेह,
बींद बण्यो भलो-
मस्तक मोड़ज बांधियो ए ।।18।।

घोडे चढियो बींद,
आगे जानिया-
जग-मग-जोत झिल रही ए ।।19।

नगारा निशाण,
बाजा बजावता-
बींद मन में मगनज हुय रह्यो ए ।।20।।

बजारां रे बीच,
जाण[1] बणाई जुगत सूं-
नर-नारी देखे घणा ए ।।21।।

इण विध जावे जान,
हरखे हियो घणो-
हिवे सुणजो जे देवता करे ए ।।22।।

– दोहा –

मेतारज रो मन्त्री देवता, अदृश्य ऊभो आकाश ।
जान बणी जुगत री, लक्ष्मी लील विलास ।। 1 ।।

देव मेतरणो रो मन फेरियो, फिर्यो चण्डाल रो पण चित्त ।
इण ने मोक्ष-मार्ग में घालणो, ओ व्हालो म्हारो मित्त ।।2।।

1. बारात

चंडाल ने चंडालनी, बकता आया दोय ।
मेतारज बेटो माहरो, सांभलजो सहू कोय ॥ 3 ॥

पुत्र कही ने पकड़ियो, जानी रह्या जोय ।
किण रो जोर न चालियो, बल देवता रो होय ॥ 4 ॥

बीद भणो ले चालियो, आयो आपण घर चंडाल ।
बात शहर में विसतरी, इचरज पाम्या लोग भूपाल ॥ 5 ॥

हाड वड सुरा-दुर गन्ध तिहां, जाणे नगरनी वास ।
बेटो कर बेसाणियो, मेतारज नाखे नीसास ॥ 6 ॥

ठलक ठलक आंसू पड़े, रोय रोय राता कीधा नेण ।
आयो मन्त्री देवता, थे म्हारा न मान्या बेण ॥ 7 ॥

– ढाल वही –

देव - मन्त्री कहे एम,
चरित्र म्हारो तें देखियो–
तूं 'मूल' मातंग घर आवियो ए ॥22॥

मेतारज कहे कर जोड़,
मूरख हूँ हुवो–
मैं थारो वचन नहीं मानियो ए ॥24॥

अबे मया करो महाराय !
कृपा कीजिये–
थे कहो ज्यूं हूं करु ं ए । 25॥

ले तूं संजम - भार,
विषय - रस छोड़ ने–
ममता परी मिटायदे ए ॥26॥

संजम में वड़ो स्वाद,
जो पाले प्रेम सूं–
तो सुख पावे सासता ए ॥27॥
भोगविया सुख - भोग,
देव मनुष्य ना–
पिण तन-मन न हुवो तिरपतो ए ॥28॥
मेतारज कहे देव ने एम,
ले सूं संजम खरो–
पिण परण सूं ए पदमणी ए ॥29॥
'श्रेणिक' नामा महाराय,
पुत्री छे जेहने–
वहन तो 'अभय' कुंवर तणी ए ॥30॥
तिका अपच्छर - रूप - निधान,
नव एकनका–
मन ज्यां में म्हारो वस्यो ए ॥31॥
म्हारी पाछी सुधारो वात,
परणूं नव पदमणी–
जरां मगन हुवे मन म्हारो ए ॥32॥
तव देवता कहे एम,
श्रेणिक महारायनो–
परणासूं तोने डीकरी ए ॥33॥
नव नारी - निधान,
परणाऊं तुझने–
पिण एक बात सुण म्हारी ॥34॥
नव नारी ने कहे तूं एम,
थांने परणियां पछे–
मोने सीयलज पालणो ए ॥35॥

सत धरे नेह लिगार,
किण ही बात रो-
म्हारे दिन ऊगे लेणी दीक्षा ए ॥36॥

आसंग न हुवे जो एम,
पूछे देवता-
वचन दे चूके मती ए ॥37॥

मेतारज मानी सर्व बात,
हूँ लेसूं दीक्षा-
हूं काम-भोग वंछूं नहीं ए ॥38॥

देवता सूधो कियो कोल,
परणावे किण परे-
चरित सुणो देवता तणो ए ॥39॥

आ इग्यारमी ढाल,
रिख रायचन्दजी कहे-
मोटी पण मीठी घणी ए ॥40॥

— दोहा —

देवता वैक्रिय बणावियो, मींडो अमोलक एक ।
मेतारज ने ते दियो, बतायो सर्व विवेक ॥ 1 ॥

करसी रतन री मींगणी, भरे रतन सूं थाल ।
राय श्रेणिक ने कर भेंटणो, तब कहजे बात प्रकार ॥ 2 ॥

तूं बेटी मांगे रायनी, मुझ परणावो महाराय ।
तो मींडो देऊं माहरो, एम करो अरदास ॥ 3 ॥

तूं दिल में डर मत आणजे, सिंह ज्यूं रहजे नीसंक ।
हूं सखाई[1] थाहरो, कोई बोल न सके अचंक ॥ 4 ॥

मेतारज मन रंजियो, देवता दे खान-पान ।
चंडाल घरे नहीं आवडे[2] ऊंचो वेसाणे आण ॥ 5 ॥

देव अहस हुय गयो, बले खबर करे दिन रात ।
हूं भाखूं भलो तरे, हिवे सुणजो आगली वात ॥ 6 ॥

ढाल-12

(राग :—)

मीडा री मींगणी देव-जोग,
सर्व रतनां तणी रे हां ।
मेतारज चिंतवे एम,
मेलूं राय-भणी रे हां ॥ 1 ॥

रतना सूं भरियो थाल,
दियो चडाल ने रे हां ।
भेटणो देवा जाय,
श्रेणिक भूपाल ने रे हां ॥ 2 ॥

ले आयो दरवार के,
राय ने जणांवियो रे हां ।
राजा सेवक मेल के,
थाल मंगावियो रे हां ॥ 3 ॥

---

1. मित्र 2. मन नहीं लगता

रतना सूं भरियो थाल देख,
पूछे चण्डाल ने रे हां ।
पाछो वीनवे चण्डाल,
'श्रेणिक' भूपने रे हां ॥ 4 ॥

माहरे बेटा रे मींडो एक,
करे मींगणी रतना तणी रे हां ।
राजा मांगे चडाल ने पास के,
मींडो देवो मो भणी रे ॥ 5 ॥

'हरदत्त' कहे चण्डाल के,
बेटा ने पूछसूं रे हां ।
पाछी मींडा नी वात,
सहू सुणाव सूं रे हां ॥ 6 ॥

मींडो मांगे महाराय के,
मोने दीजिये रे हां ।
मेतारज कहे माहरी वात,
राय ने कहीजिये रे हां ॥ 7 ॥

'अभय' कुंवर नी बहन के,
पुत्री तुम तणी रे हां ।
कर मोटो मंडाण,
परणावो मो भणी रे हां ॥ 8 ॥

तो मे [illegible] हाराज,
कांई न [illegible] रे हां ।
थां [illegible] मूंडके,
कोई [illegible] ी रे ॥ 9 ॥

– दोहा –

राय कहै चण्डाल आणियो, जिणरो ओछो ठाम ।
तकसीर[1] माफक करो, थां कहूं बैठानो बात ॥ 1 ॥

.. ढाल वही...

कहै 'सुदर्शन' चण्डाल,
बात नहीं मानसी रे हां ।
मांगी म्हारे पुत्र,
बेटी राजरी रे हां ॥10॥

कोप में चढ़ियो नृप,
बात सुणी रे हां ।
हिवे बोले 'अभय' कुमार,
रोस न कीजिये रे हां ॥11॥

कहै चण्डाल देव,
थां इम जाणजो रे हां ।
कोई नहीं इणरा सामर्थ[2] के,
बेटी मांगे म्हारो रे हां ॥12॥

देवता रा मुख री छै बात,
मैं पायो पारखो[3] रे हां ।
मेतारज सेठ रो पुत्र के,
नहीं इण सारखो[4] रे हां ॥13॥

---

1. गलती 2. शक्ति 3. परीक्षा 4. समान

ए थई बारमी ढाल के,
मेतारज तणी रे हां ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे एम,
चले बात आगे घणी रे हां ॥14॥

ढाल–13

[राग : थाहरे नेणां रो पाणी लागणो]

अकल बुद्धि अथाग,
'अभय' कुंवर तणी-राजा ।
सूत्र सिद्धांत मंझार,
भाखी त्रिभुवन धणी-राजा ॥1॥

बोले 'श्रेणिक' राय,
तूं तो बुध रो धणी-राजा ।
मेतारज री बात,
कहे तूं मो भणी-राजा ॥2॥

इण बात रो नीसंक,
निर्णय निश्चय करो-राजा ।
मैं तोने[1] सूंपी बात,
ए काम करो खरो-राजा ॥3॥

कहे 'अभय' कुमार,
आयो इण बात में-राजा ।
माहरे च्यार ए काम,
करे इक रात में - राजा ॥4॥

---

1. आपने

राजगृही रे रूपा रो कोट,
सोना रा कांगरा सही-राजा ।
दरवाजे ऊपर मेल,
भूरज पूरणी लही-राजा ॥5॥

तिवा नगरी रे पाज,
बांधे पथरां तणी-राजा ।
उतरता चढतां सुख हुवे,
सहु लोकां भणी-राजा ॥6॥

बाग सूखी नीली कराय,
फल फूल वली सोभती-राजा ।
दीठां आवे दाय,
वले मन ने जे मोहती-राजा ॥7॥

चार बावड़ियां बाग बीच,
भरो गंगा-जल पाणीये-राजा ।
ए च्यारूं करे काम,
तो परणाऊं कुंवरी सही ए-राजा ।

थारा बेटा नें कह जाय,
च्यारूं बातां इसड़ी कही-राजा ।
तो परणावे आय,
श्रेणिक राजा डीकरी[1]-राजा ॥9॥

ए थई तेरमी ढाल,
'अभय' कुंवर तणी-राजा ।

1. बेटी

रिख रायचन्दजी कहे एम,
वले बात आग घणी-राजा ॥10॥

– दोहा –

च्यार वातां चित्त धारने, कही मेतारज ने आण ।
राय परणावे डीकरी, थे करो बोल प्रमाण ॥ 1 ॥

मेतारज मन सिमरियो, देव आयो तिण वार ।
मेतारज कहीं मांडणे, ए बातां करणी च्यार ॥ 2 ॥

एक रात में देवता, करे वैक्रिय समुद्घात ।
च्यारूं बातां कर दिधी, कोट, पाज, वाड़ी पाणी विख्यात ॥3॥

मींडो जाय राजा ने दियो, राते रह्यो महल में सोय ।
भातरी[1] मींगणी हुई, पण रतन नवि दीठो कोय ॥ 4 ॥

प्रभाते राय देखने, कही 'अभय' ने बात ।
बादल ज्यूं मींडो गयो, देखो देवता कीधी बात ॥ 5 ॥

ढाल–14

(राग :— मेल री मूंग)

दिन ऊगते लोग लुगाई,
देखी कोट रूपा रो ।
सोने रा कोसीसा सोभे,
इचरज हुवो अपारो ॥

1. जो खाया उसकी

नगरी अभल[1] भणी छे,
नगरी सोभ रही छे जी ।। 1 ।।

श्रेणिक राजा नेणाँ निरखी,
ए च्यारूं वातां दीठी ।
ए वातां देवता री साखरी[2],
लागी मन में मीठी ।। नगरी०।। 2 ।।

अभय कुंवर नी बुद्धि वखाणी,
राय श्रेणिक शक्ति-धारी ।
सेठ ने घरे लाय कुंवर ने,
करो विवाह नी तैयारी ।।नगरी०।। 3 ।।

मैतरणी रो देवता मन फेरियो,
चण्डाल रो पिण मन घेर्यो ।
ओ माहरो नहीं बेटो बापजी,
सगले शहर ढंढारो[3] फेर्यो ।।नगरी०।।4।।

ए सेठ रो बेटो सेठाणी जायो,
सगलां वात ज मानी ।
सगलां री निकल गई शंका,
हरख्या मन में जानी ।। नगरी० ।। 5 ।।

देवता सगलां रो मन कर दियो सेंठो,
ओच्छव मोच्छव जाजो कीधो ।
बींद ने पाछा लेकर आया,
सेठ ने कुंवर सूंप दीधो ।।नगरी०।।6।।

---

1. अजीब 2. सुन्दर 3. डूण्डी

श्रेणिक राजा करी सगाई,
मनोरमा नामा बेठी ।
नव नारी एक न दिन परणी,
रूप तणी सहू बेठी ।। नगरी० ।। 7 ।।

मोटे मंडाण विवाहज कीनी,
हरख्या सेठ - सेठाणी ।
बहू सासुरे पाय लागी,
जग में महीमा फेलाणी ।।नगरी०।।8।।

मेतारज मन हुय गयो राजी,
नव नारी ने मैं परणी ।
पुण्य रे जोगे मोने मिल गई,
सुन्दर सोवन - वरणी ।। नगरी० ।। 9 ।।

चवदमी ढाल हुय गई पूरी,
रिख रायचन्दजी कहे एम ।
मेतारज रो मित्र देवता,
अब समझावे केम ।। नगरी० ।।10।।

:: दोहा ::

मेतारज ऊभो[1] महल मां, बण्यो बणायो वींद ।
नव कामण ऊभी कने, पिण नेणां घुल रही नींद ।। 1 ।।

देवता, मेतारज करे ।[illegible]
मो ऊपरे, म्हारा सरिया [illegible] ।।

गुरु महावीर ज्ञानी कनें, लेसूं संजम-भार ।
नेह न करणो नार सूं, ओ थांरो पूरो कियो कराए ॥ 3 ॥
मेजारज इम वीनवे, हूं चाकर चरणां रो दास ।
हूं वचन न लोपूं राज रो, पण एक सुणो अरदास ॥ 4 ॥

ढाळ–15

(राग :— नवकार)

कामणी माहरी कंचन-वरणी,
प्रेम विलूधी प्रीतम ने वरणी ।
मोने नहीं देखे तो थांरो हियो फूटे,
मोसूं आज तो घर ना छूटे ॥ 1 ॥

काम भोग मोने लागे प्यारा,
पांच इन्द्रियों ना न्यारा न्यारा ।
छोडतां म्हारो जीव[1] तूटे ॥ मोसूं॰ ॥ 2 ॥

म्हारे मन मां घणी ममता,
म्हारा परिणाम फिरे भमता भमता ।
ज्यूं भमरो मोह रयो फूलना बूंटे[2] ॥मोसूं.॥3॥

तूं विषय-स्वाद री मत कर ममता,
तूं शीयल पाल आणदे समता ।
खिण खिण आऊखो खूटे ॥ मोसूं. ॥ 4 ॥

जोवनवे में जोग दोरो,
भुगत भोगी हुवां पछे सोरो ।
हूं देवता कने कदेई न बोलूं झूठे ॥ 5 ॥

---

1. दु:खी 2. पौधा

वुढापे काया में कोई नहीं गजो,
जोवनवे में जोग रो मजो ।
मुनि धर्म - रूपियो धन लूंटे ।।मोसूं०।। 6 ।।

कायर सेती किम पले दया,
मो ऊपर बारह वरस करो मया ।
पछे दीक्षा लेसूं खरे खूंटे ।।मोसूं०।। 7 ।।

देवता कहे न गयो थाकी,
पण भोगावली कर्म रया बाकी ।
भोगवियां विन नहीं छूटे ।।मोसूं०।। 8 ।।

बारह बरस पछे लेसूं साधपणो,
देवता खरायो घणो घणो रे ।
देवता परो गयो अब पूठे[1] ।।मोसूं०।। 9 ।।

रिख 'रायचन्दजी' ढाल पनरमी भणी,
महनत देखो देवता रे तणी ।
आऊखो पल पल खूंटे ।।मोसूं०।।10।।

– दोहा –

सदा काल सुख भोगवे, मेतारज रो हुवो राजी मन ।
लीला लिछमी भोगवे, जाणे आज दिहाड़ो धन ।। 1 ।।

सुख भोगवतां दिन गया, जातो न जाण्यो काल ।
बारह वर्ष पूरा हुवा, देव आयो तत्काल ।। 2 ।।

---

1. वापिस

लेय दीक्षा चित्त दृढ़ करी, मेतारज चमक्यो चित्त मझार।
बोल न सके जीभ थी, तव मिली सगली नार ॥ 3 ॥

मैं झगड़ों करसां जेठ सूं, आडी[1] कदी आवे लाज।
गाडो उलली[2] मांय छे, किसी विनायक काज ॥ 4 ॥

नव कामण कर जोड़ ने, चित हरणी चतुर सुजाण।
सनमुख ऊभी जेठ रे, हिव किण विध बोले वाण ॥ 5 ॥

ढाल-16

(राग : काली कली अनार की रे हां)

मैं पिव ने पकड़ राखसां रे हां,
ए भर जोवन भरतार मेरे जेठजी।
कंत - विहूणी कामणी रे हां,
किम जावे जम बार ॥ मेरे.मैं. ॥ 1 ॥

ए लीला ना लाडलो रे हां,
केल गर्भ सुखमाल - मेरे० ।
कंवर पणे केलास में रे हां,
जातां न जाण्यो काल ॥मेरे. मैं.॥ 2 ॥

ए मन्दिर ए मालिया रे हां,
ए सुख माली सेज - मेरे० ।
सोवन वरणी सुन्दरी रे हां,
छुडायो न छुटे हेज ॥ मेरे. मैं. ॥ 3 ॥

---

1. किस काम की 2. उलटने पर

दीक्षा री वात दोहिली रे हां,
व्रत पालवो जाव जीव - मेरे० ।
कायर सेती किम वले रे हां,
नहीं वैराग री नींव ।। मेरे. मैं. ।। 4 ।।

थे मया करो म्हारां ऊपरे रे हां,
लुल लुल करां सिलाम - मेरे० ।
थे तो सेणा ने समभणा रे हां,
मत लो दीक्षा रो नाम ।।मेरे मैं.।। 5 ।।

मैं अरज करां अछीतरे रे हां,
लटका करां वारू भाख-मेरे० ।
मैं गोद विछाई ने कह रही रे हां,
वले सासू देसां साख ।। मेरे.मैं. ।। 6 ।।

जंवाई श्रेणिक राय नो रे हां,
सालो अभय कुंवार - मेरे० ।
माइतां तणो जीव भुरे रे हां,
मां पले लागो नव नार ।।मेरे मैं.।। 7 ।।

किणई वेटो न जायो बापड़ी रे हां,
रहो बारह वरस घरवास-मेरे० ।
एक वेटो हुवे जेठजी रे हां,
ए म्हारी अरदास ।। मेरे. मैं. ।। 8 ।।

ए अरदास करतां थकां रे हां,
देवता मानी वात - मेरे० ।
कामण ऊपर किरपा करी रे हां,
किया वारह वर्ष वगसीस ।।मेरे.मैं.।। 9 ।।

पछे मैं पालां[1] नहीं रे हां,
तुमछी आण पचास - मेरे० ।
वचन दियो देवता भणी रे हां,
पछे देव गयो आकास ।। मेरे. मैं. । 10।।

ए सोलवी ढाल पूरी थई रे हा,
रिख 'रायचन्दजी' कहे एम-मेरे. ।
मंत्री देव ने मोहियो रे हां,
स्त्री मोहनी एय ।। मेरे. मैं ।।11।।

— दोहा —

मेतारज - मन हर सियो, सुन्दर तुमने शाबास ।
मन - वंछित फल्या माहरा, आंपे विलसां लील-विलास ।। 1 ।।
खाया पिया पहरिया, पूरी मन – जगीस ।
दिन सोरा सुखियां तणा, पुरा हुवा वर्ष चउवीस ।। 2 ।।
अवध देई मंत्री देवता, आयो छे ततकाल ।
मेतारज ने कहे कर मतो[2], अव चलो सूरत संभाल ।। 3 ।।

ढाल 17

(राग:—भोले वस मिल गाई रे)

मंत्री देवता आवियो,
मेतारज हरख्यो मन रे ।
थे मया करो मो ऊपरे,
दिन ऊगो आज रो धन रे ।। 1 ।।

---

1. मना 2. मन

म्हारो मन वसियो वैराग में,
आदरू सीयल संतोष रे ।
संजम थी सुख सासता,
साचो मारग मोख रे ।। म्हारो० ।। 2 ।।

तन धन जोबन कारमो,
संसार सुपने री माया रे ।
विरणसत बार लागे नहीं,
काचो कुंभ जिम काया रे ।। म्हारो० ।। 3 ।।

हूं मूर्ख कांई समझूं नहीं,
सीखड़ली तुमनी मानी रे ।
मोह तणे वस मानली,
मत अंधा अज्ञानी रे ।। म्हारो० ।।4।।

कत कहे कामरण सुरणो,
मैं समता - रस पीधो रे ।
चारित्र म्हारे चित्त वस्यो,
मैं जीवने वस कीधो रे ।। म्हारो० ।। 5 ।।

विषय रस विष सारसो,
नीची गति में ले जावे रे ।
कांई स्वाद नहीं शील सारसो,
स्वर्ग शिव - सुख पावे ।।म्हारो०।। 6 ।।

म्हैं वीर कने लेसूं दीक्षा,
सांभली बात लुगाई रे ।
नव भामरण विलखी थई,
मूंडो गयो कुमलाई रे ।। म्हारो० ।। 7 ।।

ठलक ठलक आंसू पड़े,
पदमरण पिव ने आगे रे ।
पिरण मंत्री देव ने वचन दियो,
जोर कोई नहीं लागे रे ।।म्हारी०।।8।।

सतरमी ाल पूरी भई,
सुणतां सवाद लागे रे ।
रिख 'रायचंदजी' कहे सांभलो,
दीक्षा रो अधिकार आगे रे ।। म्हारो० ।।9।।

ढाल 18

(राग:—नणदल री)

तीर्थ नाथ त्रिभुवन - धरणी,
भगवंत वीर जिणंद-जिनेश्वर ।
पर - उपगारी पधारिया,
साथे मुनिवर वृन्द हो ।। जिने० ।।1।।

श्री वीर जिनंद समो सर्या,
ज्योता ज्यांरी बाट-जिनेश्वर ।
विध सूं जावे वांदवा,
नर-नारी ना थाट हो ।। जिने० ।। 2 ।।

'गुरण सिल' नामा वाग में,
विराज्या जिन राज हो-जिने०
सेवा करे सुर नर देवता,
सफल करे अवतार हो ।। जिने० ।। 3 ।।

राजा 'श्रेणिक' आयो वांदवा,
आयो 'अभय' कुवार हो-जिने. ।
पट - राणी आई चेलणा,
वले राय तणो परिवार हो ।।जिने. ।4।।

'मेतारज' पिण आवियो,
वांधा श्री जिन वीर हो-जिने.
शुभ परिणाम मन हुलास में,
बेठा श्री जिन तीर हो ।। जिने० ।।5।।

धर्म - कथा जिनवर कहे,
मीठी मधुरी वाण हो-जिने० ।
चित्त रींझे चतुरां तणो,
निश्चय पद निर्वाण हो ।। जिन० ।।6।।

मेतारज इम वीनवे,
हूं लेसूं संजय-भार हो-जिने० ।
वलता जिनवर इम कहे,
म करो जेज लिगार हो ।। जिने० ।।7।।

सेठ सेठाणी भणी,
इम कहे करजोड़ हो-जिने० ।
मेतारज मांगे आंगन्या[1],
हूँ संजम लेसूं घर छोड़ हो ।।जिने० ।।8।।

उत्तर पर उत्तर किया घणा,
बाप बेटो ने माय हो - जिन० ।

---

1. आज्ञा

'अभय' कुंवर सालो सगो,
सुसरो श्रेणिक राय हो ।। जिने० ।। 9 ।।

सगलां कने सेठा रहि्यो,
मो च्छव कीधो मोठे मंडाण हो-जिने. ।
शिविका में वेसाणजो,
सूंप्यो प्रभुजी ने आण हो ।।जिने०।। 9 ।।

मेतारज ने दीक्षा दीनी,
जग गुरु श्री जगनाथ हो-जिने० ।
पंच मुष्टी लोचन कियो,
परि हरिया सगलो साथ हो ।। जिने० ।।11।।

देवता दीक्षा दी राय ने,
मुनि मेतारज पग वद हो-जिने० ।
देव गयो देव-लोग में,
पाम्यो परम आनन्द हो ।। जिने० ।।12।।

'अभय' कुंवर श्रेणिक सहित,
मात तात नव नार हो-जिने० ।
सर्व लोग घरे गया,
मुनि धन धन इण संसार हो ।।जिने०।।13।।

अठारमी ढाल पूरी हुई,
मेतारज लीनो संजम-भार हो-जिने० ।
रिख रायचंदजी कहे सांभलो,
वली आगे अधिकार हो ।।जिने०।।14।।

-*-

– दोहा –

मेतारज मुनि भण्यो, नव पूरबनो ज्ञान ।।
उतकृष्टी किरिया करे, धरतो निर्मल ध्यान ।। 2 ।।

श्री जिनवर - आज्ञा हुती, हुवा एकल मल अणगार ।
जिन कल्पी पणो आदर्यो, करता उग्र बिहार ।। 2 ।।

काल कित्तोई नीकल्यो, हुवा वर्ष अनेक ।
मास मास करे पारणों, करता तपस्या विशेष ।। 3 ।।

'राज गृही' मुनि आविया, करे पहले पहर सजाय ।
ध्यान दूजे पहरे आवियो, तीजे पहर गोचरी जाय ।। 4 ।।

ढाल–19

(राग:—दूजो परीसो दोहिलो)

मास खमरा रे पारणे,
चित्त निर्मल चोविहारोजी ।
उठ्या मुनिवर गोचरी,
राजगृही मझारे जी ।। 1 ।।

धन धन मेतारज मुनि,
तपसी काकड़ा - भूत ।
ज्ञान आचार में ऊजला,
दिया मुगति ना सूत ।। धन० ।।2।।

सोनी रे घर साधजी,
आया आहार ने काज ।
सोनार मन राजी भयो,
म्हारे आई जहाज ॥ धन० ॥ 3 ॥

सोनार रे मांहे[1] संचर्या[2],
वैरण काजे आहार ।
मुनि ऊभा मोड़ा[3] कने,
लागी थोड़ीसी वार ॥ धन० । 4 ॥

जव अठोत्तार सौ जग - मगे,
घड़िया गहना काज विशेष ।
पंखी कूकड़े जव चुग्या,
मुनि ऊभा तिहां देख ॥ धन० ॥ 5 ॥

मुनि ने वहराय ने,
सोनी पाछो तिण ठाम आयो ।
जव तिहां दीठा नहीं,
पूछे मुनि - रायो ॥ धन० ॥ 6 ॥

सोनी पूछे साधुजी,
जव कहो किण लीधा ।
पिण मुनिवर वोले नही,
तरे चपेटा मुनि के दीधा ॥ धन० ॥ 7 ॥

सोनी मन मां विचारियो,
कोई आयो नही ओर ।

---

1. अन्दर 2. गया 3. दरवाजा

कुरकुट रे कामरो नहीं,
सही ए साध चोर ।। धन० ।।8।।

मुनिवर ने मांहे ले गयो,
वेत सूं बांध्यो सीस ।
ऊभो राख्यो तावड़े,
पिण मुनि न आणी रीस ।।धन०।। 9 ।।

उतकृष्टी वेदना प्रगटी,
पाम्या केवल ज्ञान ।
कर्म खपाय मुगति गया,
निश्चल रह्या ध्यान ।।धन०।।10।।

मेतराज मुनि उत्तम हुवा,
मेट्या जनम मरण जंजाल ।
रिख 'रायचन्दजी' इम कहे,
ए थई उगनीसमी ढाल ।। धन ।।11।।

ढाल–20

(राग:—धर्म आराध ए)

कठियारे नाखी भारी काठनी ए,
कुरकुट जाणे हुई हेल ।
डरप्यो[1] अति घणो ए,
जब पाछा दीना मेल ।। 1 ।।

बात सुणो सुनारनी ए,
बैर पूरबलो जोय ।

1. डरा

मुनि ने मुगति सिधावणो ए,
करम न छूटे कोय ॥ बात ॥ 2 ॥

सोनी जब देखी ने डरपियो ए,
मैं विना गुने मार्यो मुनिराय ।
जंवाई राजा श्रेणिक तणो ए,
ए मोटो कियो अन्याय ॥ वात॰ ॥ 3 ॥

महा अकारज मैं कियो ए,
किम छूटीजे पाप के ।
तो सरणो लेऊं साधां तणो ए,
उठे वीर विराज्या आपके ॥ बात॰ । 4 ॥

परिवार सहित संजम लियो ए,
गुरु मोटा महावीर के ।
सरण आयो भगवंत रे ए,
बेठो साधां रे तीर के ॥ बात॰ ॥ 5 ॥

खबर हुई 'श्रेणिक' भणी ए,
सोनी मार्यो 'मेतारज' अणगार ।
कोप्यो राजा इम कहे,
ए सहू पकड़ लावो परिवार ॥बात॰॥6॥

वीर वांदण ने आवियो ए,
श्रेणिक पृथवी नाथ क ।
सर्व बात कही महावीरजी ए,
ओ बेठो सोनी रो साथ क ॥बात॰॥7॥

भगवंत सांसो भांजियो ए,
कांई रीस म आणो कोय ।
मुनि ने मुगति जावणो ए,
कर्म न छोडे कोय ।
मुनिवर धर्म दीपावियो ए ॥बात०॥8॥

धीर वचन समता करी ए,
श्रेणिक अभय कुंवारक ।
सेठ सेठाणी श्रावक थया ए,
समकित पामी निरमल नारक ॥धर्म०॥9॥

मंत्री देवता चव करी ए,
लियो मानव - अवतार ।
ले संजम मुगते गयो ए,
धन तेहनो अवतारक ॥ धर्म० ॥ 10 ॥

चरित मेतारज मुनि तणो ए,
संपूर्ण हुई बीसमी ढाल ।
भणे सुणे जे भाव सूं ए,
ज्यांरे वरते मंगल माल ॥ धर्म० ॥ 11 ॥

पूज्य जयमलजी रे प्रसाद थी ए,
रिख 'रायचन्दजी' इम भाखे ।
चरित कियो चूंपसूं ए,
'कथा कोष' ग्रंथनी साखेक ॥धर्म॰॥12॥

इण में अधिको ओछो कोई आवियो ए,
ते मिच्छामि दुक्कड़ं मोय ।

अवगुण ने परिहरो ए,
गिरवानां गुण लीजो जोय क ॥धर्म०॥13॥

संवत अठारे गुण पचास में ए,
'नागोर सहर' चउमास ।
सुद पूनम पूरण कियो,
आसोज मास अभ्यास ॥धर्म०॥14॥

※ कलावती ※

– दोहा –

युग - मन्दिर जिन जग-गुरु, प्रणमूं जेहना पाय ।
शील तणी महिमा करूं, चतुर सुणो चित लाय ॥ 1 ॥

काप्या[1] हाथ 'कलावती', भरम धरे भूपाल ।
पिण चोखे चित्त कलावती, शील कल्पो ततकाल ॥ 2 ॥

ढाल–1

(राग :– वीर तकरावो)

भरत क्षेत्र मांहे भलो,
'शंखपुर' अभिरामो जी ।
राज करे रलियावणो,
'शंख' नृप तिण ठामोजी ॥ 1 ॥

---

1. कांटे

शील तणी महिमा सुणो,
शील समो नहीं कोईजी ।
सती री सुर सेवा करे,
जगत ज्यां रो सुख जोईजी ।।शील.।। 2 ।।

राय ने राणी कलावती,
रूप अनुपम जाणीजी ।
श्री देवी जाणे सारखी,
कोयल सिरखी वाणीजी ।। शील. ।। 3 ।।

समकित में सेंठी घणी,
बारह श्रावक व्रत-धारीजी ।
दया-धर्म तेहने दिल वसे,
हिंसा - धर्म निवारीजी ।। शील. ।। 4 ।।

महाराणी मानी जती,
रायने अति[1] हद प्रेमोजी ।
सुख विलसे ससार ना,
दोगंधिक देव जेमोजी ।। शील. ।। 5 ।।

राणी रे गर्भ ऊपनो,
सुपनो पूरण कलस नो दीठोजी ।
राय कहे पुत्र जनमसी,
वचन लागो पिण मीठोजी ।।शील.।। 6 ।।

राणी गर्भनी करे प्रति पालना,
सुख में जावे दिन-रातोजी ।

1. अत्यधिक

रिख रायचन्दजी कहे सांभलो,
आगे हुवे तिका वातोजी ।।शील.।। 7 ।।

– दोहा –

'जय सेन' नामे हुतो, व्हालो राणी - वीर ।
तिण दिया वहन ने बोरख्या,[1] शोभे सकल शरीर ।। 1 ।।
देख देख ने बोरख्या, धरे हिवड़े हरस अपार ।
अधिक सनेही माहरो, व्हालो प्राण - आधार ।। 2 ।।

ढाल–2

(राग :- माता नो ऊऽे किसन)

रग रली मांहे रहती राणी,
मन - गमता जीमे मेवा ।
नरपत घर आयो ने बोरख्या दीठा,
तरे मन-मांहे पड़ियो सन्देहा ।। 1 ।।

नरेसर मन मांहे माठी[2] विचारी,
ए रमणी कदे नहीं रूड़ी[3] ।
आतो मन मांहे गेली[4] राणी,
पुरुष परायो तो इणने पास्यो[5] ।
मैं व्यभिचारनी रीत जाणी ।।न०।। 2 ।।

अवे इण सूं म्हारे काम न कोई,
राय ने चढ़ गई धूंधी[6] ।

1. चूड़ा 2. बुरी 3. मलीन 4. अच्छी 5. फंसा लिया है
6. अत्यधिक क्रोध ।

हूं इण रो कर्म इणने भुगताऊं,
राय अकल विचारी ऊंधी ।।न०।। 3 ।।

नरपत तुरत सेवग तेड़ावि[1]
थे बेग सताव सूं जावो ।
राणी ने रथमां बेसाणी,
रन वन वेग दिखावो ।। न० ।। 4 ।।

सेवग तो अटवी में ले आयो,
तब तिहां बोली राणी ।
इण दंडाकार डरावणी जगा,
थे मांने किम कर आणी ।। न० ।। 5 ।।

दूजी ढाल में डरपी राणी,
करम तणी गति भारी ।
रिख रायचन्द कहे विण भोगवियां,
नहीं हुवे छूटक बारी । न० ।। 6 ।।

— दोहा —

राय कलंक दियो तो भणी, कंत किया अकाज ।
आडाकर[2] धरणी ढली, मैं आयो मेलण काज ।। 1 ।।
सचेतन कीधी सती, सेवग बोली बात ।
माता दोष न माहरो, मत जाणो तिल-मात ।। 2 ।।
थे कहजो सन्देसो माहरो, राजाजी ने आम ।
विन पूछयां वालहा ! किम कीजे एहवो काम ।। 3 ।।

---

1. बुलाकर 2 रोते हुए

ढाल-3

(राग :- तिण अवसर मुनिराय ए)

'शंख' नामा महाराय,
माठी विचारी मन मांय-कर्मवश ।
राय रूठो राणी ऊपरे ए ।। 1 ।।

राय मेली चण्डालणी दोय,
थे जेज म कीजो कोय-कर्म. ।
राणी जठे थे जावजो ए ।। 2 ।।

थे कापजो[1] दोनूं ही हाथ,
कोई पूछणारी नहीं वात-कर्म. ।
इण वांध्या जठे वोरह्या ए ।। 3 ।।

काली महा विकराल,
मुख वोलती आल-पंपाल[2]-कर्म ।
तिवड़ी भीवड़ी चाढती ए ।। 4 ।।

अगल वगल[3] वोले गेर,
जाणे जीभ सूं भर रह्यो जेर-कर्म. ।
खड़्ग छे जेहना हाथ में ए ।। 5 ।।

ते आवी वन - खंड,
रूठी भूठी ए रंड - कर्म. ।
मोने मेली मारण ने महाराजजी ए ।। 6 ।।

मुख वोलती मार मार,
तीखी काढ़ी तर वार - कर्म. ।
देखी राणी कंपित हुई ए ।। 7 ।।

---

1. काटना 2. अंट-संट 3. अंट-संट

डाकण ज्यूं लागी दोए[1],
तब राणी दीधो रो ए - कर्म. ।
नेणां निरझरणा झर रया ए ।।8।।
जाणे तूटो मोतियां रो हार,
नाथ विहूणी[2] निरधार - कर्म. ।
अबला नारी एकली ए ।। 9 ।।
पूरे मासे पेट ।
पिण पाप न छे नेट - कर्म. ।
सती शील-सरोवर झूलती ए ।।10।।
दोनूं ही कर दिया काप,
प्रगटयो पहिलो ए पाप - कर्म. ।
बिण भुगत्यां छूटे नाहीं ए ।।11।।
नर ए थई तीजी ढाल,
लागो राणी रे जीव-जंजाल-कर्म. ।
रिख 'रायचन्द' कहे थे आगे सांभलो ए ।।12।।

-:: दोहा ::-

बढ़िया दीधा बोरखा, गुण थी अवगुण थाय ।
जोर न चाले केह नो, करम उदय हुया आय ।। 1 ।।

ढाल-4

(राग —नणदल नी)

वूकियां[3] बांधी बोरखा,
दोय कर दीना दूर ।
धिगर पग सुखे माथे लगे,
वेदन हुई भरपूर ।।धिग.।। 1 ।।

---

1. पीछे 2. बिना की 3. बांहे

देखो पुण्याई माहरी,
पूरे मासे पदमणी ।
बेटो जायो तिणवार,
कुमी नही कष्ट में ।
ए जाणे जाणण हार ।। धिग. ।। 2 ।।

मैं पूरव भव में पापणी,
केई किया करम कठोर-धि. ।
के किणारां लूस्या[1] कालजा,
के छलिया धन चार ।।धि.।। 3 ।।

के मैं साध संतावियो,
के मात-विछोयो बाल-धि. ।
के मैं गर्भ गलाविया,
के मै दीना कूड़ा आल ।। धि ।। 4 ।।

के थापण राखी पारखी,
पर पेट में पाड़ी झाल-धि. ।
के चाड़ी[2] मैं खाधी संत री,
के फोड़ी सखर-पाल ।। धि. ।। 5 ।।

एकतो वेदन हाथरी,
वली मैं जनम्यो बाल-धि. ।
दोनू ही दुःख दोहिला,
वेदन महा - असराल ।। धि. ।। 6 ।।

बाल रोवे वोबे[1] विना,
घले तड़फड़ करतो जेह-धि. ।

1. मसोसा 2. चुगली 3. स्तवन

इण उजाड़ में हूं एकली,
दाजे राणी री देह ॥ धि. ॥ 7 ॥

हूं कर तो किण विध लेवूं रे लालजी !
राणी रही रन में रोय-धि. ।
मुख कुंमलाणी कामणी,
रही बालूड़े सामो जोय ॥ धि. ॥ 8 ॥

इण जीतव थी मरणो भलो,
मैं दुखियारी हूँ नार-धि. ।
बेठी रोवे बापड़ी,
एक लडो निरधार ॥ धि. ॥ 9 ॥

सती तो बैठी सोच में,
इण चोथी ढाल मझार-धि. ।
रिख रायचन्द कहे सांभलो,
आगलो अधिकार ॥ धि. ॥10॥

--- दोहा ---

कर वन्दन कलावती, करे अरिहन्त सूं अरदास ।
एक अन्तर जामी आपरो, मुझ ने छे विश्वास ॥ 1 ॥

सती सिमरण भव में कियो, निरमल चित नवकार ।
अरिहन्त सिद्ध साध धरम ना, चित सरणा चार ॥ 2 ॥

ढाल-5

(राग—अलबेलिया नी)

कहे राणी कलावती रे लाल,
बिल बिलती वार वार–शील साचोजी ।
थे सुणजो शासन-देवता रे लाल,
म्हारी वेगी कीजो सार । शील. कहे.।।1।।

हूँ बूरे हवाल बिलखी बेठी रे लाल,
कष्ट में कुमी है न काय–शील. ।
म्हारो वालूड़ो बिल बिल करे रे लाल,
मांसू कह्यो कठा लग जाय ।।सील.कहे ।।2।।

सती रे शील-प्रभाव थी रे लाल,
देव आयो बैठ विमाण–शील ।
दुःख सती रा दुरे किया रे,
वरत्या कोड़ कल्याण ।।शील.कहे.।। 3 ।।

कर दोनूं कर दिया देवता रे लाल,
कियो कंचण वरण शरीर–शील. ।
सिणगार सोले सोभती रे लाल,
गहणा गांठा न हीर चीर ।।शील कहे.।।4।।

सुगन्ध फूलां री वर्षा करे रे लाल,
गावे देव गण गीत – शील. ।
जनम-महोच्छव कियो कंवरनो रे लाल,
बाजा वधाया सहू रीत ।।शील.कहे ।। 5 ।।

कवर ने कलावती रे लाल,
ले बेठी खोला मांय ।। शील ।।
माता मन रा मनोरथ पूरती रे लाल,
धन्न धन शील[1] सखाय ।।शील कहे।।6 ।

देव देवी धन धन करे रे लाल,
लुल लुल पाये लाग ।। शील. ।।
बाई! मैं दीठो दरसण ताहरो रे लाल,
म्हारे हुवो हरस अथाग ।।शील.कहे.।।7।।

पांचमी ढाल में पामियो रे लाल,
चित्त सती घणो चेन ।। शील. ।।
रिख 'रायचन्दजी' कहे संसार मे रे लाल,
शील रतन ए अकेन ।।शील कहे.।।

ढाल–6

[राग–सुवटा नी]

रग - रली मा बेठी राणी,
जाणे इंदर तणी इंद्राणी ।
शील प्रभावे साता पामी,
मुझ तूठा त्रिभुवन - स्वामी,
शीलवती री सारी शोभा ।। 1 ।।

दूधां मेह सती रे वूठा,
शील प्रभावे देवता तूठा[2] ।।शील.।।
जगमग ज्योत देवता केरी,
वाजा वाज रया शंख भेरी ।।शील. । 2 ।।

---

1. महिमा 2. प्रसन्न

तिण वेला एक तापसी आई,
रिध देखी ने अचिरज पाई ।।शील.।।
तापसणी राणी ने दीठी,
वाणी बोले अति मीठी ।।शील.।। 3 ।।

तापसणी कहे सांभल बाई,
धन धन थारी कमाई ।।शील.।।
मैं आज दरसण दीठो थांरो,
मन मोह लियो थें म्हारो ।।शील.।। 4 ।।

मो ऊपर बाई किरपा कीजे,
म्हारे आंगणे पगल्या दीजे ।।शील.।।
बाई तो सारखी बीजी नही बेन,
चित्त म्हारो पाम्यो छे चेन ।।शील.।। 5 ।।

मो मन हरस आशा मारी पूरो,
हूं कर जोड़ी ऊभी हजूरो ।।शील.।।
तापसणी कहे मठ म्हारो मोटो,
जठे नहीं किणी वात रो तोटो[1] ।शील.।6।

सती कहे सांभल वात म्हारी,
मैं मानी विनती थारी ।।शील.।।
छठी ढाल यह थई पूरी,
पिण वात रही छे अधूरी ।।शील.।। 7 ।।

कलावती राणी पामी साता,
जेह नो शील सखाई दाता ।।शील ।।
रिख 'रायचन्द' कहे मोटो शील-रतन,
तिणरा कीजे कोड जतन ।।शील.।। 8 ।।

---

1. कमी

– दोहा –

शासन देव ने सती कहे, सांभल म्हाला वीर ।
थे उपगार मोटो कियो, मेटी म्हारी पीर ।। 1 ।।

तोपसण ने कहे देवता, ए सती धरमण धन ।
थारे घर तूं राखजे, करजे कोड़ जतन ।। 2 ।।

सती सीख दियां पछे, देव गयो आकाश ।
सती रहे सुखे सुखे, तापसणी रे पास ।। 3 ।।

ढाल–7

[राग:–धतूरो राचणो जी]

कलावती करती केल,
निरखतां नंदने जी ।
करती कंवर रा कोड़,
सदा रहे आणन्द में जी ।। 1 ।।

शील तणे प्रभाव,
सती लही संपदा जी ।
सहू कष्ट गयो विर लाय,
अलगी गई आपदा जी ।।शील.।। 2 ।।

तापसणी करती भगत,
जोमण ने जल तणी जी ।
फल मेवा मिष्ठान,
करे महिमा अति घणी जी ।।शील.।। 3 ।।

करे नवकारसी नित नेम,
कदे पोरसी – पारणो जी ।
कदे उपवास आंबिल ने एक टक,
व्रत पचखाण करे घणो जी ॥शील. ।4॥

सदा सामायिक करे शुद्ध,
पड़िकमणो प्रेम थी जी ।
नित नेम गुणे नवकार,
चित्त चवदे नेम थी जी ॥शील ॥ 5 ॥

सातमी ढाल मांहे एम,
राखो शील नी आमता जी ।
रिख 'रायचन्द' कहे एम,
शील थी सुख सासता जी ॥शील ॥ 6 ॥

– दोहा –

हिवे आई दोय चंडालिनी, सांभलो पृथिवी नाथ ।
ए बेई हूं बोरख्या, मैं काप्यां दोनूं हाथ ॥ 1 ॥
राय बोरखा देखने, आखर वाच्या तिण ठाम ।
राणी रो बांधव सगो, उणरो वाच्यो नाम ॥ 2 ॥
ए दोधा बन्धन बोरखा, भगत भली कर वीर ।
मैं अनरथ मोटो कियो, नृप हुवो दिल गीर ॥ 3 ॥
रोतो पड़ियो राजवी, मूर्छा गत महाराज ।
सावधान हुई चिन्तवे, मै कीनो कवण अकाज ॥ 4 ॥

ढाल-8

[राग:-कोयलो पर्वत धूंधलो]

राय राणी ने झुर रह्यो रे लाल,
प्रगट्यो पूरबलो प्रेम - हे वनिता ।
महासती तूं मोटकी रे लाल,
हिव तूं मुझ मिलसी केम-हे.।।राय.।।1।।

पापी हू पूरो थयो रे लाल,
मैं पूछ्यो नही तिणवार - हे.।
हू मत - हीणो मूरखो रे लाल,
धिरग म्हारो जमवार - हे राय. ।। 2 ।।

दुष्टि दया - बाहिरो रे लाल,
कपटी मैं करुणा न आणी काय- हे ।
मैं हत्यारो हाथ कटाविया रे लाल,
मैं पापे पीड[1] भराय - हे. राय ।। 3 ।।

राय-भणी बरजे घणा रे लाल,
पाले पुरोहित लोग हो - महाराज ।
अण विचारो थे कियो रे लाल,
अनरथ एह अजोग हो-महा. राय. ।। 4 ।।

इत मंत्री महाराजनो रे लाल,
चतुर बुद्धि - रो जाण हो-महीपत ।
आप अब झुरो मती रे लाल,
हूं राणी ने मेल सूं आण हो-म. राय ।।5।।

---

1. देह

जो राणी छे जीवती रे लाल,
तो हूं आण दिखासूं साक्षात हो- म. ।
छे जिण जाग्या सूं लावसूं रे लाल,
सो बातां एक बात हो-मही. राय. ।। 6 ।।

महीपत मन धीरप दिवी रे लाल,
राय दीनी मित्र ने सीख हो - म. ।
मित्र मोटे मंडाण सूं चालियो रे लाल,
राणी री करवा[1] ठीक हो-मही.।।राय.।।7।।

आठमी ढाल में आवियो रे लाल,
मित्र जोवतो वनवास हो- म. ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे शील थी रे लाल,
पामीजे लील विलास हो-भविकजन राय ।8

– दोहा –

मित्र मठ तिहां देखियो, मिली तापसण तेह ।
थे जोवो राणी भणी, राणी छे मुझ गेह ।। 1 ।।
पदमण पुत्र चूंगावती, दिप दिप करती देह ।
मित्र देख हर्षित भयो, जाणे दूधां वूठा मेह ।। 2 ।।

ढाल–9

[राग:- खंभायत]

वत्त मित्र राणी ने देखने रे,
पाये लागो जोड़ी हाथ ।

1. खोज

किरपा कीजे सेवग ऊपरे जी,
सांभलो म्हारी मात ।। 1 ।।

आज मनोरथ म्हारा सहू फल्या रे,
सीधा वंछित काज ।
हरख हिवे मावे नहीं जी,
रांक लियो जिम राज ।। आज. ।। 2 ।।

'जय सेण' राय खीसाणो[1] पड़्यो रे,
हिव वेग पधारो माय ।
राय अन्त तणो ओखाणो[2] लियो जी,
अब जेज करो मत काय ।।आज.।। 3 ।।

मित्र वेग वधाई मेली राय ने जी,
राय घणी वधाई दीध ।
कंवर लेई आई कलावती जी,
राय मोछव मोटो कीध ।।आज.।। 4 ।।

हाट हवेली शहर सिणगारिया जी,
सेना सहु सिणगार ।
ढोल नगारा नेजा आगला जी,
चले नाटक ना धुंकार ।।आज.।। 5 ।।

हाथी ऊपर अवल अंबाड़ी दीपती जी,
राणी बेठी कर सिणगार ।
राय सामो जाय वधाई लाविया जी,
चवड़े मध्य बाजार ।।आज.।। 6 ।।

1. शर्मिन्दा 2. नियम

दान - पुण्य राज दीधो घणो जी,
खरच्यो द्रव्य अपार ।
ओच्छव मोटो राय मंडावियोजी,
वरत्या जय - जय-कार ।।आज.।। 7 ।।

नवमी ढाल में राय राणी मिल्या,
बरत्या कुशल ने खेम ।
शील-प्रभावे मन-वंछित फल्याजी,
रिख 'रायचन्द' कहे एम ।।आज.।। 8 ।।

- दोहा -

राय दत्त मंत्र वे जणा, वीजो बहु परिवार ।
सती ने सहू खमाविया, धन धन तुम अवतार ।। 1 ।।
राय कहे राणी भणी, तूं धरमण तूं धन्न ।
निज आपो[1] कीधो ऊजलो, प्रगट थयो निज पुन्न ।। 2 ।।
मै अन्याय कियो तिको, खमजो मुझ अपराध ।
तूं सवागण सम्ली सरी, धन मानव-भव लाध ।। 3 ।।
बलगी राणी इण कहे, दोष न थारो कोय ।
ए करम न छोड़े कोय ने, सहू होण पदारथ होय ।। 4 ।।

ढाल-10

[राग:-थारे नेणां रो पाणी लागणो]

राणी कहे कर जोड़,
म्हारा मन वछित फल्या-राजाजी ।

1. आतमा

म्हारे शील तणे प्रभाव क,
बिछड़िया व्हाला मिल्या ।।रा.।। 1 ।।

म्हारा कीधा कोड़ जतन,
भगत भाव करी देवता ।। रा. ।।
म्हारे शील तणे प्रभावक,
शासन - देव सेवता ।। रा. ।। 2 ।।

वले कीधी भगत विशेष,
जोइजे ते जेतली । रा. ।।
तापसण घर में राखी,
कहीजे वली केतली ।। रा. ।। 3 ।।

शीले वडो सवाय,
पीवे रस पालता ।। रा. ।।
वल भर - जोवन में विशेष,
विषय - सुख टालता ।। रा. ।। 4 ।।

शील जठे हिज सुख,
शील जिहां सम्पदा ।। रा. ।।
शील जठे हीज लील,
अलगी रहे आपदा ।। रा. ।। 5 ।।

नहीं शील सरीखी वस्तु,
अमोलक एहली ।। रा. ।।
दोरी विरियां मांय,
आड़ी अवि जेहवी ।। रा. ।। 6 ।।

शील वड़ो वेराग,
महातप आकरो ।। रा. ।।
शीलवन्त आगे सिंह,
हुय जावे बाकरो ।। रा. ।। 7 ।।

हिवे राजा करे बखाण,
भली तूं कामणी ।।राणीजी।।
सतवन्ती शीलवन्ती री होड,
करे कुण भाभणी ।। रा. ।। 8 ।।

कंचन लागे काट,
धरती मांहे जे धरे । रा. ।।
शीलवन्ती राणी अमोल,
ज्यांरी सुर सेवा करे ।। रा. ।। 9 ।।

शीलवन्ती री सहाय,
करे देवी देवता ।। रा. ।।
शीलवन्ती ने करे सलाम,
अनधड़[1] नर जे हता ।। रा. ।।10।।

चोथे[2] वरते घणो समास,
कह्यो जावे केतलो ।। रा. ।।
तो पिण मण में पीस्यो पाव,
कह्यो मै जेतलो ।। राज. ।। 11 ।।

सर्व शील सूं सुधरे काज,
पावे राज मुगत रो ।। रा. ।।

---

1. मिथ्यात्वी 2. ब्रह्मचर्य

रिख 'रायचन्दजी' वखाण्यो शील,
दशमी ढाल जुगत रो ।। रा. ।। 12 ।।

– दोहा –

राय - राणी बेहु जणा, जिण धरम केरा जाण ।
सुख भोगवे ससार ना, पूरब पुण्य प्रमाण ।। 1 ।।

तिण काले न तिण समे, साध अनेक परिवार ।
धर्म सूरी समो सर्या, चऊनाणी अणगार ।। 2 ।।

वन - पालक राजा भणी, वेग वधाई दीध ।
सांभल राय हर्षित थयो, जाणे अमृत पीध ।। 3 ।।

दीधी घणी वधावणी, राय राणी कर सिणगार ।
विधि सूं वंदन कर बेहुं, बैठा सभा मझार ।। 4 ।।

दीनी धर्म नी देशना, भली भांत मुनिराय ।
कलावती बैठी कने, बात पूछे शीश नमाय ।। 5 ।।

मैं म्हारी राणी तणा, किण कर काटया हाथ ।
ए संशय मोठो साधजी, कहो पूरब भवनी बात ।। 6 ।।
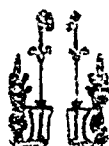
ढाल–11

[राग.–वीर सुणो मोरी विनती]

पूर्व माह विदेह मे, 'महाद्रइ' नगरी अभिराय ।
'सिंह' नरपति तिहां राजियो, पट-राणी हो 'त्रिलोचना' नाम ।

पूरब भव जानी गुरु ज्ञानी कहे,
मन पर्यव हो मुनिवर ने ज्ञान ।
'शंख' नरेसर सांभलो,
चित्त देह दोनूं कान ।।पूरब. । 2 ।।

रायनी पुत्री हो मुलोचना,
कचन-वरणी हो कंवरी रूड़े रूप ।
वले समकित - धारी श्राविका,
चित्त मांहे चतुराई-चूंप ।।पूरब. । 3 ।।

एक रायने आयो सुवटो,
राय दीधो हो कवरी रे हाथ ।
सुवो लागे कवरी ने सुहावणो,
दिल वसियो हो सुवो दिन-रात ।।पूरब.।।4।।

एक पलक सुवा विना ना सरे,
रूड़ी तरे हो राखे दिन-रात ।
पंखी सूं प्रीत वंधी घणी,
मोहणी नी हो कांई अचिरज वात ।पू.।5।

अरिहन्त आय समोसर्या,
पर - उपगारी हो प्रभूजी बाग ।

सुलोचना सुवो साथे लेई,
प्रभुजी ने वांधा हो मन धरती राग ।।पूरव ।।6।।

कवरी साहव री सेवा करे,
अरिहन्त आगे हो ऊभी कर जोड़ ।
सूवो सायव ने देखे रह्यो,
पंखी ने हो प्रभुजी रो कोड़ ।।पूरव.।। 7 ।।

समोसरण मे ऊपनो,
पंखी ने हो जाति समरण ज्ञान ।
हूं पिछले भव में साधु हुतो
मैं महाव्रत हो ले भाग्या अज्ञान ।।पूरब.।।8।।

हूं पाप उदय पखी हुवो,
मैं मूरख हो गमायो माल ।
अठे सम दृष्टी सूवो हुवो,
श्रावकना हो व्रत लीधा फाल ।।पूरब. ।9।।

ए ढाल थई इग्यारमी,
रिख 'रायचन्द' कहे एम ।
सुलोचना ने सूवा तणो,
आगे सुणजो हो चरित चाले केम ।।पूरब।।10।।

:: दोहा ::

श्री जिनवरजी तणी, वाणी सुण राज कुंवार ।
सुवे ने साथे लेकरो, आई निज-भवन मझार ।। 1 ।।
सुवे अभिग्रह लीयो एहवो, दरसण रो नित मेव ।
ए मन में निश्चय कियो, सारूं अरिहंत सेव ।। 2 ।।

ढाल–12

[राग :– पारस नाथ नो]

दूजे दिन ऊगते सूर,
सूवो आयो जिणजी-हजूर-हो जिनेसर।
तो दरसण री बलिहार,
हूं वारी वार हजार - हो. ।। 1 ।।

अमृत सूं अधिको मीठो,
मैं नीठ नीठ नेणा दीठो-हो ।
आंख्या अमीं[1] मुझ पेठो,
सुवो सनमुख जा बेठो-हो. ।। 2 ।।

सूवो शाहब ने निरखे,
जोय जोय हिवड़े हरखे-हो. ।
महारो धन दिहाड़ो आज,
महारा सरिया वांछित काज-हो. ।। 3 ।।

मैं चरण तुम्हारा भेट्या,
मै भव-भव ना दुख मेट्या हो. ।
मने मुगत दायक गुरु मिलिया,
म्हारा मन रा मनोरथ फलिया-हो.।।4।।

ए बारमी ढाल थई पूरी,
पिण बात रही छे अधूरी ।
इम भणे रिख 'रायचन्द'
आगे सुणजो सहू सम्बन्ध-हो. ।5 ।।

1. अमृत

ढाल–13

[राग :– दियलो मानव म कांह तरे]

'सुलोचना' सूवो न देखियो,
कंपरा लागी देह रे-सु. ।
मूर्छागत कंवरी पड़ी,
तूं कांई दीधो मने छेह रे ।।सु.।। 1 ।।

तो विरा मने न आवडे,
तूं मुझ प्राण-आधार रे-सु. ।
सुवाने लावा भरणी,
नोकर भेज्या विन पार रे-सु. ।। 2 ।।

प्रभुजी सू पाछो आवतो,
सूवो मारग मांय रे-सु. ।
पकड़ियो मारग - मांयके,
दीधो कुंवरी ने आय रे ।।सु.।। 3 ।।

सुलोचना कहे सुवो भरणी,
तूं उड़ गयो किम आकाश रे-सु. ।
तूं मोसू मोह न राखियो,
तूं निरमो ही गयो नाश[1] रे ।।सु.।।4।।

कुंवरी चढी घरणी कोप में,
कहे माठा[2] थारा भाग रे-सु. ।
मत हीरणो तूं मूरखो,
तूं तो पांखा खोसरण लाग रे ।।सु.।। 5 ।।

---

1. भगना 2. खराब

सुवो गयो ज्ञानी कने,
पिण पखी सूं कह्यो नहीं जाय रे-सु. ।
तूं पापी वले परो जावसी,
कवरी भरी घणी रीस मांय रे ।सु.।6।

कुपत कंवरी ने ऊपनी,
सुवानी खोस लीनी पख सार रे-सु. ।
अज्ञानी वश कुंवरी कियो,
एह अकारज अपार रे ।। सु. ।। 7 ।।

सुवानी पाखा गई,
ए तेरमी ढाल अधिकार रे-सु. ।
रिख 'रायचन्द' कहे सांभलो,
आगलो विसतार रे ।। सु. ।। 8 ।।

ढाल–14

[हूं नित लीपट ना]

पंखी नी खोसी पांख,
सुवो होय गयो रांक-आच्छे लाल ।
वेदन व्यापी शरीर में ऐ ।। 1 ।।

उपनो दुख असराल,
जाणे आण पहुंतो काल-आ. ।
सुवे मन द्वेष न आणियो ए ।। 2 ।

जेवि वीती जोय,
कंवरी नो दोष न कोय-आ. ।
हूं माइरा कर्म निज भोगवूं ए ।। 3 ।।

सुवे　किधौ　संथार,
　　जाव　जीव　चउविहार-आ.।
　　　　संथारो पांच दिवस रो आवियो ए ।। 4 ।।

पछे सूवे कीनो काल,
　　धरतो ध्यान रसाल - आ.।
　　　　पहले देव लोक ऊपनो ए ।। 5 ।।

सुलोचन　परण　तेह,
　　कष्ट कर त्यागी देह आ.।
　　　　हुई देवांगणा तेहनी ए ।। 6 ।।

देवता सुवा नो जी,
　　सुलोचना देवी अतीव - आ.।
　　　　साथे ही रया भव पाछले ए ।। 7 ।।

सूवा नो जीव जे थाय,
　　तुम्हें हुवा शंख राय - आ.।
　　　　सुलोचना हुई कलावती ए ।। 8 ।।

पांखा खोसी ते पाप,
　　इण करसे कर दिया काप-आ.।
　　　　ए पूरब भव कह्यो ज्ञानी मुनि ए ।। 9 ।।

कदेई कर्म न छोडे कोय,
　　राय राणी चितवे दोय-आ.।
　　　　एक सार धर्म संसार में ए ।।10।।

राय राणी धरता ध्यान,
　　ऊपनो जाति समरण ज्ञान.।
　　　　सुणियो[1] ते पिण देखियो ए ।।11।।

---

1. मुनि से सुन वैसा ही देख"

ए थई चवदमी ढाल,

रिख रायचन्दजी कहे रसाल-भ्रा. ।

सांभलतां सुख उपजे ए ॥12॥

ढाल–15

[राग : पुर की]

वैरागे मन वालियोजी,
जाति समरण जोग ।
'शंख' राय कलावतीजी,
जाणी जहर जिम भोग ।
पुनीसर मैं लेसां संजम भार,
मैं राचां नहीं इण संसार मा जी ।
ए संसार असार ॥पु.॥ 1 ॥

राज पुत्र ने थापनेजी,
दीक्षा लीधी मोटे मडाण-पु. ।
माहतां रो महोच्छव कियोजी,
कुंवर चतुर सुजाण ॥ पु. ॥ 2 ॥

काल कितोई वितावियोजी,
करी घणो उपगार - पु. ।
कलावती सुध साधवीजी,
व्रत पाले निरतिचार ॥ पु. ॥ 3 ॥

अन्त समय अणसण कियोजी,
संथारो चउ विहार ।

दोनों दोय सागर रे आउखेजी,
ऊपना पहले स्वर्ग मझार ।।पु.।। 4 ।।

दोनूं हुवा देवताजी,
जिहां नाटक रा धुकारे ।
सदा काल सुख भोगवेजी,
पूरब पुण्य प्रकार ।। पु. ।। 5 ।।

ए पनरमी ढाल पूरी थईजी,
रिख रायचन्दजी इम भाख ।
आगे सोलमी ढाल सांभलोजी,
चित्त ठिकाने राख ।। पु. ।। 6 ।।

ढाल–16

(राग :– परहरी नगर बारणे)

दोनूं ही ए देवताजी,
महा विदेह मझार ।
विजय वली लीलावतीजी,
लेसी उत्तम कुल अवतार ।।
भव जिण धर्म सखाई रे ।। 1 ।।

भर जोवन पाम्यां पछेजी,
सुणसी धर्म विचार ।
वैरागे मन वालनेजी,
लेसी संजम भार ।। म. ।। 2 ।।

कर्म खपाय हुसी केवलीजी,
धरती शील सन्तोष ।

'शंख' ने 'कलावती' जी,
दोनूं इण विध जासी मोक्ष ।।म.।। 3 ।।

ए शील ऊपर सहु चालियोजी,
इतरो ए अधिकार ।
शील पालेजे निरमलोजी,
धन तेहनो अवतार ।। म. ।। 4 ।।

सती हुई कलावतीजी,
तिण पाल्यो शील उदार ।
मैं कथा अनुसारे भाखियोजी,
भली तरे विसतार ।। म. ।। 5 ।।

ए कलावती नी चोपाईजी,
हुई संपूरण सोलह ढाल ।
शील थकी सुख सासताजी,
वरते वले मंगल - माल ।। म. ।। 6 ।।

जे कोई अन्यथा आवियोजी,
वले अधिको ओछो होय ।
तेहनो मिच्छामि दुक्कडजी,
मुझने दोष नहीं छे कोय ।। म. ।। 7 ।।

सोलमी ढाल सुहावणीजी,
सुणतां वाधे प्रेम ।
पूज्य जयमलजी रे प्रसादथीजी,
रिख रायचन्द भणे एम ।। म. ।। 8 ।।

संवत अठारे सेंतीस में जी,
कियो आसोज मास अभ्यास ।
प्रसिद्ध पांचम चानणीजी,
मेडते नगर चौमास ।। म. ।। 9 ।।

जिन-रक्षित – जिन-पाल

– दोहा –

अनन्त चउवीसी आगे हुई, वले अनन्ती जाण ।
पराक्रम ज्यांका अति घणा, मीठी प्रभुजी की वाण ।। 1 ।।

पाप अठारे अति बुरा, परिग्रह महा - विकराल[1] ।
प्रीत मित्राई नां गिणे, सगला गुण दे गाल[2] ।। 2 ।।

दुखरो दाता[3] परिग्रहो, मोटो माया - जाल ।
दोनूं भायीं दुःख सह्या, जिन - रक्षित जिन - पाल ।। 3 ।।

घर में धन छे सामठो, तो हि न पूगी हाम[4] ।
पच[5] रह्यो छे प्राणियो, किम पावे शिव-पुर - ठाम ।। 4 ।।

किण नगरी वसता हुता, किम दुख सह्या अपार ।
सावधान थई सांभलो, तेह नो कहूँ विस्तार ।। 5 ।।

---

1. भयानक 2. नष्ट 3. देने वाला 4 इच्छा 5. अधिक श्रम

ढाल-1

[राग:- चंद्रगुप्त राजा सुणो]

चंपा नगरी सुहावणी,
दीठां हर्षित थायो रे ।
लोक बहु सुखिया वसे,
सेठ घणां तिण मांयो रे ।।
धन कारे लोभी प्राणिया ।। 1 ।।

सेठ 'माकंदी' का डीकरा[1],
दोनू बडा व्यापारी रे ।।
नावा ले समुद्र - मधो,
उतर्या[2] बार इग्यारी[3] रे ।। धन. ।। 2 ।।

लाभ कमावी ने लाविया,
माल अमांगा[4] भारी रे ।
लोभ न मिटियो मांहिलो,
बारमी बार दुवा त्यारी रे ।। धन. ।। 3 ।।

आय मात - पिता ने इम कहे,
मैं तो वले जास्यां व्योपारो रे ।
मात - पिता वलता कहे,
भली नहीं बारमी वारो रे ।। धन. ।। 4 ।।

धन संच्यो छे सामठो,
यो कहे लागे लेखे रे ।

1. पुत्र 2. सागर पार गये 3. ग्यारवीं दफा 4. अमूल्य

सात पीढ्या लग ना निठे[1],
अणूता[2] दुख कुण देखे रे ।। धन. ।। 5 ।।

मात तात बरज्या घणा,
तोही न रह्या पाल्या[3] रे ।
सोदो[4] लेई तिथ[5] जोय[6] ने,
समुद्र मांहे चाल्या रे ।। धन. ।। 6 ।।

अनेक जोतन जातां थकां,
ऊठी तिहां उलका[7] पाली रे ।
देखी ने डरय्या घणा,
रखे कटेला घातो रे ।। धन ।। 7 ।।

अकाले गाज ने बीजली,
लावा कपका लागी रे ।
पायरा सूं हेठी पड़ी,
केहक लकड़या भागी[8] रे ।। धन. ।। 8 ।।

जिय विद्या धनू की डीकरी,
विद्या विसर पछतावे रे ।
गरुड़ देखी वासंग[9] ते,
डरतो बिल मांहे जावे रे ।। धन ।। 9 ।।

हा - हा - हा कार हुवो तिहां,
एक पारियो हाथे आयो रे ।
बीजा तो सहू को पड़या,
दोनूं भाई तिरिया[10] जायो रे ।।धन.।। 10 ।।

1. खतम 2. निरर्थक 3. मना करने पर भी 4. माल 5. शुभ समय 6. देखकर 7. बिजली 8. टूट गई 9. सर्प 10 तैरते हुए ।

रत्न - दीप आया तिहाँ,
मन - मांग्या फल खाया रे।
नालेर भांग तेल काढ ने,
खोकर बेठा छाया रे ॥ धन ॥ 11 ॥

नावा तणो विस्तार छे,
सूत्र ज्ञाता के मांयो रे।
हाण पुणिया जीवड़ा,
ज्या ने साधु सूझे नांयो रे ॥ धन. 12 ॥

— दोहा —

'रयणा' देवी तिण अवसरे, वसे तिण दीप मझार।
पाप करी हर्षित हुवे, सुंदर ते मुखकार ॥ 1 ॥

तीन भवन सुख भोगवे, रही विषय में लाग।
महिलायत रलिया - वणा, चारूं कानी वाग ॥ 2 ॥

दोनूं भाई चिंता करे, पूर्व वात चितार।
आर्त ध्यान धरतां थकां, देवी आई तिणवार ॥ 3 ॥

खड़ग तेह ने हाथ में, कीधो कोप करूर।
आंख्यां राती जल हने, भूंडो दीसे नूर[1] ॥ 4 ॥

रे माकंदी[2] रा डोकरा[3], वचन कहूं निरधार।
थे मांसू सुख भोगवो, नहीं तर जीव काया करूं न्यार ॥ 5 ॥

मान्यो वचन देवी तणो, ले चाली आवास[4]।
अशुभ पुद्गल काढ ने, भोगवे भोग विलास ॥ 6 ॥

---

1. तेज 2. चण्डाल 3. पुत्र 4. अपने भवन

नित्य अमृत - फल भोगते, नित नित नवज्ञावेश ।
काल किताहक नीसर्यो, आयो इन्द्र तणों आदेश ।। 7 ।।

ढाल–2

[राग:–नायका नी]

हाथ जोड़ी ने इम कहे रे,
सांभलजो मोरी बाय रे-बालम मोरा.।
इन्द्र - हुकम फुरमावियो रे लाल,
हूं समुद्र - बु हारण जाय रे ।। बा. ।। 1 ।।

मुझ वीनतडी अवधार जो रे लाल,
'रयणा' तणो आवास रे - बा. ।
दोनूं भाई मन - रग सूं रे लाल,
रखे यथा-वो उदास रे ।। बा. मुझ. ।। 2 ।।

जो थांने नहीं - आवडे[1] रे लाल,
तो जायजो पूरब के बाग रे-बा. ।
मन-मान्या फल खावजो रे लाल,
थे कीजो मन - रंग - राग रे ।। बा. ।। मुझ. ।।

मन-रुचे ते फल खावजो रे लाल,
करजो सकल सिणगार रे ।
ते फल खाधां पछे रे लाल,
जागसी विषय - विकार रे ।। बा. ।। मुझ. ।।

चंपा मरवा नें केवड़ा रे लाल,
पूरब बाग मझार रे - बा. ।

1. मन का नहीं लगना।

काम - दीपायण एह छे रे लाल,
मनसा पूरण - हार रे ।। बा मुझ. ।। 5 ।।

वाव[1] घणी जिण बाग में रे लाल,
सरोवर घणा बखाण रे - बा. ।
डेडक मोरिया ने कोयली रे लाल,
बोले छे मधुरी वाण रे ।। बा. मुझ. । 6 ।।

इण वाग मां नहीं आवड़े रे लाल,
तो बाग उत्तर के जायरे - बा. ।
शरद हेय रितु भोगवो रे लाल,
मन-मान्या फल खाय रे ।। बा. मुझ. ।। 7 ।।

वले य पच्छिम को बाग छे रे लाल,
बसंत ग्रीष्म-फल दोय रे - बा. ।
क्रीड़ा करजो मन-रली रे लाल,
पण दक्षिण बाग म[2] जोय रे ।। बा. मुझ. ।। 8 ।।

तिण मां सर्व छे मोटका रे लाल,
चंड रुद्र काला नेण रे - बा. ।
रखे[3]हणे जो तुम भणी रे लाल,
हूँ छूं थांकी सेण रे ।। बा. मुझ. ।। 9 ।।

वेरी दुसमण ने हुवे रे लाल,
तिणरी न राखूं काण रे - बा. ।
तिण कारण मैं पहली पालियो[4] रे लाल ।
रखे हणे थांरा प्राण रे ।। बा. मुझ. ।। 10 ।।

---

1. हवा 2. नही 3. मारना 4. मना किया

ए तीनों ही बाग में रे लाल,
सदा-काल गह - घाट रे - ग ।
सुख-साता घणी पायजो रे लाल,
जोयजो थे म्हारी वाट[1] रे ।। बा. मुझ. ।। 11 ।।

इम सिखावण दे खरी[2] रे लाल,
कही ने बारं वार रे - बा. ।
रयणा देवी हसड़ो कही रे लाल,
चित्त मां निश्चय धार रे ।। बा. मुझ. ।। 12 ।।

- दोहा -

बेऊं भाई मतो[3] कियो, हिवड़े सोच अथाग ।
किण कारण इण पालिया[4], आंपे चालो दिक्खण बाग ।। 1 ।।

तिण अवसर आया तिहां, दिक्खण बाग मझार ।
हिवे अचिरज सूं थयो, ते सुणजो नर - नार ।। 2 ।।

तिण मां दुर्गंध अति घणी हाड घणा तिण मांय ।
एक सूली - पुरुषज देखने, संठण[5] ढीला थाय ।। 3 ।।

किण नगरी वसलों हुतों, किण वश पड़ियो आय ।
किसु अन्यायज ते कियो, तोने सूली दियो चढाय ।। 4 ।।

हूं काकंदी को वाणियो, घोड़ा बेचण जाय ।
जहाज डूबी हूं नीकल्यो, इण देवी के वश पड्यो आय ।। 5 ।।

संसार का सुख भोगतां, काल कितोयक जाय ।
थे इणरे पाने पड़्या, तरे मोने सूली दियो चढाय ।। 6 ।।

---

1. रास्ता 2. सच्ची 3. विचार करके 4. मना किया 5. शरीर

जो जावो 'चरणा' भरणी, तो बाग पूर्व के जाय ।
सेलग यक्ष पग झालज्यो, थाने देसी घरे पहुंचाय ॥ 7 ॥

ढाल–3

[राग:– बिच्छिया नी]

एतो दोनूं डरप्या अति घणा,
आतो भलीय न दीसे नार रे लाला ।
आंपा तणो जाणो मती,
खे किण ही कुमीचा[1] मार रे लाला ॥
नारी को नेह निवार जो ॥ 1 ॥

एतो आया पूरव ला बाग मां,
यक्ष आयो ते तिण वार रे लाला ।
किण ने तारूं इहां थकी,
किण ने उतारूं पार रे लाला ॥ नारी. ॥ 2 ॥

एतो हाथ जोड़ी ने इम कहे,
मैं तो दोनूं दुखिया अपार रे लाला ।
कृपा करो मां ऊपरे,
अबलां[2] ने पार उतार रे लाला ॥ नारी ॥ 3 ॥

थे तो देवी रो मोह मत आणजो,
माहरे खांधे बैसो आय रे लाला ।
जो मनड़ो लूखो हूं जाणसूं,
तो नांख देसूं तिण ठाय रे लाला ॥ नारी ॥ 4 ॥

---

1. कुमौत 2. बल हीनो को

एतो धीरप देई ने चालिया,
देवी आय गई तिण वार रे लाला।
हाथ मां खड़ग डरावणो,
मुख बोले मारूं मार रे लाला। नारी. ।। 5 ।।

एतो कठण वचन कह्या घणा,
तोही चलिया नहीं लिगार ने लाला।
तब सिणगार सोले किया,
गुंघटो काढ्यो तिण वार रे लाल ।। नारी ।। 6 ।।

आतो वचन विषय रा इम कहे,
मोने कांय मूको निराधार रे कंता ?
इण अटवी मां हूँ एकली,
मोने किण तणो आधार रे कंता !
अबला के सामो जोयजो ।। 7 ।।

थे तो कांय मांसूं लूखा[1] थया,
माहरो हिवडो फाटो जाय रे कंता।
थे सुख भोगविया मुझ थकी,
इण किम छेह दिखाय रे कंता ।। अबला. ।। 8 ।।

एतो वचन विषय रा सांभली,
'जिन-रक्षित' यों डिगियो जाण रे लाल।
भायां मां भेद घलावणी,
हमें किण विध बोले वाण रे लाला ।। नारी. ।। 9 ।।

ओतो 'जिन-पालित' यों कठोर छे,
इण रे दया नहीं दिल मांय रे कंता !

1. निष्द्रोही

'जिन-रक्षित' ! तूं माहरा बाल हा,
माहरी करूणा दिल मां लाय रे कंता ।।अबला.।10।

गण-गणार[1] किया घणा,
एकर[2] सूं सामो न्हाल[3] रे कंता !
वचन कही ने मोहियो
जिन-रक्षित ये दीनो भाल रे लाला ।। नारी. ।। 11 ।।

यक्ष अवधिकटी ने देखियो,
'जिन-रक्षित' यों जोयो तिण वार रे लाला ।
ततक्षण हेठो नांखियो,
ऊतो बूडो काली धार रे लाला ।। नारी. ।। 12 ।।

आ तो अंतर द्वेप रूदन करी,
आक्रंद करे अपार रे लाला ।
आतो विषय दृष्टि जोती थकी,
देखूं थांको उणीहार रे लाला ।। नारी. ।। 13 ।।

आतो फुलां तणी वर्षा करी,
वली गंध चूरण वरसाय रे लाला ।
'रतन-घटा' बजाय ने,
इण बातां लाज न आयरे लाला ।। नारी. ।। 14 ।।

आ तो आई तिहां उतावली,
लीधो तिण ने उठाया रे लाल ।
त्रिसूल मां पोय ने,
दसो दिस दियो उडाय रे लाला ।। नारी ।। 15 ।।

---

1. ठुनके 2. एक वार 3. देख

– दोहा –

मन डुलियो यक्ष जाणियो, उत्तर दियो तिण वार ।
देवी आई उतावली, वचन कह्या निरधार ॥ 1 ॥

क्रोध करी ने मारियो, खंडो - खड कराय ।
चारूं दिशा उछाल ने, मनमां हर्षित थाय ॥ 2 ॥

जिन - रक्षित 'यों' दुखियो थयो, जोयां रा फल जाण ।
चपा नगरी पोहतो नहीं, विचमां छांड्या[1] प्राण ॥ 3 ॥

वैरागे घर छोड़ने, विषयां सामो जोय ।
शिव-नगरी पहुंचे नहीं, विचमां कालज होय ॥ 4 ॥

रयणा देवी-तिम कामणी, यक्ष-जिम अणगार ।
विषय-रस डोले[2] नहीं, ते उतरे भव-जल पार ॥ 5 ॥

ढाल—4

[राग :– यत्तनी]

जिन पाल ज मनमां धारी,
आ तो कपटण दीसे नारी ।
इण पूर्वलो मोह न आंण्या,
इण रो काचो सगपण[3] जाण्यो ॥ 1 ॥

यक्ष ऊपर निश्चय धार्यो,
चंपा के बाग उतार्यो ।

---

1. छोड़ा 2. अस्थिर 3. सम्बन्ध

'जिन-पाल' रो कारज सार्यो,
समुद्र थी पार उतार्यो ।। 2 ।।

पोता को नगरी आयो,
सगलों ई विरतत सुणायो ।
'जिन-रक्षित' रो सोचज कीयो,
जाणे फूटण लागो हीयो ।। 3 ।।

जिन रक्षित रो कारज कीनो,
संसार - दुखां थी बीनो[1] ।
इतरे वीर चंपा आया,
सगलां के मन सुहाया ।। 4 ।।

लोक परिषदा वांदण चाली,
मन धरता हरस खुश्याली ।
'जिन-पाल' पण वादण आयो,
धर्म देशना दीवी जिण-रायो ।। 5 ।।

जिण पाल सुणी वैराग्यो,
मन शिव-रमणी सू लाग्यो ।
संयम लीधो मन रंगे,
सूत्र भणियो इग्यारे अंगे ।। 6 ।।

खम सम दम कीवी किरिया,
सुधर्म देव लोगे अवतरिया ।
तप जप करने काया सोख,
महाविदेह क्षेत्र में जासी मोख ।। 7 ।।

1. डरा

इम संसार सूं जे नर डरसी,
तेहना घणा कारज सरसी ।
रिख 'रायचन्दजी' इम भाखी,
श्री जिन-वचन छे साखी ॥ 8 ॥

卐 उसरावण 卐

(ऋण-मुक्ति)

– दोहा –

अरिहन्त सिद्ध ने आपरिया, उवज्भाया अणगार ।
पांच पद प्रणमी करो, कहो सुं उसरावण[1] उद्धार ॥ 1 ॥
उसरावण तीन जणा हुवे, सेणा तिके सुविनीत ।
जस पिण पामे जगत में, जावे जमारो जीत ॥ 2 ॥

ढाल–1

[राग :— वैरागी ने रागी हो]

तीजा अंग ने ठाणे तीसरे रे,
जिहां रची रूड़ो रीत ।
तीन जणां सूं ऊरण दोहिलो रे,
ते सुणजो सुविनीत ॥ 1 ॥

1. उत्तीर्ण

मात-पिता सूं ऊरण दोहिलो रे,
पहिला ए अधिकार ।
पुत्र हुवे कोई पुण्य को धणी रे,
तिको मातां सूं करे उपगार ।।मात.।। 2 ।।

नित प्रभाते पुत्र ऊठने रे,
प्रणमे मात-पिता का पाय ।
कर जोडी ने आगे ऊभो रहे रे,
भली भगती करे चित्त लाय ।।मात.।। 3 ।।

सखरे बाजारे ऊपर बेसाणने रे,
सो सहस्र[1] - पाक तेल ।
मर्दन करावे माइतां के डीलरे[2] रे,
वले चोवा चन्दन चंपेल ।। मात. ।। 4 ।।

सुगन्ध अटालना उवटणा करे रे,
जब जीव पामें आराम ।
पछे सिनान करावे जल तीन सूं रे,
एह सपूतां रा काम ।। मात ।। 5 ।।

पछे वस्त्र पहिरावे भारी मोलका रे,
नवा मांगलीक मांहे वास ।
गहणा पहरावे सोवन जड़ावका रे,
सहू प्रगटे मन की आस ।। मात. ।। 6 ।।

वले मन गमता भोजन भल भला रे,
ताजा तुरत तयार ।

1. सौ दवाइयो से बना हुआ शत: पाक और हजार दवाइयों से बना हुआ हुआ सहस्र पाक तेल कहलाता है । 2. शरीर

आछी ताजी तुरत तरकारियां रे,
भोजन छतीस प्रकार ।। मात ।। 7 ।।

मेवा ने मिठाई मनमें भावती रे,
सीयाला ना उष्ण आहार ।
मिसरी ओला माही इलायची रे,
ऊनाले ना पावे ठंडकार ।। मात. ।। 8 ।।

वरसाले ना भोजन अति भला रे,
फरका चटका आहार ।
जीमावे वले मावियां उडाने रे,
बेटो करे मातांरी सार ।।मात.।। 9 ।।

लूंग जायफल ने वले इलायची रे,
मुंछण सरस अतीव ।
मात-पिता के चरणां री चाकरी रे,
बेटा करे जाव-जीव ।। मात. ।।10।।

कावड़ मांहे वेसाणे तात ने रे,
कांवे चढावो वहे वाट ।
तो पिण उसरावण सुत ना हुवे रे,
ऐसो सूत्र नो पाठ ।। मात. ।।11।।

रिख 'रायचन्दजी' कहे पूरबली भगत सूं रे,
पण उसरावण नहीं होय ।
हिवे उसरावण वेटो किम हुवे रे,
ते सांभल जो सहू कोय ।। मात. ।।12।।

-- दोहा --

सोही उसरावण नहीं हुवो, केवली भाख्यो एम ।
किण विध उरण हुवे तात सूं, सुणतां वाधे प्रेम ।। 1 ।।

ढाल--2

[राग:- अल वेल्या ना गीत नी]

पुत्र हुवे सेणों समकिती रे लाल,
मिथ्याती तात माय-सुत सुहावणा रे।
माइतांने हेत जुगत सूं रे लाल,
चाले जिन-मारग के मांय ।। सुत. ।। 1 ।।

इम बेटो उरण हुवे रे लाल,
मेले माता ने मोख - सुत. ।
भव-भव ना दुख दूरे करे रे लाल,
ज्यां के सदा रहे संतोष ।। सुत.इम. ।। 2 ।।

सामायिक पोसा को साज दे रे लाल,
पड़िकमणो आथण[1] प्रभात - सुत. ।
करो देशावकाशिक भावसूं रे लाल,
आरंभ कीम करो वात - सुत. ।: इम. ।। 3 ।।

गीतार्थ सद गुरु तणा रे लाल,
सुणों थे सखरा वखाण - सुत. ।
भजन करो भगवंत नो रे लाल,
ए शिव पुर का डाण[2] ।। सुत.इम. ।। 4 ।।

साधु ने साधवी भणी रे लाल,
दो चवदे प्रकार नो दान - सुत. ।
ल्यो लावो लिछमी तणो रे लाल,
ज्यूं पायो सुख प्रधान ।। सुत. इम. ।। 5 ।।

---

1. शाम का 2. दाव

थे सेवा करो सत गुरु तणी रे लाल,
लो नवकरवाली नो नाम - सुत. ।
थे व्रत वालो भली तरे रे लाल,
जिम पामो अविचल ठांम ।।सुत.इम ।। 6।।

समकित मां सेंठा करे रे लाल,
माइतां ने चतुर सुजाण - सुत. ।
डिगाया यण ना डिगे रे लाल,
जो देव चलावे आण ।। सुत. इम. ।। 7 ।।

साज[1] देवे संथारा तणो रे लाल,
माहतां नो देखी अंत काल - सुत. ।
श्रीकार सुखां मांहे मेलवे रे लाल,
जठे बरते मगल - माल ।। सुत. इम. ।। 8 ।।

माहतां ने मोख[2]-गामी करे रे लाल,
सुत तिके सुविनीत - सुत ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे ऊरण हुवे रे लाल,
पुत्र पाली माहतां सूं प्रीत ।।सुत.इम.।। 9 ।।

- - दोहा - -

बाप सूं बेटो उरण हुवो, इम भाख्यो वर्द्धमान ।
सेठ ने गुमासता तणो, सुणजो थई सावधान ।। 1 ।।

1. सहयोग 2. मोक्ष

ढाल-3

(राग:- वे वे तो मुनिवर ! वहरण पांगुरिया रे)

कोई पुरुष हुवे पुन्य को धणी रे,
मोटो धन रो धणी धनवन्त रे।
पुजनीक पुरुष हुवे संसार में रे,
जगतमांहे घणो जसवंत रे ।। 1 ।।

सेठ सूं सेवग ऊरण किम हुवे रे,
भाख गया तीरथना नाथ रे।
चित्त लगाय चतुर नर सांभलो रे,
बीच में म करो कांई वात रे ।।सेठ.।।2।।

कोइक पुरुष हुतो दालिदरी[1] रे,
भेटया जिण भारी मिनख[2] रा पाय रे।
दोलतवंत तिण ने कर दियो रे,
वधावण[3] में पाछ न राखी काय रे ।।सेठ.।।3।।

सेवग रे वधी घणी सम्पदा रे,
धन-धान सूं भरिया भंडार रे।
किरोड़ी[4] धज बाजे धन रो धणी रे,
भारी पड़ियो तिण रो विसतार रे ।।सेठ.।4।।

एकदा किणहीक अवसरे रे,
शाह रे सकड़ाई घणी आय रे।
खरचो लूट[5] सेठ खाली हुवो रे,
तब सेठ सेवग-घरे गयो चलाय रे ।।सेठ.।।5।।

---

1. दरिद्री 2. श्री मन्त के 3. बढ़ाने में 4. कोटि ध्वज 5. खत्म

सेठ ने दीठा घरे आवता रे,
तरे सेवग सामो गयो चलाय रे।
भलाई पधार्या माहरे आंगणे रे,
मन्दिरे विराजो तकियो लगाय रे ।।सेठ.।।

वागो पहरायो भारी सेठ ने रे,
ओकार सिरे पेच ने बांधा वाग रे।
मोती कंठा कंठी हिये फब[1] रया रे,
तुररा जंवारात जरी अथाग रे ।।सेठ.।।7।।

सेठ री आगत-स्वागत अति करी रे,
पोता नो सूप दियो सहू धन रे।
दालिद्र दूर कर दियो सहू धन रे,
सेठजी को मगन हूय गयो मन रे ।।सेठ.।।8।।

सेठजी रो घर सेठो कर दियो रे,
सगलाई पाछा बांध दिया सूत रे।
कर जोडी ने सेवग इम कहे रे,
हूं तो आपरो हुकमी[2] किंकर-भूत रे ।।सेठ ।।9।।

इसड़ी भगत कीधी सेवग सेठ की रे,
तो पण ऊरण हुवो नांह रे।
रिख 'रायचन्दजी' इम भणे रे,
एतो चाली छे सूत्र मांहरे ।। सेठ. ।।10।।

--- दोहा ---

इसो गुण कियो सेठ सूं, घर-सम्पद दीवी सूंप।
पिण उसरावण ना थयो, हुवे ते सुणो धर चूंप ।। 1 ।।

1. सुशोभित 2. दास

ढाल–4

(राग:- करम परीक्षा-करण कुमर चाल्यो रे)

केवली - भाषित धर्म मुगती रे,
शिव - सुख नो दातार ।
सेठ ने धर्म मांहे सेंठो करे रे,
उचरावे[1] व्रत बार ॥ 1 ॥

सेवग इम ऊरण हुवे सेठ सूं रे,
करे सेठ ने धरम को जाण ।
रंग चढावे रूड़ो धर्म नो रे,
वले नेड़ी करे निर्वाण ॥ सेवग. ॥ 2 ॥

सामायिक सिखावे शाहने रे,
वले पड़िकमणो पचखाण ।
चाल सिखावे चवदे नियम की रे,
सुणावे सदा बखाण ॥ सेवग. ॥ 3 ॥

जीमण - वेला भवावे भावना रे,
असनादिक शुद्ध आहार ।
मन गमतो जुगतो जाजो भावसूं रे,
प्रति लाभे अणगार ॥ सेवग. ॥ 4 ॥

सत शील को शरणो आदरो रे,
ध्यावो थे अरिहंत देव ।
सुगुरु गुरां के चरणे नित नमो रे,
धरम करो नित - मेव ॥सेवग.॥ 5 ॥

---

1. दिलवाना

सनमुख कर देवे जिन-धर्म सूं रे,
पूरी बांधे प्रीत ।
धरम सूं रंग जारे मींजी मांहिली रे,
शुध श्रावक नी रीत ।। सेवग. ।। 6 ।।

अंत काल नो अवसर देखने रे,
देवे संथारा को साज ।
सेठ नो कार्य सिरे चढाय दे रे,
अनुक्रमे पामे शिव-राज ।। सेवग. ।। 7 ।।

भाग भलो जो हुवे सेठ नो रे,
तो सेवग पाले प्रेम ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे सेवग सेठनो रे,
सदा बरते कुशल ने खेम ।। सेवग ।। 8 ।।

:: दोहा ::

सत गुरु सूं ऊरण हुवे, जो शिष्य हुवे सुविनीत ।
चतुर नर नारी तिके, सांभल जो धरि प्रीत ।। 1 ।।

ढाल–5

(राग:- सूवटिया तूं माहरो वीर महल बता)

जीव भम्यो जग - मांही,
लाख चौरासी जात में ।
हिवे पायो नर - अवतार,
थारे चिंतामण दियो हाथ में ।। 1 ।।

सुणो चेला चतुर सुजाण,
गुरु सूं ऊरण हूणो दोजिये ।

सो वातां इक वात,
बीजो काम सहू सोहिलो ।।सुणो.।।2।।

तूं हुंतो अज्ञानीमत - अध,
कुगुरु कुदेव ने पूजतो ।
धर्म आचार्य धीर,
तोने कियो अंधाने सूजतो ।।सुणो.।।3।।

सरसूं थी कियो सुमेर,
तोने कीड़ी थी कुंजर कियो ।
रांक सूं कियो राव[1],
तोने ज्ञान नगीनो निर्मल दियो ।सुणो.।

श्रमण सत गुरु साध,
आर्य सुध दया - धर्मी ।
तोने सुणायो जिनजी रो धर्म,
भारी - कर्मा ने कियो हलू कर्मी ।।सुणो.।।5।।

रूड़ा वचन रतन,
तोने धर्म सुणायो भली तरे ।
तोने दीधा दोय नेण,
जरे[2] तूं मोख नगर ने पग भरे ।सुणो.।6।

तोने दियो संयम रो साज,
क्रिया थे कीधी घणी ।
काल अवसर कर काल,
तूं देवता हुवो रिध को धणी ।।सुणो.।।7।।

1. राजा 2. जब

वैमाणिक हुवो देव,
सुविनीत चेलो सुहावणो ।
उठे दियो अवधि ज्ञान,
माहरा गुरु कने जावणो ।।सुणो.।।8।।

तिरछा लोक मझार,
चेलो आयो गुरु के कारणे ।
हमें दुःख करदूं दूर,
वारी जाऊं माहरा गुरु रे बारणे ।।सुणो.।।9।।

गुरु जिण देश मझार,
अथवा नगर पुर ग्राम में ।
जिहां पड़ियो काल दुकाल,
आहार थोड़ो मिले तिण ठाम में ।।सुणो.।।

चेले चिंतव्यो एम,
गुरां ने भिक्षा घणो दोहिली ।
जिण देश में सखरा सुगाल,
जिहां भिक्षा घणी सोहिली ।।सुणो.।।11।।

आपका गुरां ने उठाय,
सखरा देश में मेल्या देवता ।
जिहां श्रावक सुखियाजी,
गुरां का चरण नित सेवता ।।सुणो.।।12।।

जिहां अशनादिक घणा आहार,
घीणा-धापा दूध ने दही ।
जिहां दोलतवन्त दातार,
किण ही बात री कुमी नहीं ।।सुणो.।।13।।

गुरु करता उग्र विहार,
भूल ऊजाड़ में ठेलिया[1]।
कष्ट में कुमी नहीं काय,
जांणे आंभे[2]-नाख्या ने धरती भेलिया ।सु.।

पीड़ा गुरां नी देख,
चेले उठाय वसती में मेलिया ।
जिहां जावण रो मन,
गुरां रा दुख दूरे ठेलिया[3] ।।सुणो.।।15।।

घणा काल रो रोग,
शूलादिक उपनो शरीर में ।
जक[4] नहीं पामेजी जीव,
नीद न आवे पीड़ में ।। सुणो. ।।16।।

चेले कर दियोजी चेन,
दुख गुरां को दूरे गयो ।
सुन्दर कियो शरीर,
तो पण चेलो ऊरण ना थयो ।।सुणो.।।17।।

हिवे ऊरण किम होय,
निसुणो वात आगे घणी ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे एम,
भाख गया त्रिभुवन धणी ।।सुणो ।।18।।

1. पड़ गये 2. आकाश 3. किया 4. चैन

-- दोहा --

काल दुकाल गुरु देख ने, वले दीठा दुक्कर रोग ।
गुरु मन मांहे चिंतवे, दुक्कर मारग ए जोग ॥ 1 ॥
रोग काल देखी डर्या, रखे आवे दूजी बार ।
चारित्र सूं चित्त चल गयो, इण विरिया करे उपगार ॥ 2 ॥
गुरां के[1] गोडे आयने, चेलो चतुर सुजाण ।
गुरां ने संयम मां सैंठा करे, साचो देखावे सहनाण[2] ॥ 3 ॥

ढाल-6

(राग :- बलद भला छे सो)

धर्म आचार्य आपका रे लाल,
ज्ञान तणा दातार रे-मन-मोहन चेला ।
गुरु सम जग मांको नहीं रे लाल,
ज्यां मोटो कियो उपगार रे ॥मन.॥1॥

शिष्य सुविनीत सुहावणो रे लाल,
दीठां आवे दाय रे - मन.
गुरां का गुण नही बीसरे रे लाल,
रहे भगति विनय के मांय रे ।मन.शिष्य।2॥

परिणाम जो पोचा[3] पडे रे लाल,
फिरो देखे गुरां की दृष्ट र-मन. ।
केवल भाषित धर्म थी र लाल,
गुरा ने होता दीठा भ्रष्ट रे ॥मन. शिष्य॥3॥

1. निकट 2. लक्ष 3. शिथिल

जिन धर्म मांहे जुगत सूं रे लाल,
गुरां ने आणे ठिकाण रे - मन.।
साध पणा मां सेंठा करे रे लाल,
चेलो हुवे ऊरण सुजाण रे ।।मन.शिष्य।।4।।

अटकले[1] अंग की चेष्टा रे लाल,
सहू सारे गुरां का काम रे ।
अन्तर भगत गुरां तणो रे लाल,
जिण सूं पामे जीव आराम रे ।।मन.शिष्य.।।

बेकर जोड़ी ऊभो रहे रे लाल,
गुरु बतलावे तिणवार रे - मन.।
आधी रात दो पहर नो रे लाल,
तुरत काम ने तैयार रे ।।मन शिष्य।।6।।

गुरां के मन गमतो तको रे लाल,
अशनादिक दे आण रे - मन.।
आगत स्वागत करे घणी आहार की रे लाल,
वले चतुर अवसर नो जाण रे ।।मन.शिष्य।।

आछो वस्त्र आप भोगवो रे लाल,
करे गुरां का जतन रे - मन.।
ऊठण, बेसण पोढणे रे लाल,
सेवा करे एक मन रे ।।मन.शिष्य।।8।।

जिम गाय ने ताजो खवावतां रे लाल,
गऊ दूध तणो देण रे - मन. ।

---
1. अन्दाज से समझे

जिम गुरां ने सखरो[1] जीमावतां रे लाल,
गुरु ज्ञान तरणा दातार रे ।।मन.शिष्य।।9।।

कठिन कोमल वचन थी रे लाल,
नही आणे मन रीस रे - मन. ।
जिण चेले गुरां ने रिझावियां रे लाल,
ते सुविनीत विसवावीस रे ।।मन.शिष्य।।10।।

गुरां की सीखज जाणे अमृत समी[2] रे लाल,
नहीं उपजावे मन - खेद रे - मन. ।
गुरां नो कारज करे हेत सूं रे लाल,
आणी अधिक उम्मेद रे ।।मन शिष्य।।11।।

सूत्र भणतां सोहिलो रे लाल,
सोहिलो कठिन क्रिया रो काम रे-मन. ।
तपस्या पण करणी सोहिली रे लाल,
पण दोहिलो विनय अभिराम रे ।।मन शिष्य.।।12।।

भणियो तपसी वेराग में रे लाल.
वले विनय माँ पूर रे - मन. ।
सपूत शिष्य साता कारियो रे लाल,
सदा रहे गुरां के हजूर रे ।।मन.शिष्य।।13।।

विनय सूं रींझे राजवो रे लाल,
विनय सूं रीझे देव रे - मन ।
गुरु रीझे विनयवंत सूं रे लाल,
विनय सूं कीजे सखरी सेव रे ।।मन.शिष्य।।14।।

---

1. बढ़िया - अनुकूल 2. सामान

शिष्य मिले पंथक सारखा रे लाल,
जिण सूं तो जाझो[1] राग रे-मन. ।
अमृत की दीधी ओपमा रे लाल,
भला विनीत का भाग रे ।।मन.शिष्य।।15।।

लज्जा-दया-संयम रा धणी रे लाल,
ब्रह्मचारी ने मन मोख र - मन. ।
ऐसा गुरां ने हूं पूज सूं रे लाल,
चित्त मां आणी संतोष रे ।।मन. शिष्य.।16।।

चेलो चतुर ऊरण हुवो रे लाल,
जिन सकल कियो अवतार रे-मन. ।
रिख 'रायचन्दजी' इम भणे रे लाल,
ए तीजो उसरावण उद्धार रे ।।मन.शिष्य।17

-- दोहा --

इम जांणी सतगुरु भगत कीजे शुद्ध परिणाम ।
कुण कुण उसरालण हुवा, कहिसूं तेहना नाम ।। 1 ।।

1. उत्कृष्ट

ढाल–7

(राग:- सहेल्यां ए आंबो मोरियो)

'मल्ली' अरिहन्त उगणीसमा,
जिण दिन हो लीनो संजम-भार।
तिण दिन केवल ऊपनो,
माइतां सूं हो कीधो उपगार ।। 1 ।।

उसरावण हुवा उच्छव घणो,
भाईतां सूं हो पहली हुवो पूत ।
सेठ सूं सेवग हुवो,
गुरां का हो सखरा दिया सूत ।।उस.।। 2 ।।

'कुंभ' राय 'प्रभावती'
मात-पिता ने हो आया वंदण काज ।
श्रावक ना व्रत ज्यांने दिया,
मात-पिता ने हो तार्या जिन-राज ।।उस.।। 3 ।।

'ऋषभदत्त' 'देवानंदा'
आगे हुंता हो श्रावक-व्रतबार ।
विध सूं वांद्या वीर ने,
देवानंदा के हो आई दूधनी धार ।।उस.।। 4 ।।

मात - पिता वर्द्धमान का,
वीर दीनो हो ज्यांने संजय-भार ।
दोनो ने मुगते मेलिया,
भगवती में हो ज्यांको विसतार ।।उस.।। 5 ।।

'सिद्धार्थ' ने 'त्रिशला' सती,
दोनूं पहूंता हो बारसें देव लोग ।

मात - तात नो कार्य सिद्ध करी,
पछे आदर्यो हो जिण मारग जोग । उस ।।6।।

'चित्त' प्रधानज समकिती,
वीनती करने हो लायो 'केशी' कुमार ।
'पएसी'[1] ने हो लायो साधां कने,
मंत्री कीनो हो मोटो उपगार ।।उस.।।7।।

'पएसी' मिथ्यात मूकने,
श्रावक ना हो व्रत लीना बार ।
हुवो 'सूर्याभ' नामे देवता,
'रायपसेणी' में हो इणरो अधिकार ।।उस.।। 8 ।।

'जित शत्रु' राजा भणी,
समझायो हो 'सुमति' प्रधान ।
दोनूं जणा संयम साथे लियो,
उपगार हो कीनो असमान[2] ।।उस.।। 9 ।।

'आषाढ भूत' आचार्य,
चारित्र सूं हो चूक्यो चित्त अपार ।
चेले ज्यां का चित्त हठ कियो,
पछे पाल्यो हो चोखो संयम-भार।।उस ।।10।।

सातमी ढाल सुहावनी,
इण मांहे हो ओछो अधिको संग ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे सुणियां थका,
विनीता के हो बढसी सुख रंग ।।उस.।।11।।

---

1 प्रदेशी राजा 2. असीम

श्री 'महावीर' मुगते गया,
केवल पाम्यो हो 'गौतम' स्वामी धन ।
सत ढालियो संपूरण कियो,
खोटो जाणियो हो दीवाली को दिन ।।उस.।।12।।

- - कलश - -

उसरावण उद्धार कीधो,
सूत्र 'ठाणग' जोय ए ।
वले इण अणुसारे चोज लगायो,
सांभलतां सुख संपत होय ए ।। 1 ।।

संवत अठारे बरस सेतीसे,
काती बद चवदस लील विलास ए ।
पूज्य जयमलजी रे प्रसादे जोड़यो,
मेड़ते नगर चन्द्रमास ए ।। 2 ।।

—卐—

* भेरी *

– दोहा –

शासन - नायक समरिये, भगवंत वीर जिणंद ।
एक - मना थई सांभलो, भेरी ज्ञान सम्बन्ध ।। 1 ।।
पर उपगारी परम गुरु, बांचे सिद्धान्त साच ।
सरणा समझे सूत्र मां, ज्यूं मुख दीठो काच ।। 2 ।।

नंदी सूत्र रा[1] न्याव सू, करू जुगती सूं जोड़ ।
राग मांहे रस ऊपजे, सुणजो आलस छोड ।। 3 ।।

卐

ढाल-1

[राग:- तिण अवसर मुनि रायए]

प्रथम पहिलो देव - लोग,
मन - वांछित सुख - भोग के भवियण लाल ।
देव देवी दोनूं भोगवे ए ।। 1 ।।

विमाण बत्तीस लाख,
तिण रो सूत्र मां साख के - भवियण लाल ।
तेरे प्रतर इण तणाए ।। 2 ।।

तेरे में प्रतर जाण,
जठे शक्रेन्द्र नो विमाण के-भवियण लाल ।
इन्द्र बेठो सिंहासण ऊपरे ए ।। 3 ।।

सर्व पहर्या सिणगार,
हूं भाखूं तिण रो विचार के - भवियण लाल ।

आगमने अनुसार थी ए ।। 4 ।।

माथे मुगट सिर पाग,
तिणमां तुररा किलंगी लाग के-भवियण लाल ।
श्रीपेच जमायो रतनां तणोए ।। 5 ।।

---

1. साक्षी

बागा रो भारी घेर:
पोतियो बांधियो कड़ियां फेर के-भवियण लाल।
उत्तरासन अवल विराजतो ए ॥ 6 ॥

गले गले कंठी वले हार,
विचे धुग-धुगियां श्रीकार के - भवियण लाल।
कड़िया में कंदोरो भिग मिगे ए ॥ 7 ॥

बुकियां[1] बाजुबंद दोय,
तीमभाबा ज्यांरे होय के-भवियण लाल।
कानां मां कुंडल पहरियाए ॥ 8 ॥

पगां मां मोजड़ी दोय,
ते पणि रतनां मां जोय के-भवियण लाल।
तोडा दोय त्यां ऊपरे ए ॥ 9 ॥

आंगलियां में उद्योत,
वींटियां री खुली के जोत - भवियण लाल।
पुणची कड़ा दोय दीपता ए ॥ 10 ।

फूलां री माला पचरंग,
चंदन सूं लेप्यो अंग के - भवियण लाल।
वास सुगंध सुहावणी ए ॥ 11 ॥

इन्द्र सजी सिणगार,
बेठो आण दरबार के - भवियण फल ।
हिव इन्द्र सभा री विध सांभलो ॥ 12 ॥

---

1 बाहों में

सहस्र चौरासी देव,
सामानिक सारे सेव के - भवियरण लाल ।
आग्या - कारी ये इन्द्रना ए ।। 13 ।।

सग्र[1] महेसी आठ,
ते धरणी देव्यां रे घाट[2] के - भवियारण लाल ।
परिवार - सहित इन्द्र कने ए ।। 14 ।।

च्यारे वले लोग - पाल,
ते च्यारूं दिसां रा रखवाल के-भवियारण लाल ।
यांरो विसतार भगवती मां भाखियो ए ।। 15 ।।

देवता वले तेतीस,
ते इन्द्र देव आर्सीन के - भवियरण लाल ।
ते पिण इन्द्र ना मुख आगले ए ।। 16 ।।

देवता बारह हजार,
ए मांहिली परिषदा धार के - भवियरण लाल ।
चवदे हजार मध्यना ए ।। 17 ।।

देवता सोलह हजार,
ए बारली परिषदा-परिवार के-भवियरण लाल ।
सात बले अनिका[3] कही ए ।। 18 ।।

देवियां छसौ होय,
ए मांहिलो परिषदा जोय के - भवियरण लाल ।।
मध्य परिषदारी पांच सौ ए ।। 19 ।।

---

1 पट्ट रानी 2 समूह 3 सैना

देवियां ब्ले सौ सात,
ए बारलो परिखदा विख्यात के भविपण लाल।
सर्व देवियां अठारे सौ दीपती ए ॥ 20 ॥

तीन लाख छत्तीस हजार,
ए आतन-रक्षक सुविचार के - भवियण लाल।
च्यारूं दिश ना दाखिया ए ॥ 21 ॥

असंख्याता देवतां री कोड़,
इन्द्र आगे हाथ जोड के भवियण लाल।
इन्द्र सभा जुडी जुगत री ए ॥ 22 ॥

इन्द्र सभा रो अधिकार,
इण पहली ढाल मझार के, भवियण लाल।
रिख "राय चदजी" कहे आगे सांभलो ए ॥ 23 ॥

-- दोहा --

इन्द्र अवधि प्रयुंजियो,[1] जंबू द्वीप मझार।
दक्षिण भरत मां द्वारिका, राज करे कृष्ण मुरार ॥ 1 ॥
आंण वर्ते तीन खंडमां, कोई न लोपे कार।
इन्द्र प्रकार कृष्ण गो, ते सुणजो आलस निवार ॥ 2 ॥

[illegible]

(राग- [illegible])

नवमो व [illegible]
द्वारिका [illegible] ॥

1. लगाया

वसुदेव नो सुत सातमों,
राणी देवकी तिण री मात के ।। 1 ।।

इन्द्र प्रशंसा करे कृष्णाज री,
बखाणे वारं बार के ।
जस महिमा कीरत करे,
बैठा सभा मझार के ।। इंद्र. ।। 2 ।।

कृष्ण गुण ग्राही अवगुण तजे,
अजोग नहीं करे युद्ध के ।
वले समकित मां सेंठो घणो,
चित निर्मल च्यारे[1] बुद्ध के ।। इंद्र. ।। 3 ।।

एक सौ ने अष्ट लक्षण धणी,
सांवल वर्ण शरीर के ।
दश धनुष री देही दीपती,
महा बलवंत[5] वीराति वीर के ।। इंद्र. ।। 4 ।।

बत्तीस सहस राणी रो साहिबो,
यादव रूप तणो अवतार के ।
कृष्ण रूप बणावे वैक्रिय,
विलसे सुख संसार कु ।। इंद्र. ।। 5 ।।

जिन धर्म कृष्ण जाणे खरो,
माने नहीं मिथ्यात के ।
देव चलायां ना चले,
सो बातां इक बात के ।। इंद्र. ।। 6 ।।

1. औतपातिका 2. वेनीतिका 3. कमिया 4. परिणामिका
5. बलवान से भी बलवान

कृष्ण रे प्रेम घणो प्रभुजी तणो,
चित्त चरणे रयो लाग के।
प्रभु सूं हेज घणो हिवडै तणो,
प्रभुजी सुं प्रीत अथाग के ॥ इंद्र. ॥ 7 ॥

प्रीत साची प्रभुजी तणी,
जिका कदेई न विसरे[1] कोय के।
जेहवी रंग मजीठ नो,
नेमजी री बाट रहिया जोय के ॥इंद्र.॥ 8 ॥

ए दूजी ढाल पूरी थई,
रिख "रायचंदजी" कहे एम के।
हिवे एक देवता री बात सांभलो,
चित्त मेली चरित्र करे केम के ॥इंद्र.॥ 9 ॥

-- दोहा --

एक मिथ्याती देवता, इन्द्र वचन उत्थाप।
कृष्ण प्रशंसा ना सही, पोते एण रे पाप ॥ 2 ॥

करवा कृष्ण री पारखा, आयो मृत्यु लोक मझार।
दीठी नगरी द्वारिका, हिवे सुणजो सहू विसतार ॥ 2 ॥

तिण काले ने तिण खमे, करता उग्र विहार।
नेम जिणद समोसर्या, साध अनेक परिवार ॥ 3 ॥

सेवा करे देवी ने देवता, वले नर नारी ना वृन्द।
च्यारू संघ सेवा करे, तारक नेम जिणंद ॥ 4 ॥

---

1. परिवर्तित

ढाल-3

(राग- म्हारी गोरज्यां हो लूंब लुंबालो थांरो)

श्री नेम विराज्या बाग में रे लाल,
वेगी हरि ने बधाई दीध मन मोह्योरे ।
सांभलतां सुख ऊपनो रे लाल,
जाणे अमृत पीध ॥ मन. ॥ 1 ॥

बाल ब्रह्मचारी बावी समो रे लाल,
करुणा सागर करतार मन ।
शीलवंता सिर सेहरो रे लाल,
नेम नयणे न निरखी नार ॥मन. बाल॥ 2 ॥

माधव[1] मन मां जाणियो रे लाल,
आज भलो दिन एन मन ।
माहरी आज आशा सफल थई रे लाल,
चित्त माहरो पायो चेन ॥मन. बाल॥ 3 ॥

आज आंखडियां अमृत बसे रे लाल,
माहरी आज पावन हुई देह मन ।
आज हर्ष हिये मावे नहीं रे लाल,
माहरी प्रगटी पुन्याई एह ॥मन. बाल ॥ 4॥

पुण्य जोगे प्रभुजी पधार्या रे लाल,
कृष्ण रे प्रभुजी सुं प्रीत मन ।
गुरु सम जग मां को नहीं रे लाल,
गुरु चित्त मां आवे नित चीत ॥मन. बाल ॥ 5 ॥

1. श्री कृष्ण

गुरु दर्शन दीठां पछे रे लाल,
तृपत हुय जावे तन मन ।
के एक जाणि केवली रे लाल,
के जाणे एक मन ।। मन. बाल. ।। 6 ।।

गुरु सम दाता को नही रे लाल,
स्वर्ग मृत्यु पाताल मद ।
देव नहीं कोई दूसरो रे लाल,
प्रभु सरिखो दीन दयाल ।।मन. बाल.।। 7 ।।

बधाई भगवत की रे लाल,
सो नैया साठी बारे लाख पन ।
प्रीति दान दियो कृष्णजी रे लाल,
दर्शन री अभिलाश ।।मन. बाल.।। 8 ।।

जिम वस्तु व्हाली नहीं बीसरे रे लाल,
ज्यू हरि न बिसरे नेम मन ।
रात दिवस दिल मां बसे रे लाल,
करहणी मां आवे केम ।।मन. बाल.।। 9 ।।

कांई विसरु नहीं गुरु लारखी रे लाल,
पूरण गुरु सूं प्रेम मन ।
ए तीजो ढाल बूरी थई रे लाल,
रिख 'रायचंदजी' कहे एम ।।मन.बाल.।।10।।

-- दोहा --

हिंवे नेम जिणद ने वांदवा, किण विध जावे मुरार ।
अंग मां उछरंग ऊपनो, सांभल जो सुविचार ।। 1 ।।

वस्त्र घणा शरीर ना, सौ नैया सिरदार ।
प्रीति दान दियो घणा, हरख्यो वधाई दार ॥ 2 ॥

ढाल–4

[राग – रंग-महल मांही चौपड़ खेलस्यां]

मञ्जन-घर मां हो कृष्ण सिनान करे,
सर्व पहर्या सिणगार ।
चांदन – लेप शरीर लगाविया,
जाणे इन्द्र – अवतार ॥ 1 ॥

यदुपति जावे हो जिणवर वांदवा,
नगरी द्वारिका सिणगार ।
घर घर मांहे महोच्छव मंडरियो,
हर्ष सूं जावे नर–नार ॥ यदु. ॥ 2 ॥

लाख बंयालिस हाथी सिणगारिया,
वले लाख बंयालिस घोड़ा ।
लाख बंयालिस रथ सिणगारिया,
पायदल अड़तालिस कोड़ ॥ यदु. ॥ 3 ॥

कोड़ अठारे हो अंग – मर्दकीया,
कोड़ अठारे आभरण – धार ।
पनरे कोड़ – भोजन करा कह्या,
ए कृष्ण तणो परिवार ॥ यदु. ॥ 4 ॥

लाख अढाई साथे दीवी – करा,
बयालीस लाख संग्रामक नीशान ।
कोड़ नव सामानिक निशान कह्या,
पांच कोड़ धजा वाले जाण ॥ यदु. ॥ 5 ॥

सोले कोड़ नाटकिया नाटक करे,
नाटक बत्तीस प्रकार ।
साढा तीन कोड़ कुमर कह्या,
बले राजा बत्तीस हजार ।। यदु. ।। 6 ।।

बलदेव वासुदेव दोनूं चालिया,
वेहूं गज ऊपर असवार ।
छत्र ने चामर दोनूं बींजे रह्या,
बाजां रा बाज रह्या झणकार ।। यदु. ।। 7 ।।

रिद्ध संपदा लेई ने नीसर्या,
रूड़ी कोनी रचना रसाल ।
रिख 'रायचंदजी' जोड़ी ए जुगत सूं,
ए चित्त–बल्लभ चोथी ढाल ।। यदु. ।। 8 ।।

:: दोहा ::

शिवा देवकी देवी रोहिणी, राणिया हरखी अपार ।
प्रभुजी ने वांदण भणी, करे सजाई त्यार ।। 1 ।।

ढाल–5

[राग – चोथा प्रत्येक बुद्धनी]

देवकी रो दिल हरसियो–मांकी सहियांए,
हूं निरखूं नेम जिणंदए ।
पुण्य-जोगे प्रभुजी पधारियां,–मांकी.
"समुद्र विजय" रा नंद ए ।। 1 ।।

माहरे दरसण री दिल मां हुंती–मांकी–
माहरो मगन हुय गयो मन ए ।
माहरे सुख उपनो सरीर मां–मांकी–
माहरो तृपत होय गयो तन ए ॥2॥

चालो ए हालो सहेलियां, –मांकी.–
कांई कोई य करजो जेज ए ।
हूं माहरे प्रभुजी री सेवा करूं, -मांकी–
हूं पूरूं हिवड़ा रो हेज ए ॥3॥

हूं वचन सुणूं वीतराग ना, –मांकी–
गुरू ज्ञानी रे गोड ए ।
हूं अरिहंत रे मुख आगले, –मांकी
हूं अर्ज करूं कर जोड़ ए ॥4॥

माहरो नेम जिणंद सूं नेह घणो, –मांकी.–
माहरो प्रभुजी सूं घणो प्रेम ए ।
एक जीव जाणे के जांणे केवली, –मांकी–
कहणी मां आवे केम ए ॥ 5 ॥

प्रीत छिपाई ना छिपे – मांकी,
एक पलक मां करे प्रकाश ए ।
दावो पिण दबे नहीं – मांकी,
जिम किसतूरी हो वास ए ॥6॥

माहरो सोच गयो आज सर्वथा – मांकी,
माहरी चिंता गई परी चूक ए ।
माहरी तन मन री तृष्णा गई – मांकी,
आज भाग गई माहरी भूक ए ॥7॥

न्हाय धोय मंजण करी – मांकी,
शरीर किया सिणगार ए ।
दास्यां अठारे देश री – मांकी,
राणी देवकी री लार ए ॥ 8 ॥

"शिवा" देवी पिण इणतरे – मांकी,
सिणगार किया सहू तन ए ।
दास्यां संघाते[1] रथ बेसने – मांकी,
करवा प्रभु रो दर्शन ए ॥ 9 ॥

रथमां बैठी राणी देवकी – मांकी,
बहोत्तर सहस्र कृष्ण री मात ए ।
बत्तीस सहस्र कृष्ण री रांणिया - मांकी
ए पिण सासू रे साथ ए ॥ 10 ॥

रोहणी माय बाल भद्रनी – मांकी,
ते पिण देवकी तेम ए ।
अठारे सहस्र बल भद्रनी – मांकी,
राणियां चाली धर प्रेम ए ॥ 11 ॥

बले बेटा पोता नी पण पदमनी–मांकी,
बले बहिन बेटी परिवारए ।
आगे असवारी कृष्ण री – मांकी,
दोनूं चाल्या मझ बाजार ए ॥ 12 ॥

ए पांचमी ढाल पूरी थई – मांकी,
रिख "रायचन्दजी" कही एम ए ।
द्वारिका नगरी थी नीसर्या - मांकी,
हिवे किणविध वांदे नेम ए ॥ 13 ॥

---

1. साथ मे

– दोहा –

समवसरण मां साहिब, निरख्यो नेम जिणंद ।
कृष्ण वल भद्र वे जणा, बले यादव नर नारी वृंद ।। 1 ।।
वंदणा कर भगवंत ने, बैठा सभा – मझार ।
दर्शन देखे राणियां, ले सगलो परिवार ।। 2 ।।
जिणवर दीधी देशना, सांभल कृष्ण मुरार ।
पाछा आवे द्वारिका, हिवे सुणो मार्ग विचे विस्तार ।। 3 ।।

ढाल–6

[राग :– जंबू - द्वीप - मझार]

कृष्ण रो घोड़ो एक,
काढयो देवता ,
ले चाल्यो चबड़े देखतांए ।। 1 ।।

हरि दीठो मारग वीच,
तिण ने कहे कृष्णजी ।
ए घोड़ो माहरो छोड़दे ए ।। 2 ।।

तव देवता कहे एम,
हूं लेजाऊं भला ।
आसंग[1] हुवे तो युध करो ए ।। 3 ।।

कृष्ण कहे केहो जुध[2],
जोग भला भला ।
पिण देवता यांरे ना किया ए ।। 4 ।।

---

1. शक्ति 2. युद्ध

मोरा करसु युद्ध,
आ कही देवता ।
परीक्षा करवा भणीए ॥ 5 ॥

तव वोल्या कृष्ण नरेश,
युद्ध अयोग एहवो ।
हूं तो कदे ना करू ए ॥ 6 ॥

मूक्यो अश्वज एह,
तूही लेजा परो ।
हूं नही मांगूं घोड़लो ए ॥ 7 ॥

जोग करे जो युद्ध,
तो तूं आव उरो[1] ।
देवता ने पूगी पारखा ए ॥ 8 ॥

हिव देवता रूप वणाय,
बे कर जोड़ ने ।
पाए लागो कृष्ण रे ॥ 9 ॥

थांरा कीना इन्द्र बखाण,
मै नही मानिया ।
तेरे हूं आयो परीक्षा भणी ए ॥ 10 ॥

थे खमजो मोय अपराध,
देव दर्शन हुवो ।
प्राये निष्फल ना हुवे ए ॥ 11 ॥

1. इधर

देव द्वारिका में रोग देख,
भेरी एक चंदन री ।
कृष्ण ने दिधी देवता ए ॥ 12 ॥

भेरी छठे मास बजाय,
रोग छः मासरा ।
शब्द सुणसी तिणरा जावसी ए ॥ 13 ॥

कृष्णजी भेरी शीघ,
[1]सूंपी एक पुरुपने ।
तूं छठे मास नजावजे ए ॥ 14 ॥

द्वारिका रो गयो रोग,
भेर – शब्द सूं ।
रोग दुख दूरे गया ए ॥ 15 ॥

हरख्या कृष्ण नरेश,
लोग सुखिया थया ।
भेरी छठे मास वाजे सदा ए ॥ 16 ॥

ए थई छठी ढाल,
रिख 'रायचंदजी' कहे ।
हिवे आगली विध सांभलो ए ॥ 17 ॥

– दोहा –

केई परदेशी आविया, भेरी वाजे छठे मास ।
बधसी रोग शरीर मां, मन मां रह्या विमास ॥ 1 ॥

1. देदीगई 2. विचार

आंया रोग थकी मरसां परां, भेरी खंड लेवां दे दाय ।
दीधांरी देवल चढे, सरे दाम सूं काम ॥ 2 ॥
भेरी रो खंड पोवसां, जासी जिणसूं रोग ।
दाम दिया तिण पुरुषने, मेल्यो इम संजोग ॥ 3 ॥

ढाल—7

(राग:– जिणंद मोरा हो)

भेरी बजावे तिणरे कने,
गया प्रदेशी तिणवार–भविक जन हो,
ज्यां दाम दिया उण पुरुष ने,
मांगे खड भेरी नो विचार ॥ भविक. ॥ 1 ॥

भेरी बजावे नर लोभियो,
चित्त गयो लालच मांय–भविक,
चित्त वित्त[1] रे वस मां पड़यो,
देवे बीजी कारी भेरी रे लगाय ॥ भविक भेरी ॥ 2 ॥

इम परदेशी दाम देई करी,
भेरी रा खंड लई जाय–भविक.
परदेशी घस[2] घस ने पीवे,
देवे बीजा खड लगाय ॥ भविक भेरी. ॥ 3 ॥

वा भेरी बजावे तिण समे,
सुणे द्वारिका रा लोग–भविक.
भेरी रो शब्द रोगी सांभले,
पण किण रो न जावे रोग ॥ भविक. भेरी. ॥ 4 ॥

---

1 धन 2. घिस-घिस कर

भंभा सबद भेरी करे,
भेरी मां थाल दियो भेल – भविक्त,
असल भेरी रा खंड अलगा करी,
खड दिया अनेरा मेल ।। भविक. भेरी. ।। 5 ।।

लोक आये कृष्णजी कने,
आप ठीक करो महाराज – भविक,
भेरी सुणो पिण रोग जावे नहीं,
इण बात रो कासूं काज ।। भविक भेदी ।। 6 ।।

तरे[1] भेरी – वालो बोलियो,
मैं लिया लोकां कर दाम – भविक,
मैं परदेशी ने खड दिया,
दूजा खड लगाया ताम ।। भविक भेरी ।। 7 ।।

बात सर्व कही कृष्ण ने,
हरि कहे विणासो[2] जाय – भविक,
लोभी ने अलगो कर दियो,
लोक मां निन्दा थाय ।। भविक भेरी ।। 8 ।।

इण रो अयजस हुवो अति घणो,
वले वेदना पाई विशेप – भविक,
लोभी दुख पायो लोग मां,
लोग निंदे तिण ने देख ।। भविक भेरी ।। 9 ।।

ए तो सातमी ढाल पूरी थई,
वले भेरी तणो विसतार – भविक
रिख 'रायचंदजी' कहे सांभलो,
वले आगलो अधिकार ।। भविक भेरी ।। 10 ।।

---

1. तब 2. सोचो

– दोहा –

कृष्ण भेरी रे कारणे, तेलो कियो चौवि हार ।
कृष्ण करने आयो देवता, मांगी भेरी मुरार ।। 1 ।।

दूजी भेरी दीधी देवता, कृष्ण दूजा दीध ।
भेरी रो शब्द सुहावणो, जाणो अमृत पीध ।। 2 ।।

तूं लोभी हुय ने लालची, किणहिक नेम लीजे दाम ।
छठे मास बजावजे, कीजे उत्तम काम ।। 3 ।।

भेरी सूंपी सखारा मिनखने, भेरी बाजे छठे मास ।।
द्वारिका रा दुख दूरे गया, लोक हुवा हर्ष उल्लास ।। 4 ।।

ए किण माथे उतारियो भेरी नो दृष्टान्त ।
मै सूत्र माहे निरखियो, हिवे सांभलजो विरतंत ।। 5 ।।

ढाल–8

(राग:– कोयलो पर्वत धूंधलो रे)

इण सूत्र भेरी रीविध सांभलो रे लाल,
इण भेरी रा दोय भेद हो–चतुर नर,
हिवे त्रिवरण-सहित थे सांभलो रे लाल,
मनमां राख उम्मेद हो–चतुर नर ।। इण. ।। 1 ।।

आपणी मान-पूजा रे वासते रे लाल,
घाले सूत्र मा भेल हो–चतुर नर,
मत–ग्राही मानी थका रे लाल,
अर्थ अनेरो[1] देवे मेल[2] हो–चतुर नर ।। इण ।।2।।

---

1. दूसरा 2. मिलादे

पोते कीधी विरुद्ध प्ररूपणा रे लाल,
आपकी बुद्धि सूं थाप हो–च. न. ।
खोटी बात खांचे घणी रे लाल,
सूत्र वचन उत्थाय हो–च. न. ।। इण. ।। 3 ।।

पहले पुरुष भेरी मां भेल घालियोरे लाल,
और[1] सांधादिया लगाय हो-च. न. ।
भेरी करदी चोखो खरी रे लाल,
इण भेरी सूं नहीं रोग जाय-हो.च.न. ।।इण.।।4।।

जिम सूत्र मां भेल[2] घालने रे लाल,
प्ररूपे अन्यथा अर्थ लगाय–दो.च.न. ।
जेहनी कथा सुणियां थकां रे लाल,
कर्म-रोग नहीं जाय-हो. च. न. ।। इण. ।। 5 ।।

जिम पहिलो पुरुष दुखियो थयो रे लाल,
जिण ने भेरी मां कीनो मेल–हो. च. न. ।
जिम सूत्र मां भेल घालियो रे लाल,
ए दृष्टांत दीनो मेल हो–च. न. ।। इण. ।। 6 ।।

जिण सूत्र मांहे भेल घालियो रे लाल,
तिण अरिहंत ने दियो आल[3] हो–च. न. ।
जेहनो उत्कृष्टो रुते जी वड़ो रे लाल,
ज्ञानी कह्यो अनंतो काल हो–च. न. ।। इण. ।। 7 ।।

दीवी दूजी भेरी दूजा पुरुष ने रे लाल,
जिण राखी रूड़ी रीत हो–च. न. ।
ते तो पुरुष सुखियो थयो रे लाल,
हुई जस महिमा परतीत हो–च. न. ।। इण. ।। 8 ।।

1. जोड़ 2. मिलावट 3. कलंक

जे सूत्र ने शुद्ध प्ररूपसी रे लाल,
सत सूं भेल न घाले कोय हो च. न. ।
जे सुख पायसी सासता रे लाल,
दूजे पुरुष जिय जोय हो ।। च. न. इण. ।। 9 ।।

इण री कथा सुणियां थकां रे लाल,
अष्ट करम–रोग जाय हो–च. न इण. ।।
सुणता जके सुखिया हुवे रे लाल,
कह्यो श्री जिन - राय हो ।। च. न. इण. ।। 10 ।।

ए आठमी ढाल पूरी थई रे लाल,
रिख 'रायचंदजी' कहे एम हो–च. न. इ. ।
वले विवरण भेरी तणो रे लाल,
सांभलजो धर प्रेम हो ।। च. न. इण. ।। इण. ।।

ढाल–9

(राग:– नानो नाहलो रे)

सूत्र भेरी साधने रे,
दीधी श्री जिन - राज ।
सुज्ञानी सांभलो रे,
बजावण वाला साधजी रे ।
सारे भव जीवारां काज ।। 1 ।।

जिम दाखी[1] नगरी द्वारिका रे,
जिय इहां आर्य देश । सू. ।
विचरे साध भली तरे रे,
देव धर्म - उपदेश ।। 2 ।।

अष्ट कर्म - रोगा जाणजो रे,
सूत्र-भेरी सुणतां जाय । सूत्र ।

1. कही

कथा कही ए तेरमीरे,
'नदी' सूत्र के मांय ॥ सूत्र. ॥ 3 ॥

श्रोता ने समझ पड़े रे,
मतवंतां[1] रो लागे मन । सूत्र. ।
सुणतां चित्त लागे चतुरां तणो रे,
जगमां धरमी माणस धन ॥ सूत्र. ॥4॥

इण मां अन्यथा जे कोई आवियो रे,
ते मिच्छामिदुक्कडं माय रे । सू. ।
गुण लीजो थे ज्ञान रो रे,
अवगुण मती लीजो कोय ॥ सूत्र. ॥5॥

ए भेरी की ढालां भली रे,
मैं की पर उपगार । सूत्र. ।
सुणियां ज्ञान वाधे घणो रे,
नंदी मां ज्ञात तणो विस्तार ॥ सूत्र. ॥ 6 ॥

ए भेरी - **नव ढालियो** रे,
सूत्र नंदी की साख । सूत्र ।
पूज्य '**जयमल्लजी**' के प्रसाद थी रे,
रिख '**रायचंदजी**' इम भाख ॥ सूत्र. ॥

संवत अठारे तयांलीस में रे,
कियो आसोज मास अभ्यास । सूत्र. ।
जोड करी ए जुगति सूं रे,
'बीकानेर' चौमास ॥ सूत्र. ॥ 8 ॥

ए नवमी ढाल पूरी थई रे,
संपूर्ण हुवो संबंध । सूत्र. ।
भणतां गुणतां वाचतां रे,
उपजे परमानंद ॥ सूत्र. ॥ 9 ॥

---

1. बुद्धिमानों का

रहनेमी

- दोहे -

अरिहंत सिध ने आयरिया,
उवझाया अणगार ।
पंच परमेष्टी हूं नमूं,
अष्टोतर सौ बार ॥ 1 ॥

मोक्षगामी बेहूं हुवा,
"राज्यमती" रहनेमा ।
चरित्र कहूं रलियामणो,
सांभलजो धरि प्रेम ॥ 2 ॥

ढाल-1

(राग- तिण अवसर मुनिराय)

सुखकारि सोरठ देश,
राजा कृष्ण नरेस ।
मन मोह्यो लाल,
दोपती नगरि द्वारिका ए ॥ 1 ॥

समुन्द्र विजै तिहां भूप,
सेवा देवी राणी रूडे रूप ।
मन मोह्यो लाल,
महाराणी मानेंजती ए ॥ 2 ॥

तिण समे जनमिया अरिहन्त देव,
इन्द्र चोसठ करे ज्यांकी सेव ।
मन मोह्यो लाल,
बाल ब्रह्मचारी बावीसमा ए ॥ 3 ॥

तिण समै राजुल नार तजि,
तेल चढी ने निरधार ।
मन मोह्यो लाल ॥
सतियाँ रो सिर सेहरो ए ॥ 4 ॥

समुन्द्र विजयजी रो नंद,
रहनेमी रो सुणो सम्बन्ध ।
मन मोह्यो लाल,
लघु भाई श्री नेम नो ए ॥ 5 ॥

रहनेमी विराजे रूडे रूप,
भर जोवन धरि चूंप ।
मन मोह्यो लाल,
सुख विलसै संसार ना ए ॥ 6 ॥

परणी कन्या पचास,
भोगवे लील विलास ।
मन मोह्यो लाल,
सदा काल सुख भोगवै ए ॥ 7 ॥

पडे नाटक ना झणकार,
रमणी रूप उदार ।
मन मोह्यो लाल,
मनवंछित लीला करे ए ॥ 8 ॥

पछै प्रति बोध्या रहनेम,
लागो धर्म सूं प्रेम।
मन मोह्यो लाल,
वाणी सुणने वैरागियो ए ।। 9 ।।

जाण्यो अथिर संसार,
लीधौ है संजम भार ।
मन मोह्यो लाल,
रमणी पचासै परिहरी ए ।।10।।

छोडया है छता भोग,
आदरयो मार्ग जोग ।
मन मोह्यो लाल,
कठिण क्रिया मुनि आदरी ए ।।11।।

एकला गुफा में आप,
जपता जिणवर जाप ।
मन मोह्यो लाल,
काउसग में क्रिया करे ए ।।12।।

आ थई पहिली ढाल,
पूज्य 'रायचन्दजी' भणे रे रसाल ।
मन मोह्यो लाल,
आगलो चारित्र सांभलो ए ।।13।।

ढाल–2

(राग– इण सर्वारथ सिद्ध रे चंद्रवे ए)

राजमती तो सेरणी साधवी,
संयम मार्ग पालेजी ।
घणी साधवीयारी हुई गुरणी,
दया मार्ग उजवाले जी ।
श्री नेम जिणंद ने वंदण चाली,
राजुल गढ़ गिरनारो जी ॥ 1 ॥

सात सौ ने सखी संघाते,
लीधो संयम भारे जी ।
दर्शण देखण हूवो ऊमावो,
चाली आरजियां तिण वारो जी ॥ श्री. 2 ॥

उजाड़ मांही ऊठी वाउल,
मच गयो घोर अंधारो जी ।
विरखा हूय गई मार्ग बीच में,
अटवी डडा कारो जी ॥ श्री. 3 ॥

भींज गई साधवियां सघली,
अंधारो नहीं सूझेजी ।
विछड़ गई आरजीयां इण पर।
मारग किणने बूझेजी ॥ श्री. 4 ॥

राजमती एकलड़ी चाली,
हो गई घणी काईजी ।
भीज गया कपड़ा ने साड़ी,
सती गुफा में आईजी ॥ श्री. 5 ॥

राज्यमती रहनेमी रो मिल गयो,
एक गुफा में टाणोजी[1] ।
लीला[2] लुगड़ा[3] अलगा मेली,
साधवी चतुर सुजाणोजी ॥ श्री. 6 ॥

आरजोयां ऊघाड़ी ऊभी,
कचन वरणी कायाजी ।
ऊजवाला में ऊभो दीठो,
पुरुष[4] ओपरी मायाजी ॥ श्री. 7 ॥

कपण लागी सगली काया,
सील सौच में पेठीजी
अंग[5] लुकोई[6] देखे नही कोई,
साधवी हेठी बेठी जी ॥ श्री. 8 ॥

रूप देखी रहनेमीं डिगियो,
संयम योग गयो भागीजी ।
कामी अंधो कछु नही देखे,
विषय सेवण लिव लागी ॥ श्री. 9 ॥

डरती देख सती ने बोल्यो,
रहनेमी कहे एमोजी ।
हूँ समुन्द्र विजय राजाजी रो वेटी,
तूं सोच करे छे केमोजी ॥ श्री. 10 ॥

छोड़ जोग ने भोग आदर तू,
सांभल सोवन वरणीजी
सुख विलसी ने संजम लेसा,
पछे करसां करणीजी ॥ श्री. 11 ॥

1. योग 2. भीगे हुए 3. वस्त्र 4. अजनबी 5. शरीर 2. छिपा कर

राजमती तो हिये विमासे,
जात वंत छै एहीजी ।
माडां[1] सील कदे नही भांजे,
तो हूं समझाऊं ते हों जी ।। श्री. 12 ।।

दूजी ढाल तो हूय गई पूरी,
राजमती कहो आगेजी ।
ऋषि 'रायचन्दजी' कहे मोक्षगामी ने,
रंग धर्म रो लागेजी ।। श्री. 13 ।।

– दोहा –

नीला[2] पेहरी लूगड़ा, ढांकी सकल शरीर ।
बोले सेणी साधवी, तूं सील म भांजै वीर ।। 1 ।।
शील बड़ोरे संसार में, सांभल नेम कुमार ।
शील विशे तूं स्थिर रह, कहूं मैं बारम्बार ।। 2 ।।

ढाल–3

(राग– सूत्र सांभल्यां म्हारा ग्यानी गुरुरे गोड़े ए)

आरजीयां ने एहवारे,
वचन कहीजै केम ।
इण भव मोने[3] आषडी रे,
जीवूं ज्यां लग नेम ।। 1 ।।

मुनिवर डिगजे नाय,
ते माठी विचारी मन माया ।
देवर डिगजे नाय,
तडफे थारो तन ।
तूं वाले शील रूपियो वन्न ।। मु. 2 ।।

---

1. जबरदस्ती 2. भोग हुए 3. पच्छखाण

तूं गामां नगरां विचरसी रे,
ज्यां त्यां देखसी नार ।
हरड़ वृक्ष तणी परे,
ते घणौ उठायौ भार ॥ मु. 3 ॥

हडि वृक्ष हेडो पडे रे,
वायु तणे प्रकार ।
अथिर हूसी थारी आतमा,
तूं रुलसी घणौ संसार ॥ मु. 4 ॥

तू वमीये री वंछा करे,
धिक थारो जमवार ।
भरणो श्रेय छै तो भणी,
तूं लीना महाव्रग च्यार ॥ मु. 5 ॥

गंधनकुल सरीखो किम हुवे रे,
बंधव साहमो जोय ।
चांरित्र चिंगामरण सारिखो,
तू कादा में मत खोय ॥ मु. 6 ॥

वमियो विष वांछे नहीं रे,
अगंधरण कुलनो सांप ।
भस्म हूय जावे आग मैं,
पिरण राखे कुलरी छाप[1] ॥ मु. 7 ॥

तूं अंधगव्रिषणु रो पोतरो रे,
समुद्र विजय रो पूत ।
कुल सामो देखे नहीं,
तूं काचा किम दे सूत ॥ मु. 8 ॥

1. गौरव

मधु बिंदु के कारणे,
तूं मुंडो दीयो मांड़ ।
अलप सुखारे कारणे,
तू हूसी जग में भांड ।।मु. 16।।

वचन सतीरा सांभली रे,
आयो ठिकाणे रहनेम ।
शील संयम बेहूं तणों,
रह्यो तो कुशल ने खेम ।।मु. 17।।

हस्ती ज्यू रहनेमजी,
महाव्रत राजल तांम ।
वचन रूपी अंकुश करी,
आण्यो धर्म रे ठांम ।।मु. 18।।

तीजी ढ़ाल पूरी थई रे,
ऋषि 'रायचन्दजी' कहे एम ।
राजमती सतीतणां,
गुण केहणी में आवे केम ।।मु. 19।।

ढाल–4

(राग– अल वेल्यानी)

भला वचन ते भाखिया रे लाल,
इम बोल्यो रहनेम ।
सुण साधवी ए,
महासती तू मोटकी रे लाल ।
तूं तारक जहाज है जेम ।। सु. 1 ।।

हूँ डिगियो ते थिरकियो रे लाल,
ए आंकडी-ते राखी म्हारी लाज सु ।
ते उपकार मोटो कियो रे लाल
जांणे रंक ने दीधो राज ।।सु. हु. 2।।

हूं समुद्र मांहे डूबतो लाल रे.
ते लीधो मोने झेल ।। सु ।।
हूं रूप कूप देखी पड्यो रे लाल
ते शील द्वीप में दियो मेल ।। सु. हु. 3 ।।

निखरा[1] वेण म्हारा नीसरया रे लाल,
मैं कुमती बोल्या कुबोल ।। सु. ।।
मोहनी म्होने लपेटियो रे लाल,
पिण राख्यो माहरो तोल ।। सु. हु. 4 ।।

हूं मतिहीणो मानवी रे लाल,
कुशीलीयो कंगाल । सु. ।
हूँ पापी पातर[2] गयोरे लाल,
पिण राख्यो माहरो माल ।। सु.हु. 5 ।।

तूं परमेश्वर सारखी रे लाल,
तूं भगवती वीतराग ।। सु. ।।
सतियां रो सिर सेहरो रे लाल
थारो शील वडो वैराग ।। सु. हु. 6 ।।

भूंड़ो मुंड़ो म्हारो रे लाल
भूंडा निकलिया म्हारा वेण । सु. ।
काया में कन्दर्प व्यापियो रे लाल
निरखतां डिगिया म्हारा नेण ।।सु.हु. 7।।

1. चलित हो गया 2. खराब

मैं नारी परीसो नां सह्यो रे लाल,
म्हारे प्रगटियो मनमें पाप । सु ।
मोटी सती ने मैं दियो रे लाल
सागर जितरो संताप ॥ सु.हु. 8 ॥

पुरुषां में उत्तम हुवो रे लाल,
रहनेमी अणगार । मु. ।
चलिया चित्त ने दृढ़ करें रे लाल,
ते विरला संसार ॥ सु.हु. 9 ॥

ए चोथी ढाल पूरी थई रे लाल,
रतनां ने लागी खोढ ॥ सु. ॥
जति जीति आतमा रे लाल
ऋषि रायचन्दजी कीनी जोड़ ।सु.हु.10।

ढाल–5

(राग– दुलहो मानव भक कांई तूं रे हारे)

थांरा मोह पडल[1] अलगा टल्या,
घट में प्रगट्यो ग्यान ।रहनेमी।
विषय जांणी विष सारिखा,
म्हारा वचन लिया थे मांन रे ॥रहनेमी. 1॥

थिर कर लीनी थारी आतमा,
थारो चित्त आय गयो ठांम ।रह.।
शील विषे ते थिर रयो,
परा गया पापरा प्रणाम रे ॥र.ते. 2॥

1. जाला (पर्दा)

ते तो मुगति रे साह्मा मांडिया,
सीलांगरथ ऊपर वेस रे।रहनेमी.।
पंथ लियो थे पाधरो[1],
शिव नगरी में जासी पेस[2] रे ।। र.ते 3 ।

जै मन ने मले मोकलो,
ते तो हूवो फर्जीत रे रहने.मी.।
मन ने जीते ते मानवी,
ते जावे जमारो जीत ।।रहनेमी.तं.।।4।।

थांरो मन जाय लागो मुगति सूं,
थारे गुरु ग्यानी री प्रतीत रे । रहनेमी ।
जस फेल्यो थारो जगत में,
थे शील सू मांडी प्रीत रे ।। र. ।। ते. 5 ।।

ते त्याग वैराग वधारियो,
तो ने मंत्री मिल्यो संतोप रे ।रहनेमी।
शील देवे सुख सासता,
थारे मुंडा आगे मोक्षारे ।।र. ।। ते. 6 ।

थारे तेज घणो तपस्या तणो,
पीधो समता रस भरपूर रे । रहनेमी ।
क्षमा खड्ग कर में ग्रह्यो,
थारा दुष्ट कर्म जासी दूर रे ।।र.।।ते.7।।

थे क्रोधने कांनै कर दियो,
मांन आगो दियो मेल रे ।रहनेमी।

1. सीधा 2. प्रवेश 3. बाहर

थांरी काया में माया नहीं,
लोभ पाछो दियो ठेल रे ।।रे. ते.।। 8।।

थे सवाद जीत्या रसना तणा,
थिर मन राख्यो थोभ[1] रे । रहनेमी ।
खाणे, पीणे, पहिरणे,
नहीं कोई लालच लोभ रे ।।र.।।ते.9।।

कांम दहण[2] क्रिया करी,
जिणथी मिटे मिथ्यात री जाल रे ।र.।
राग द्वेष ग्रांकुरा ऊगे नहीं,
कर्म वीज दिया बाल रे ।।र.।।ते. 10।।

ते तो दयामार्ग ऊजवालियो,
करमां सूं मांड्यो जंग रे । रहनेमी ।
थे चलिया चित्त ने घेरीयो,
तो ने घणो छे रंग रे ।। र. ।।ते. 11 ।।

'राजमती' 'रहनेमी' जती,
दो नुं ही केवल पांम । रहनमी ।
मुगति गया वेहूं जणां,
पाई ग्रविचल पदवी ठांम रे ।।र.।।12।।

ए पांचमो ढाल सुहावणी,
उत्तराध्येन तणे ग्रनुसार रे । रहनेमी ।
तिण ग्रनुसारे मैं कियो,
वुध सारू विस्तार रे ।। र. ।। ते. 13 ।।

1. थाम्भ 2. दग्ध

सील दृढ पंच ढालियो,
कियो दोय सूत्र में निचोड रे ।रहनेमी।
तिण अनुसारे माफ के,
ऋषि रायचन्दजी कीनीजोडरे ।र.ते.14

संवत अठोर चोपने,
जोवंतो नगर 'जोधांण' रे । रहनेमी ।
चरित्र कियो चौमास में,
मास असोज ग्रंथ मंडांण रे ।।रे.ते.15।।

इणथी अधिको ओछो कोइ आवीयो
तो मिच्छामि दुक्कड मोय रे ।रहनेमी।
ओ शीलवंता ने घणो सुहावसी,
गुणसी एक मन सांमो जोय रे ।र.ह.16।

मृग-लेखा

— दोहा —

आदीश्वर जिन आदि दे, चउविसमा महावीर ।
जेहने मुख-आगल हुआ, गौतम सम वजीर ॥ 1 ॥
देव अरिहंत दूजो नहीं, सिद्ध ने करूं सलाम[1] ।
आचार्य उवज्झाय धन, साधु साधे आतम काम ॥ 2 ॥
परमेश्वर मुझ पांच पद, हूं वांदू त्रिहुँ काल ।
दध[2] अक्षर दूरे करो, रचूं ग्रंथ रसाल ॥ 3 ॥
'मृग-लेखा' नी चउपई, चोखे चित नर नार ।
सांभलजो श्रोता थई, आलस ऊँघ निवार ॥ 4 ॥

ढाल—1

[राग:—नणदल हे नणदल चुड़ले जोबन झिल रहयो]

जंबू द्वीप ना भरत मां,
'सरस' देश सुखकार—सुन्दर।
'सरसवती' नगरी भली,
जाणे इन्द्रपुरी–अवतार। सुन्दर॥
सुणजो थे बात सुहावणी ॥ 1 ॥

अवंती सेन नरपति,
अय-गय-रथ-परिवार—सुन्दर
महाराणी मानोजती,
धरणी[3]-रूप उदार–सुन्दर ॥सुण.॥2॥

1. वन्दन 2. दग्ध 3. रखती थी

रूप अने जोवन तणो,
मिलिया दोनूं योग—सुन्दर ।
पुन्य-योगे सहु पामियो,
सयणां तणो संजोग- सुन्दर ।।सुण. ।9।।

ए पहली ढाल पूरी थई,
सुणता लागे प्रेम—सुन्दर ।
कोई बात बिचमां करजो मती,
रिख 'रायचंदजी' कहे एम-सुन्दर ।।10।।

- दोहा -

तिण काले ने तिण समे, धर्म-घोष अणगार ।
पुन-योगे पधारिया, साध अनेक परिवार ।। 1 ।।

मुनि बिराज्या बाग में, जोता जांरी बाट ।
'मृगलेखा' वांदण गई, घणी सखियां रे थाट ।। 2 ।।

राजा पण आयो वांदवा, वले घणा नर - नार ।
मुनिवर दीधी देशना, वाणी अमृत - धार ।। 3 ।।

ढाल—2

[राग.—अलबेल्या रा गीत री]

'मृगलेखा' इम बीनवे रे लाल,
जोडी दोनूं हाथ हो—सामीजी साहिब ।
थां समो व्हालो को नहीं रे लाल,
सो बातां इक वात हो—सामीजी ।। 1 ।।

कृपा करो व्रत दीजिये रे लाल,
थे अन्तर जामी आप हो-सामीजी ।
मैं गीतारथ गुरु भेटिया रे लाल,
ओलखिया पुण्य-पाप हो-स्वामीजी ।।कृपा.।।2।।

[1]अभी ठहरे मुझ आंखियां रे लास,
आज पावन हुई देह हो—स्वामीजी ।
समकित-रतन मैं पामियो रे लाल,
मैं दीधो मिथ्यात ने [1]छेह–स्वामीजी ।।कृपा.।।3।।

आहिज म्हारी आतमा रे लाल,
रहती हिंसा-धर्म में लाल हो-स्वामिजी ।
कुगुरु कुदेवां ने पूजती रे लाल,
आज निकल्यो मिथ्यात नो शाल हो। स्वा.।।4।।

के हूं रहती कितोल मां रे लाल,
सहेलियां रे साथ हो—स्वामीजी ।
अब जिन वचने राती रंग मां रे लाल,
भीनी साते धात-हो–स्वामीजी ।।कृपा।।5 ।

के खावरा-पीवरा-पहरणे रे लाल,
यूं ही गमावती दिन-हो स्वामीजी ।
अब सत-गुरु नी सेवा करूं रे लाल,
तिका घड़ी जाणूं धन-होस्वामीजी ।।कृपा।।6।।

मुझ नित करनी नवकारसी रे लाल,
नित वले चवदे नियम—स्वामीजी ।

---

1. अमृत 2. छोड़

वले नवकरवाली रो निश्चय कियो रे लाल,
ए जाव-जीव कियो एम. हो स्वामीजी ।।कृपा।।7।।

मृगलेखा मन धारिया रे लाल,
श्रावक - व्रत रसाल–हो स्वामीजी ।
रिख 'रायचंदजी' इम भाखियो रे लाल,
ए थई बीजी ढाल हो–स्वामीजी ।।कृत.।8।।

-- दोहा --

'मृग-लेखा' मन चिंतव्यो, अवसर केरी जाण ।
जे परणू तो समकिती, मिथ्याती नो पच्चखाण ।। 1 ।।
मृग-लेखा नी महिमा सुणी, 'सागरचंद' कुमार ।
रूप माँहि-रालियाणों, जाणे इंद्राणी - अवतार ।। 2 ।।
सागरचंद मन चिंतवे, परणू 'मृग-लेखा' नार ।
इण सुन्दर सूं सुख भोगवूं, करु कोड़ प्रकार ।। 3 ।।
कपट करी श्रावक हुवो, करे सामायिक नित्त ।
सेवा करे साधां तणी, एक नारी वस रही चित्त ।। 4 ।।
भर-जोवन थई भायणी, तात मात करे विचार ।
पुत्री ने परणावणी, भलो जोई भरतार ।। 5 ।।
'सागरचन्द' थयो समकिती, मिथ्या मत दियो छोड ।
देव कुमर ज्यूं दीपतो, सरीखी देखी जोड़ ।। 6 ।।
मृग-लेखा सागरचन्दजी, सखरे दिन सगाई कीध ।
ज्योतिषियां ज्योतिष जोयने, साहो थोड़ा दिनां में दिध ।। 7 ।।
सागरचंद मन हरसियो, चित्त मां लागी चूंप ।
मन्त्री साथे ले करी चाल्या स्त्री - देखण रूप ।। 8 ।।
सागरचन्द आयो सासरे, लुकि छाने रह्यो जोया ।
हिवे 'मृगलेखा' बेठी किण परे, सांभलजो सहु कोय ।। 9 ।।

ढाल—3

[राग:—फाग नी]

न्हाय धोय ग्र ंजनी करी,
कर सगला सिणगारोजी ।
बेठी बाजोटे ऊपरे,
दास्यां रे परिवारोजी ।। 1 ।।

कुमरी बेठी हो निज केलु में,
पानां रा बीड़ा चावेजी ।
श्री देवी जाणे सारखी,
सखी सहेल्यां में फावेजी ।।।कुमरी। 2।।

'चित्र लेखा' की दासी वड़ी,
'मृग-लेखा' चित्र लारे चालेजी ।
कोई दासी चवरी करे,
कोहक वायरो घालेजी ।।कुमरी।।3।।

एक दासी इसड़ी कहे,
बाई वडी पुन्याई थांरीजी ।
थे सागरचन्द ने परणसो,
भाग - जोगे भरतारो जी ।।कुमरी।।4।।

'चित्रलेखा' बलती कहे,
सागरचन्द सूं करी सगाई जी ।
पण ओ सगपण सखरो नहीं,
चाकरां री खोटी कमाई जी ।।कुमरी।।5।।

ए पराधीन ऊभा रहे,
वले धणी मेले जठे जावेजी ।
राजा रा मन ने रींझावे,
कामण [1]चीता कठे आवेजी ।।कुमरी।।6।।

वले साल घणा शोकां तणा,
तिका भांता भेद घलावेजी ।
कामण करवा कंत ने,
तिणसूं दूजी रे मेल में जावेजी ।।कुमरी।।6।

सागरचन्द सगो बले,
थांरो कदे न जाणो कोईजी ।
ए मद मांहे मावे नहीं,
मे लीनो जग में जोई जी ।।कुमरी।।8।।

वले करड़ी कहे राजा करे,
[2]हवाल घणा नृप घालेजी ।
कड़ा मोती वले पहरने,
बले काम कचेड़ी नो झालेजी ।।कुमरी।।9।।

गाथापति घर रो धणी,
विध सूं करे व्यापारो जी ।
पेटी पाटण - सारणी,
ज्यांरो सुख सिरदारो जी ।।कुमरी।।10।।

सागरचन्द बात सांभली,
ऊठी अंग में झालोजी ।

---

1. याद   2. बूरे हाल

रिख 'रायचन्द' कहे कुमरी तणी,
पूरी थई तीजी ढालोजी ।।कुमरी।।11।।

--- दोहा ---

'अंग दत्त' इक व्यवहारियो, भर-जोवन भरतार ।
पहली करतां सगाई तेह सूं, सुण सुकलाणी नार ।।

पिण आउखो थोड़ो तेहको, आदर शील संतोष ।
संजम ले हुसी केवली, ओ मुनिवर जासी मोक्ष ।। 2 ।।

अरिहंत आगूंच भाखियो, पछे न करी सगाई कोय ।
कन्या ने सुख वर तणो, निपट थोड़ो सो होय ।। 3 ।।

'मृगलेखा' इम सांभली, चित्र लेखा कही ते वात ।
विलखे मूंडे हुई भामणी, मनड़ो झोला खात ।। 4 ।।

ढाल–4

[रागः– माता तो ऊठ किसन-घर वाली]

मृगलेखा बोले सुण बहनी,
वो मुझ अन्तर जामी ।
हीये रो हार ने सिर रो सेहरो,
वो जीव मुगति रो गामी ।
बहनो ! म्हारी हूँ तेहनी बलिहारी,
उण प्रीतम तणा वारणा लीजे ।
एकण दिन मांहो वार हजारी ।। 1 ।।

पूर्व भाग विना मोने,
वो प्रीतम कठे पावे ।

अमृत थोड़ो तो पिण मीठो,
खल बोह ली कुण खावे ।।बहनी.।।2।।

मींडा नी [1]माता जो बीसज दूजे,
[2]महीश नी माता जो एक ।
अंगदत्त ने सागरचन्द देखतां,
कहो कठे लागे लेख ।।बहनी.।।3।।

सिंह तो एक महाबल वंतो,
हरिण हजार तो ही हारे ।
'अंगदत्त' नी जो हूं कामणी हुंती,
थोड़े ही सुख पेले पारे ।।बहनी.।।4।।

वो वश रह्यो मांहरे हिवड़ा बीच में,
नेह निपट हीज लागो ।
हूँ बिसरू नहीं वलिसर मांहरो,
एक पलक में लूं आगो ।।बहनी.। 5।।

हूँ उण रो जो देखती दरसण,
तो पावन होती मांहरी देह ।।बहनी.।।6।।

मोक्ष रो पामो, परम-पद-पामी,
हूं तस पगनी [3]खेह ।।बहनी.।।7।।

ए सागरचन्द सहु बात सांभलतां,
अंग में उठी जाणो आगो ।
आतो रूप में रूड़ी, पिण कालजे कूड़ी,

---

1. भैड़ 2. भैंसा 3. रज

इण रे पुरुष परायां सूं रागो ।
सागरचन्द मन-मांहे माठी विचारी ।

आ रमणी मन मांहे मेली,
आ कामणी कामण - गारी ।
आ अवगुण बोले बहु माहरा,
सागरचन्द ने रीस चढी भारी ।।सागर.।।9।।

ए चोथी ढाल तो होय गई पूरी,
रिख 'रायचन्दजी' कहे एम ।
मृगलेखा लेणे थी पड़ी देणे,
कर्मा सूं कीजे केम ।।सागर.।।10।।

--- दोहा ---

सागरचन्द खड्ग काढियो, मृग लेखा - मारण काज ।
जम-घर कर देऊं पहुंचती, जिम तीतर ने वाज ।। 1 ।।
मन्त्री कहे मारे मती, नारी - हत्या नो पाप ।
माठी - गत मांहे मेल दे, कह्यो जिणेसर आप ।। 2 ।।
परण मती ए पदमणी, दीजे कुमारी छांड ।
छोडूं तो एहने वर घणा, ए दुख किम पावे रांड ।। 3 ।।
तो हू परणी ने परिहरू, नहीं देखूं एह नो मुख ।
इण सरीखो एको नही, कामण ने कोई दुख ।। 4 ।।
झुरसी इण रो जीवड़ो, दाझसी इण री देह ।
कूढसी इण रो कालजो, मर मिल जासी खेह ।। 5 ।।
खबर होसी खेजड़ी, रहसी गन में [1]देण ।
दिन तो निकलसी दोहिला, रोतां जासी रेण ।। 6 ।।

ढाल–5

[राग – जंबू द्वीप - मझार]

मंत्री केरी बात,
मान 'सागरचन्द'
खड्ग धर्यो निज म्यान में ए ॥ 1 ॥

किण ही न जाण्यो कोय,
पाछा चालिया—
निज घर आया आपणे ए ॥ 2 ॥

जुगत सूं जाल बणाय,
सज्जन कुटुम्ब सहू ।
तात - मात हर्षित थया ए ॥ 3 ॥

लगन तणे दिन तेह,
पोहता सासरे ।
रंग - रली बेहूं कर रह्या ए ॥ 4 ॥

मृगलेखा कहे एम,
सखी बात सांभलो ।
अंग फरुक्यो माहरो जीमणो ए ॥ 5 ॥

किम चढसी चुडले रंग,
प्रीतम प्यार न राखसी ।
जाणूं चिंता होसी माहरे जीवने ए ॥ 6 ॥

आयो तोरण बांधण बींद,
सखियाँ देखियो ।
सागरचंद मूंडो सांवलो ए ॥ 7 ॥

मन में धुक रह्यो द्वेष,
पिण परणे पदमणी ।
सेठ जान जीमाई जुगत सूं ए ॥ 8 ॥

दत्त - दायजो वहु दीध,
चित्र - लेखा साथे ।
पीहर थी चाली पदमणी ए ॥ 9 ॥

जान आई बीद ने गेह,
मृग - लेखा पदमणी ।
[1]पदमा - सासू रे पड़ी ए ॥ 10 ॥

कुटुम्ब सहू करे बखाण,
ए वहू रूवड़ी ।
देखतां लोचन ठरे ए ॥ 11 ॥

वहु - जन करे बखाण,
भामणी ए भली ।
पिण इण सरखी एको नहीं ए ॥ 12 ॥

सागरचन्द नो द्वेष,
हिय मां धुक रह्यो,
हिवे आगे हुवे ते सांभलो ए ॥ 13 ॥

ए थई पांचमी ढाल,
रिख 'रायचन्द' कहे ।
कर्म री गत जाणे केवली ए ॥ 14 ॥

---

1. चरणे

ढाल–6

[रागः– आज शहर में बाईसा जोगीसर आया ए]

सागरचन्द ने कोप चढियो प्रचंडो,
हाथ में लीधो नागो [1]खंडो रे ।
आ नयणाँ नहि निरखूं रंडो,
मार करूं शत खंडो रे ।
कामण ने मति मारो कुंवरजी,
ए शीलवती सेणी सूंधी रे ।
अकल थे कांई विचारो ऊंधी,
कांई चढो थाने धूंधी रे ।। कामण ।।1।।

बेसाण दीधो हाथ झाली,
बात करो कांई काली रे ।
किण दोषी थांने शंका घाली,
आ कुबद कठा सूं चाली रे ।।कामण.।।2।।

आतो सगली बात में स्येणी,
रूप - रूड़ी मृग - नेणी रे ।
ए करड़ी कांय असाता देणी,
हित रो बातां केणी रे ।।कामण.।।3।।

थे पोते परणी ने घर आणी,
इण मुख में ते घाल्यो पाणी रे ।
थे तो इण सूं करड़ी ताणी,
ओ विवाह कीनो धूड़-धाणी रे।।कामण.।।4।।

---

1. तलवार

कुंवर कहे ए कामणी भूंडी,
कपट-तणी ए कूंडी रे ।
जिय धुतारे री खोटी हूंडी,
इण ने नाखो वेड़ में ऊंडी रे ।।कामण।।5।।

इण कामण सूं म्हारे काम न कांई,
इण ने कोई मती राखो घर-मांही रे ।
राजा कोपे तो हू वन में जाई,
जोगी होसूं भसमी लगाई रे ।।कामण.।।6।।

ए पूरी होय गई छट्ठी ढाली,
रिख 'रायचन्दजी' कहे क्रोध चडालो रे ।
कर्म कटे नहीं किणसूं ही टालो,
देखलो दीन-दयालो रे ।।कामण.।।7।।

--- दोहा ---

तात-मात मन चिंतवे, कुटुंब कहे सहु एम ।
पीहर परी पहुंचायदो, कीजे कुंवर सू केम ।। 1 ।।
सर्व सजाई ले करी, पाछी मेली पीर ।
विलखे मूंडे भामणी, नयणां बरसे नीर ।। 2 ।।

ढाल-7

[राग:- ऊंडो गाज्यो ने धुरखिये]

मृगलेखा मारग में कहे-सखी ! माहरी,
स्यूं कीधो भरतारो ए ।
परणी ने [1]धुर परिहटी-सखी !
म्हारो किम जासी जमवारो ए ।। 1 ।।

1. प्रथमबार.

विन अवगुण पीऊ परिहरी–सखी !
धेट - स्वभावी द्रोही ए ।
अन्यायी जावे नरक सातमी–सखी !
कपट कमाई जोई ए ।। 2 ।।

मैं तो पहली रात हीज परखियो–सखी !
मोने कदे ही न पूछी वाताए ।
मुझ सांमो ही जोतो नहीं–सखी !
मुख नहीं दीठो तित्त - मातो ए ।। 3 ।।

इण [1]ऊंधी अकल तणो धणी–सखी !
इण कीधो कवण अकाजो ए ।
भारी मिनखां रे बीच में–सखी !
भूंडो गमाई म्हारी लाजो ए ।। 4 ।।

पीहर [2]कांनी पग वहे नहीं–सखी !
मोने रही रही ने दुख आवेए ।
म्हारे आंसूंड़ा तूटे आंख थी–सखी !
म्हारो मनड़ो झोला खावे ए ।। 5 ।।

-- दोहा --

सखी कहे मन दृढ करो, कोई रोयां न देवे राज ।
हे सुख - लीनी सुन्दरी ! करो धरम रो काज ।। 1 ।।

रोई ने जो सर मरे, तोई वो न धरे नेह ।
इण प्रीतम रे कारणे, कांई [3]दझावे देह ।। 2 ।।

---

1. 2. ओर (तरफ) 3. जलावे

— ढाल वही —

कुमती कंतज थाहरो-बाई ! माहरी
भरतार नहीं वो वेरी ए ।
मूरख सूं मोह न कीजिये-बाई ! माहरी
कपटी मानस हुवे [1]गेरी ए ।। 6 ।।

पुन्य – हीन ए पापीयो-बाई !
फूट गयो इण रो हीयो ए ।
इण छेह दिखायो मद-छकिये-बाई !
धिग छे इण रो जीयो ए ।। 7 ।।

दोष न दीजे प्रीतम भणी-सखी !
किण ने न दीजे दुरासी ए ।
मैं पुन्य - पाप पोते संचिया-सखी !
जेता सुख दुख जोवड़ो पासी ए ।। 8 ।।

ए ढाल पूरी थई सातमी-सखी !
पदमण पीहर चाले ए ।
रिख 'रायचन्द' कहे विछोह व्हाला तणो-सखी !
साल तणी परे साले ए ।। 9 ।।

(सोरठा)

मृगलेखा कहे सुण बहन ! मैं पूरब पाप किया घणा ।
तिका उदय हुआ माहरे आय, विन भुगत्यां किम छूटिये ।। 1 ।।

---

1. पराया

सोवो एक धर्म सार वीतराग जे भाखियो ।
निर्मल नाथ नवकार, इण नाम रो मोने आसरो ।। 2 ।।

पीहर पोहती ठेठ, मृगलेखा मोटी सती ।
विलखे मूंडे देखी रान, हिवे सुणजो बात आगे घणी ।। 3 ।।

-- दोहा --

तात-मात भाई भोजाइयाँ, पूछे पीहरियो साथ ।
बिन आणे किम आविया, कहो बाई बीतक बात ।। 1 ।।

ढाळ-8

[राग:- मृगा पुत्र नी]

थे तो परणाई मोने प्रेम सूं हे माय,
पिण भूंडी कीनो भरतार हो-मातजी ।
मोने पहिलेहीज दिन परिहरी हे माय ।
म्हारो किम जासी जमवार हो-मातजी ।। 1 ।।

मोने प्रीतम नो दुख दोहिलो हे माय ।
तिण तटके तोड्यो नेह हो-मातजी ।
हूं आशा-अलूधो कामणी हे माय,
माहरी दाये अन्तर-देह हो-मातजी ।।मोने. 2।।

कंत विना जे कामणी हे माय,
दुखणी विसवा बीस हो-मातजी ।
जीव जाणे एक जेहनो हे माय,
के जाणे जगदीश हो-मातजी ।।मोने.।।3।।

बले जोवन में [1]जोखो घणो हे माय,
शील तणो साख्यात हो–मातजी ।
मोने चोखे चित नित पालणो हे माय,
सो बातां इक बात हो-मातजी ।।मोने.।।4।।

मोने परणी ने धुर परिहरी हे माय,
प्रीतम कोई न पूछी बात हो–मातजी ।
भोली हूं समझूं नहीं हे माय,
किण शोक घलाई घात हो–मातजी ।।मोने.।।5।।

कांई गांठ हिया री खोली नहीं हे माय,
हूं मन मां रही मुरझाय हो–मातजी ।
म्हारो जीव जंजाल में पड़ रह्यो हे माय ।
हूं [2]कुढने गईकुम्हलाय हो–मातजी ।।मोने.।।6।।

हूं जाय ने पोहती सासरे हे माय,
जठे प्रीतम काढी तरवार हो–मातजी ।
मोने कंत मारण ने ऊठियो हे माय,
पिण पकड़ी राख्यो परिवार–हो मातजी।।मोने.।।7।।

इण जुग मांही दोहिलो हे माय,
व्हालाँ तणो विजोग हो–मातजी ।
बीतराग - बेण देखताँ हे माय,
मोहण मोटो रोग हो–मातजी।।मोने.।।8।।

ए आठमी ढाल पूरी थई हे माय,
सुणिया बेटी रा बोल हो–मातजी ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे आगे सांभलो हे–माय,
गांठ हिया री खोल हो–मातजी ।।मोने.।।9।।

---

1. खतरा 2. गम के मारे

-- दोहा --

सुण बेटी री बारता, दिल मां उपनो दु:ख ।
तात - मात रहे सोच में, देख पुत्री नो मुख ॥ 1 ॥

तात-मात कहे पुत्री मणी, नेणां मत काढो नीर ।
करो धर्म मन दृढ करी, सुखे बेठी रहे तूं पीर ॥ 2 ॥

सेवा करो साधां तणी, भजो एक जिन-देव ।
दोलत मुझ घर दीपती, दीजे दान नित-मेव ॥ 3 ॥

ढाल—9

[वेरागी वालीयो]

मृगलेखा मन दृढ करी,
हो रही शील में लाल ।
विषय थकी मन बालोयो,
ज्ञान दियो घट मांहे घाल ।
वैराग मन मांहे बस रह्यो ॥ 1 ॥

प्रीतम ना सुख पदमणी,
मन में ना चितारे मूल ।
लागो रंग मजीठ ज्यूं,
रही शील में झूल ॥वैराग.॥ 2 ॥

बार अनंती मैं भोगव्या,
तृपतो न हुवो तन ।
जीव पावे सुख संतोष मां,
मृगलेखा रे बस रह्यो मन ॥वैराग.॥3॥

दास्यां ने कर दीधी [1]दोली,
इण ने पोल मां सूं परी काढोजी ।
चवूतरा ऊपर चढ न दीजो,
ज्यूं मन म्हारो राजी हुवे गाढोजी ।।आ.।।4।।

तूं ऊठ अठासूं पापण परी,
मुंह मचकोडी बोले [2]आंटीजी ।
एक [3]वडारण आणने पकड़ी,
मृगलेखा री गांठोजी ।।आ.।।5।।

पदमा - सासू रे पाये लागी,
कर जोड़ी कर सिलायोजी ।
मया करो सासूजी मो ऊपर,
मोने वेठी राखो इण ठायोजी ।।आ.।।6।।

सासू कहे म्हारे काम न कोई,
ऊभी मत रह आंख्या आगेजी ।
जो जाणे बेटो 'सागरचन्द',
तो मोने [4]बाघ होई लागेजी ।।आ.।।7।।

तूं छते धणी कांई पीहर बेठी,
मोन लोग - लुगाई बूझेजी ।
हूं तो बात करती हिवे लाजूं,
सुहागण ने सासरो सूझेजी ।।आ.।।8।।

बहू सुहागण हुवे सासूजी,
तिका सासरा मांहे सोभे जी ।

1. चारो ओर 2. टेढी 3. दासी 4 सिंह

पीहर मांहे पिण प्यारी लागे,
थोड़ा दिन जो [1]थोभेजी ।।ग्रा.।।9।।

कंत तो काल गयो, तिणरी कायण,
पीहर मांहे शील पालेजी ।
साध साधवियां री करे सेवा,
दोनूं कुल उजवाले जी ।।ग्रा.।।10।।

सासू बहू नो कह्यो सवादो,
पूरी थई दशमी ढालोजी ।
रिख रायचन्दजी कहे पद्मा सासू,
कर बेठी मूंडो कालोजो ।।ग्रा.।।11।।

– दोहा –

सागरदत्त सुसरो हिवे, पूछे पद्मा ने एम ।
किणरी छे आ कामणी, अठे बेठी छे केम ।। 1 ।।

मुंह मचकोड़ी होठ काटने पद्मा बोली कड़का मोड़ ।
ए धन्ना शाहनी डाकरी पुत्र आपणे दीधी छोड ।। 2 ।।

– सोरठा –

सुसरो ऊभो आय, मृगलेखा - मुख आगले ।
बहू ! सुणो मुझ बाय, सागरदत्त सुसरो कहे ।। 1 ।।

देई दिलासा भरपूर, पदमण ने पूछे प्रेम सूं ।
वहू ! कहो थांरी बात, तूं किम सासरे संचरी ।। 2 ।।

सुसरा ने शीश नमाय, मृगलेखा नीचे मुखे ।
लुक बेठी कर लाज, हिवे बोल सुणो थे बापजी ।। 3 ।।

1. रहे

के थांरा घर में मोने राखो,
ए तीनों ही बात मांयली भाखो ।।सुस.।।11।।

सुसरो कहे बात कही ते ठीक,
पिण वहू ! सुणे तूं माहरी सीख-सुस ।
तूं साक्षात सीता जैसी सती,
दूषण तोमे नही एक रती । सुस. ।। 12 ।।

इग्यारमी ढाल होय गई पूरी,
पिण वात घणी अजेस अधूरी-सुस. ।।
रिख 'रायचन्दजी' तो भाखी एम,
हिवे 'सागरदत्त' सुसरो कहे केम ।।सुस.।।13।।

ढाल-12

[रागः- नानो तो नाहलो]

हिवे सागरदत्त सुसरो कहेजी,
तूं वहू ! मोहन-वेल-सुहागण ! सांभलो ए।
हूं जाणूं माहरा मनमां ए,
हुई घणी तोमे हेल ।। सुहागण ।। 1 ।।

शीलवंती तूं सुन्दरी ए,
सतियां मां सरदार-सुहागण ।
हूं मुख दाखूं केतलाए,
गुण तोमें पेले पार ।।सुहागण।।2।।

तूं वहू ! सोना सारखी ए,
तोने कदे न लागे काठ-सुहागण ।
तूं शीतल चंदन सारखीए,
हीरां केरी तूं हाठ ।। सुहागण ।। 3 ।।

तूं सुगंध जेम सुहावणीए,
तूं पीतांबर जाणे पाट–सुहागण ।
तूं दुख पायो दिल मां घणो ए,
इतरा दिन उचाट ।।सुहागण।। 4 ।।

तूं कुलवती डीकरी ए,
मोटी तोमें लाज–सुहागण ।
उत्तम ताहरी आत्मा ए,
तें कीनो उत्ताम काज ।। सुहागण ।। 5 ।।

तें तप करने देही दमीए,
एकंतर कर उपवास–सुहागण ।
तें देही कीनी दूबली ए,
तोने छे शाबास ।।सुहागण।। 6 ।।

थारे अरिहत देव दिल मां वस्या ए,
निर्ग्रन्थ गुरु सूं प्रेम–सुहागण ।
दया-धर्म थारे दिलमां रुच्यो ए,
करे सामायिक नित्त-नेम ।। सुहागण ।। 7 ।।

तें कार न लोपी कुल तणी ए,
राखी रूड़ी रीत–सुहागण ।
तूं शील मांहे सेंठी घणी ए,
पूरी थारी प्रतीत ।।सुहागण।। 8 ।।

हूं जुदी बताऊं एक जायगाए,
थे दोनूं बेठी रहो एकण-ठाम ।।सुहागण।।
दान पुन्य कीजो घणो ए
कीजो धर्म नो काम ।। सुहागण ।। 9 ।।

खावण-पीवण-पहरण तणी ए,
हूँ करस्यूं साल-संभाल–सुहागण ।
कुमी न राखूं किण वात री ए,
बांधूं पाणी पेली पाल ।सुहागण।। 10 ।।

थारे सासू भेली वात वणं नहीं ए ।
पिव थारो परदेश - सुहागण,
तोने शील - प्रभावे सुख हुसी ए ।
थारो कट जासी कलेस ।।सुहागण।। 11 ।।

बारमी ढाल सुसरा तणी ए,
हरख्यो मृगलेखा रो मन–सुहागण ।
रिख 'रायचन्द' कहे संसार मां ए,
शील पाले ते धन ।।सुहागण।। 12 ।।

– दोहा –

मृगलेखा रहे सासरे, जे सुसरे बतायो ठाम ।
चित्रलेखा करे चाकरी, पाम्यो जीव आराम ।। 1 ।।

कोठारी ने बुलाय ने, 'सागरदत्त' कहे बात ।
चोखे चित्त करो चाकरी, मृगलेखा री दिन रात ।। 2 ।।

खावण-पीवण-पहरण तणा, साखरी कीजे सेव ।
ऊणारत कांई राखजे मती, भली तरे नित सेव ।। 3 ।।

सुसरे वात सखरी करी, राख्यो माहरो मान ।
राखी लाज भलो तरे, पुण्य योग - प्रमाण ।। 4 ।।

सागरचन्द आयो घरे, नही मृगलेखा सूं प्रीत ।
पिख भोने वेखे आवतो, बारी आडी चुणाई भीत ।। 5 ।।

सात बरस सती ने हुवा, तपस्या करतां तेह ।
रात - दिवस दोनूं जणी, धरती धर्म सूं नेह ।। 6 ।।

ढाल–13

[राग:– खड़का]

नृप बेठो सिहासणे एकदा आसण,
छत्र धरे ने चमर वीजे ।
सागरचन्द्र ने कहे हिवे नरपति,
भोमिया ने जाय बस कीजे ।
हिवे ते सुणे आगली बारता ।। 1 ।।

सागरचन्द ते चटक दे ऊठियो,
कियो सिलाम सिर - [1]पाव दीयो ।
कटक ले चढ्यो कुमर 'सागरचन्द',
नगर-नजदीक डेरो रे कीयो ।। हिवे ।। 2 ।।

तात - मात ने आय नमी करी,
वुलाय लिया सहू बहन-भाई ।
सज्जन कुटुंब मित्री सगला मिल्या,
रीस किण सूं नहीं राखी कांई ।। हिवे ।। 3 ।।

मृगलेखा पिण मन में इम जाणियो,
आज मो पर पिण करसी मया ।
मुझ आवसी मंदिरे प्रीतम इण परे,
अलिया गलिया सहू हुसी कह्या ।।हिवे।।4।।

---

1. सिर पेच-पगड़ी

करीय विछायत भली तरे भामणी,
सोले सिणगार करी नार सोचे ।
काढ सूं टीको ने चाढमूं मोती घणा,
पदमणी पिऊनी वाट जोवे ।। दिवे ।। 5 ।।

सागरचन्द तो डेरां दाखल हुवो,
मृगलेखा रे महलां नहीं आयो
मोह नगे वस आय गई मूर्छा,
मृगलेखा - मन दुख - पायो ।। दिवे ।। 6 ।।

रिख 'रायचन्द' कहे ए ढाल तेरमी,
जात कड़खा तणी हुई पूरी ।
चित्रलेखा सावधान करी तिहां,
पिण बात अजे सगली अधूरी ।।दिवे । 7 ।।

--- दोहा ---

शीतल घाली वायरो, छांट्यो निर्मल नीर ।
सावधान हुई सुन्दरी, पिण नेणा बरसे नीर ।। 1 ।।
आंख्या करी अति गलगली जिम तावडे मेल्यो मेण ।
हे सुलक्खणी मुन्दरी ! कांई रोय गमावे नेण ।। 2 ।।

ढाल—१४

[रागः– सती कहे सुण वीर]

सखी कहे सुण वेन,
काचो सगपण हे बाई ! ससार नो ।
किण रो सगो नही कोय,
मोह न कीजे बाई ! भरतार नो ।। 1 ।।

थे सेवा सत गुरु - साधरी,
हे बाई ! ते सखरी करी ।
तें सुण्या सूत्र - सिद्धान्त,
वेराग री बात हे बाई ! तूं परी बीसरी ।।2।।

बाई ! चितारो चवदे नेम,
पारो पचखाण ने करो पारणो ।
दीजे सूझतो दान,
धीरज मन हे ! धरोजे धारणो ।। 3 ।।

मुगत ऊपर दे मन,
इतरो दुख कीजे हे किण कारणे ।
गुरु जे बतायो ज्ञान,
वारी जाऊं ए गुरां रे बारणे ।। 4 ।।

भरतार केरा हे भोग,
वार अनंती दे भोगव्या भामनी ।
तृपतो नहीं हुवो तन,
कर्म तूं कांई हे बांधे कामणी ।। 5 ।।

सर्व जीवां ने खमाय,
इण विरिया बाई संथारो आदरो ।
जपो आदीश्वर - जाप,
सरणो लीजे बाई ! सतगुरु साधरो ।। 6 ।।

सुण ' चित्रलेखा ' रा वेण,
मृगलेखा हो मन मां सांचो जाणियो ।
चिंता दीनी सहू छोड,
समता-रस हो मन मांहे आणियो ।। 7 ।।

पूरी थई चवदमी ढाल,
रिख रायचन्दजी हो भाखी रूड़ी तरे ।
सुणजो हिवे नर-नार,
मृगलेखा हो आगे स्यूं करे ॥ 8 ॥

-- दोहा --

मृगलेखा निज-मन करी, अणसण लीधो एम ।
प्रियतम बुलावे तो बोलणो,नहीं तो जाव जीव मुझनेम ॥ 1 ॥

बेठी करने कावसग, जपती आदीश्वर जाप ।
मृगलेखा चित निर्मलै, परि हरिया सहू पाप ॥ 2 ॥

चक्रेश्वरी देवी हिवे, आसण कंप्यो देख ।
मृगलेखा रे ऊपरे, दीठो सागरचन्द रो द्वेष ॥ 3 ॥

देवी अवधि कर देखियो, ए मुझ धर्मण बेन ।
महासती ए मोटकी, चित्त इणारे करूं चेन ॥ 4 ॥

चक्रेश्वरी देवी तिहां, आई जिहां सागरचन्द ।
आधीरात रा एकली, सुणो देवी तणो संबंध ॥ 5 ॥

ढाल-15

[राग:-भाया भूली रे भामणी]

देवी वैक्रिय रूप बणावियो,
भर - जोवन होई नार रे,
रूप कियो रलियावणो ।
सजिया सोले सिणगार रे ॥ 1 ॥

आई आधी रात रा रोवती,
बले डब डब डुसका खाय रे ।
वले बिल बिल करती भामणी,
रोवती नहीं रहाय रे ।। आई. ।। 2 ।।

आ कुण रोवे छे कामणी,
अबला एका - एक रे ।
आई हेरे सागरचन्द रे,
वले बरनी रोवे विशेप रे ।। आई. ।। 3 ।।

सागरचन्द उठ आवियो,
तूं किम रोवे नार रे ।
तोने कुण दुख उपनो देह में,
कहो मुझ आगे सुविचार रे ।। आई. ।। 4 ।।

कहे प्रीतम माहरो पापियो,
मोने परिहरी पहली रात रे
मोने परणी ने घुट परिहरी,
दे हथलेवे हाथ रे ।। आई. ।। 5 ।।

माहरे प्रीतम मोने परिहरी,
मोने विन अवगुण भरतार रे ।
हूं कंत - विछोही कामणी,
हूं नाथ विना निरधार रे ।। आई. ।। 6 ।।

एक प्रधान राजा तणो,
माहरो हुतो भरतार रे,
कामदार सगा किण रा नहीं,
वले कपट तणा भंडार रे ।। आई. ।। 7 ।।

सागरचन्द वलतो कहे,
सगला मरीखा नही होय रे।
केई तो पत्थर सारिखा,
केई हीरा ज्यूं बले जोय रे ।। आई. ।। 8 ।।

कुमति कंतज ताहरो,
तोने छोड़ गयो भरतार रे।
नीच नहीं उण सारखो,
वो मूरख पेले पार रे ।। आई. ।। 9 ।।

तूं कांई बोले हे चालणी,
थारे अठोत्तर सो बेज रे।
थे परणी ने धुर परिहरी,
कांई न कीधी जेज रे ।। आई. ।। 10 ।।

तूं कूड़ बोले कपटी थको,
कुमती थारी कांसू वात रे।
कुमति आये बले जीवतो,
जूंझ मरीजे हाथ रे ।। आई. ।। 11 ।।

सागरचन्द बलतो कहे,
तें किम जाणी माहरी बात रे।
तूं तो नही दीसे मिनखणी,
तूं देव देवो साक्षात रे ।। आई. ।। 12 ।।

हूँ चक्रेश्वरी देवी अछूं,
सागरचन्द नमायो सीस रे।
तें मृगलेखा ने परिहरी,
तोने वरस हुवा इक्कीस रे ।। आई. ।। 13 ।।

भरम देवी सहू भांगियो,
तूं मृगलेखा ने खमाय रे।
उण अणसण लियो तो ऊपरे,
तूं वेगो जाय बुलाय रे ।। आई. ।। 14 ।।

ए पनरमी ढाल पूरी थई,
देवी भरी सती री साख रे।
सागरचन्द हरख्यो घणो,
रिख 'रायचन्द' इय भाखरे ।। आई. ।। 15 ।।

-- दोहा --

कहे सागरचन्द देवी भणी, ऊपर आधी रात।
हूँ जावूं सती कने, दो विधा मुझ हाथ ।। 1 ।।
देवी दीधी गुटिका, सागरचन्द हुवो उलास ।
उडजा तूं आकाश मां, जासी पदमण - पास ।। 2 ।।
जिहां मृगलेखा रो मेलड़ो आय ऊभो कुमार।
आडो जड़ियो देखने, [1]कूटण लागो किवाड़ ।। 3 ।।
भोगल दे बोली भामणी, कुण ऊभो छे बहार ।
सूर पुरुष सेना गया, लपटी रह्या लार ।। 4 ।।
ओ तो महल सती तणो, अठे नहीं पर पुरुषां रो काम ।
तब सागरचन्द बोलियो, दाखो - आपणो नाम ।। 5 ।।
कटक थकी हूँ आवियो, चक्रेश्वरी के बोल ।
मृगलेखा अणसण लियो, वेगो आडो खोल ।। 6 ।।
चित्रलेखा आडो खोलियो, पधारो प्रधान ।
मृगलेखा मोटी सती, करती आदीश्वर - ध्यान ।। 7 ।।

1. खटखटाये

ढाल-16

[रागः- सहेल्यां ए वांदो रूड़ा साध ने]

थे कावसग पालो नी पदमणी,
थे धर्मण थे धन्न के ।
खमो अपराध थे माहरो,
सफल फल्या तुझ पुन्न के ॥ 1 ॥

पीवड़ो हे घर आवियो,
चित्त घणो पायो चेन के ।
हरख हिया मांहे ऊपनो,
आज भलो दिन एन को ॥ पिवड़ो ॥ 2 ॥

थारा चक्रेश्वरी देवी गुण किया,
भाखे इम सागरचन्द के ।
मृगलेखा पीऊ ने वीनवे,
तुम दीठां उपनो आनंद के ॥ पिउड़ो ॥ 3 ॥

माहरा आज मनोरथ सहु फल्या,
[1]सीधा सहू बांछित काज के ।
प्रीतम महलां पधारिया,
भ्रांति गई सहू भाज के ॥ पिउड़ो ॥ 4 ॥

[2]जुहार कियो तिहां जुगत सूं,
चित्रलेखा दीधी आसीस के ।
पुन - जोगे आप पधारिया,
जीवजो कोड़ वरीस के ॥ पिउड़ो ॥ 5 ॥

---

1. सिद्ध 2. नमस्कार

सुख विलसे संसार ना,
मृगलेखा सागरचन्द के ।
दुख भूल गई सब भामणी,
पामी परम आनन्द के ।। पिउड़ो ।। 6 ।।

कंत कहे सुण कामणी,
दे गुटिका मुझ हाथ के ।
कटक मांहे हूं जावसूं,
प्रगटियो प्रभात के ।।पिउड़ो।। 7 ।।

इकवीस वरस सूं आविया,
पूरा रह्या नहीं इक रात के ।
थे झुरती मेल जावे सही,
पिण हूं आसूं थांरी साथ के ।।पिउड़ो।। 8 ।।

प्रीतम कहे सुण पदमणी,
हिवे नहीं कीजे [1]ताण ते ।
हूं आसूं बेग सलाब सूं,
तूं सेणी चतुर सुजाण के ।।पिउड़ो।। 9 ।।

सुख भोगविया ढाल सोलमी,
नारी बश कियो भरतार के ।
रिख रायचन्द कहे सांभलो,
हिवे आगलो अधिकार के ।।पिउड़ो।। 10 ।।

1. जिद्द

ढाल-17

[राग:- काची कलियां अनार की रे]

भामण कहे भरतार ने रे हां,
जोड़ो दोनूं हाथ-सुण सुण बालहा ।
थे चालो छो चाकरी रे हाँ,
पिण एक सुणो मोरी बात ।।सुण.।। 1 ।।

थे सुख विलस्या संसार ने रे हां,
पिण हूं कुलवंती नार ।

उपजसी [1]आधान जो माहरे रे हां,
[2]परतख वधसी पेट-सुण. ।
लोग करसी महारो [3]कदागरो रे हां,
कलक चढासी नेट ।। सुण. ।। 3 ।।

शंका धरसी शीलनी रे हां,
माहरो लागू होसी लोक-सुण. ।
कोई मर्म न जाणे मानवी रे हां,
मोने बोलसी भूंडा थोक ।। सुण. ।। 4 ।।

थे दो सहनाणी हूं देखावसूं रे हां,
ज्यूं भग जावसी सहू भरम-सुण. ।
लज्जा मोटी लोक नी रे हां,
रहसी म्हारी शर्म ।। सुण. ।। 5 ।।

एक नामांकित मूंदड़ी रे हां,
वले हिया नो हार-सुण. ।

---

1. गर्भ 2. परतक्ष 3. कदाग्रह

ए दोय सेनाणी राखो कने रे हां,
तूं सतवन्ती नार ।। सुण. ।। 6 ।।

थे वेगा आवजो वालहा रे हां,
घणी मत करजो जेज–सुण. ।
थे विसरो मती भामणी रे हां,
हिवड़े राखजो हेज ।। सुण. ।। 7 ।।

चित्रलेखा ने चालतां रे हां,
दीनो भोलावण बार-बार–सुण. ।
खावण–पीवण तणी रे हां,
कीजो सती री सार ।। सुण. ।। 8 ।।

सागरचन्द तो चालियो रे हां,
लसकर बहुलो लार–सुण. ।
तीन सौ कोसां तांई गयो रे हां,
जावे जीततो राड़ ।। सुण. ।। 9 ।।

मुख - कुम्हलाणी कामणी रे हां,
नेणा बरसतो नीर-सुण ।
मृगलेखा मुरझी रहे रे हां,
सूती ओढने चीर ।।सुण.।। 10 ।।

चित्रलेखा चित दृढ कियो रे हां,
सती बेठी सूरत सभाल–सुण.
रिख 'रायचन्दजी' कहे सतरमी रे हां,
पूरी थई ए ढाल ।। सुण. ।। 11 ।।

*

– दोहा –

पोसह पड़िकमणो करे, सामायिक नित मेव ।
चवदे नियम चितारतां, सारे सतगुरु-सेव ॥ 1 ॥
दीन प्रते दीन जणी, देवे अढलक दान ।
रात दिवस दिल मां वस्यो, एक धर्म नो ध्यान ॥ 2 ॥

ढाल–18

[राग – धर्म-दलाली चित्त करे]

पुत्र - रतन पेट ऊपनों,
मृगलेखा रे मात-मासोजी ।
करे गर्भ तणी अति-पालना,
चित्रलेखा रहे पासो जी ॥ 1 ॥

कर्म न छोड़े केह ने,
कुण साधु ने कुण सतीजी ।
कुण भूंडो ने कुण भलो,
कुण जोगी वले जतीजी ॥ कर्म. ॥ 2 ॥

मृगलेखा ऊभी महल में,
दीठी एकण दासीजी ॥
उदर-आधान देखी करी,
वात 'वात' आगे प्रकाशजी ॥ कर्म. ॥ 3 ॥

सासूजी आवे छे आगणे,
'मृगलेखा' खबरज पाईजी ।
मुखमल मिसर बिछाविया,
दे तकिया ने गादी बेठाईजी ॥ कर्म. ॥ 4 ॥

'पद्मा' सासूजी [1]पांगुर्या,
मृगलेखा सामी जायोजी ।
माथा रा केश खोली करी,
सासू रा पूंज्या पायोजी ।। कर्म ।। 5 ।।

मृगलेखा मस्तक मांडियो,
पदमा लातरी मारीजी ।
तूं वंश-[2]विगोवण ऊपनी,
तूं विष-जिम लागे खारीजी ।। कर्म. ।।6।।

सासू पूछे हे पापणी !
थे कठे लगायो कालोजी ।
तें शील - व्रत कठे भांगियो,
बोलती माठो गालोजी ।। कर्म ।। 7 ।।

चित्रलेखा ने बह्या [3]चामक्या
मृगलेखा ने पिण मारीजी ।
पद्मा नाम छे माहरो,
खबर पड़ेला थारीजी ।। कर्म. ।। 8 ।।

बहू सासू ने वीनवे,
भाखूं माहरी वातोजी ।
पद्मा कहे प्रकाश दे,
मति छाने राखो तिल-मातोजी ।। कर्म ।। 9 ।।

अठारमी ढाल पूरी हुई,
रिख 'रायचन्दजी' कहे एमोजी ।
मृगलेखा रे पाप उदय हुआ,
तिको कर्म सूं कीजे केमोजी ।। कम. ।। 10 ।।

---

1. आये 2. नाश करने वाला 3. हन्टर

ढाल-19

[राग.- थांरा नेणाँ रो पाणी लागणो मारूजी]

'पद्मा' सासू रे लागे पाय,
वे कर जोड़ ने—सासूजी ।
हूं भाखूं माहरी बात,
कपट कुल छोडने-।। सासूजी ।। 1 ।।

हूं शीलवंतो नार,
पुरुष जे पारका-सासूजी ।
ज्यांने निजरां हूं निरखू न कोय,
जामण-जाया-सारखा- ।। सासूजी ।। ।। 2 ।।

हूं कुलवंती नार,
रही शील पालती-सासूजी ।
कर आंबिल उपवास.
देही ने गालती- ।। सासूजी ।। 3 ।।

न पर-पुरुषां री प्रीत,
न [1]तेवडी तनमां—सासूजी ।
माहरे वस रह्यो हिया बीच,
सदा शील मन मां- ।।सासूजी।। 4 ।।

सुत थांरो 'सागरचन्द'
आयो आधी रात रो-सासूजी ।
उणरो ए आधान,
निर्णय ए वात रो- ।।सासूजी।। 5 ।।

1. इरादा

इकवीस बरसां में एक,
लागी मोने रातड़ी-सासूजी ।
ए देखलो दोय सहनाण,
आ मून्दड़ी हाथ री- ।। सासूजी ।। 6 ।।

भोसूं करने मेल,
पर-देश गयो पीउड़ो-सासूजी ।
पिण आज दियो थे आल,
दुखी हुवो जीवड़ो- ।।सासूजी।। 7 ।।

पर - पुरुषां रा पचखाण,
किया हाथ जोड़ने-सासूजी ।
मैं आदर्यो समकित शुद्ध,
मिथ्यात छोडने ।।सासूजी।। 8 ।।

पर - पुरुषां री प्रीत,
लेजावे नारकी-सासूजी ।
हूं तो नर तिको जाणूं नीच,
ताके नारी पारकी- सासूजी ।। सासूजी ।। 9 ।।

माहरे गुरां बतायो ज्ञान,
शील - धर्म भासियो-सासूजी ।
मैं किया शील रा कोड़ जतन,
रूडी तरे राखियो- ।। सासूजी ।। 10 ।।

माहरा शील री शंक,
कदे राखो मती-सासूजी ।
हूं कहो तो करूं धोज,
कठे ही न चूकी रती- ।। सासूजी ।। 11 ।।

शील में वडो मवाद,
भोग विप - सारखो ।
हूं तो त्यागूं भरतार रा भोग,
ताके कुण पारको- ॥ सासूजी ॥ 12 ॥

हूं तो शील मे पामी सुख,
तन मन म्है वश कियो-सासूजी ।
विषय सेव्यां हुवा दुख,
कलंक मोने थे दियो- ॥ सासूजी ॥ 13 ॥

ए थई उगणीसमी ढाल,
सासू - वहू तणी-सासूजी ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे एम,
यले वात आगे घणी- ॥ सासूजी ॥ 14 ॥

-- दोहा --

वड़को दे वोली पद्मा, हेलो दे मारी हाक,
माठो कर्मज तें कियो, काटीजे तुझ नाक ॥ 1 ॥
तें चोरी मून्दडी हाथ री. वले हिया रो हार ।
तूं होई चावे निरमली, धिक थारो जमवार ॥ 2 ॥

ढाल-20

[राग:- लाल ने लील करूंगी रे]

मुंह मचकोड़ी - कड़का मोड़ी-
कर कर राता [1]डोला ।
तूं कपट री कुंडी भामण भूंडी,
लेवे अणूता [2]ओला ॥

1. नेत्र 2 वाहन।

कामण ! कीनो कासूं ए,
काढूं घर रे मांसूं ए ।
तो जाणो पद्मा सासू ए ॥ 1 ॥

सागरचन्द तो माहरो बेटो,
तोने परणी ने परी छोडी ।
तूं बिगर बुलावे सासरे आई,
ए बातां वले मांडी ॥ कामण. ॥ 2 ॥

थारां महलां कानी माहरो बेटो,
कदेई पग ना देवे ।
तूं निजरां दीठी लागे अंगीठी,
थारो नाम कदेई न लेवे ॥कामण.॥ 3 ॥

तूं सागरचन्द रो गर्भ बतावे,
एहिज बातां अचूकी ।
तूं जोवन में राती - माती,
विषया - रस की भूखी ।, कामण. ॥ 4 ॥

तें मेली नाकी, नही कांई बाकी,
धिक थारो जमवारो ।
कुल ने कलक लगायो लंपटण,
कुण मूंडो देखे थारो ॥कामण.॥ 5 ॥

चित्रलेखा तो चित में मेली,
दुरमत रंडी दूती ।
मूंडीजे हिवे इणरो माथो,
वले दीजे माथा मां जूती ॥ कामण ॥ 6 ॥

सागरदत्त सुसरे पिण बोते,
प्रत्यक्ष दीठो पेट ।
बहू सांभल तूं बात हमारी,
पाछी पीहर जा परी थेट ॥ कामण. ॥ 7 ॥

सुसराजी ! मोने आल न दीजे,
बात विचारी भाखो ।
थांरो बेटो नहीं आवे ज्यां लग,
घर - भीतर मुझ राखो ॥कामण.॥ 8 ॥

बड़को देने पद्मा बोली,
जो सुसरो राखे घर मां आणो ।
तो पद्मा सासू नही पीवे पाणी,
हुय जावे धूल-धाणी ॥कामण.॥ 9 ॥

वीसमी ढाल तो होय गई पूरी,
रिख 'रायचन्दजी' कहे एम ।
गाढो सोच हुवो सती ने,
कर्मां सूं कीजे केम ॥ कामण. ॥ 10 ॥

--- दोहा ---

कुटुंब सहू दुषमण हुवो, पलट गयो परिवार ।
सुसरो ते पिण फिर गयो, दुष्ट कर्म दातार ॥ 1 ॥
हिवे मृगलेखा ने किण परे, काडे घर सूं बार ।
एक घडी राखो मती, दुष्टण दुराचार ॥ 2 ॥

ढाल–21

[राग:– तिण अवसर मुनिराय]

सहू कोई दुसमण होय,
जोर न लागे कोय–करम-वश ।
[1]वे जणी ऊभी बापड़ीए ॥ 1 ॥

नयणे तो झर रह्यो नीर,
जाणे फूट गयो हियो हीर–करम-वश ।
विण आधार ज्यूं वेलड़ी ए ॥ 2 ॥

डब डब डुसका खाय,
छाती फाटी जाय–करम-वश ।
ओछे जल जिम माछली ए ॥ 3 ॥

मूंडो तो कालो कीध,
वचनां सू नाख बींध–करम-वश ।
मुख - कुमलाणी कामणी ए ॥ 4 ॥

कालो पहरायो वेश,
बिखर्या माथे रा केश–करम-वश ।
कालो गाडी ने काला बलदिया ए ॥ 5 ॥

जाय पहुंची पीहर रे पोहर,
पाली हुई जिहां वेर–करम-वश ।
नीकली ऊभे बाजार बे जणी ए ॥ 6 ॥

1. दोनों

कोई कहे आयो इण ने आल,
आ सुन्दर सुकुमाल–करम-वश ।
शीलवती ए सुन्दरी ए ॥ 7 ॥

कोई कहे कीधो कर्म,
दीठो गर्भ रो मर्म–करम-वश ।
लोग मन मां आवे ज्यूं दाखता ए ॥8॥

पहरण कालो चीर,
नयणो वरसतो नीर–करम-वश ।
पीहर पहुंची पदमणी ए ॥ 9 ॥

भाई भोजाई मात तात,
पण किण ही न पूछी वात–करम-वश ।
आवती देख ने आडो दियो ए ॥ 10 ॥

एकण आण दीनी गाल,
तें कीधो कर्म चंडाल–करम-वश ।
अठे ऊभी मत रह अब घड़ी ए ॥ 11 ॥

प्रगट्यो [1]पेलंतर पाप,
फिर बैठा माय-बाप–करम-वश ।
मृगलेखा मन चिन्तवे ए ॥ 12 ॥

वैरी तो हुय गया वीर,
पूरो पड़िया नहीं म्हारे पीर–करम-वश ।
जाणे कपड़ा लागू होय गया ए ॥13॥

1. पूर्व जन्म

किण माये तें कीजे रीस,
इम भाख्यो जगदीश-करम-वश।
म्हारा कर्म मोने भोगवणाए ।। 14 ।।

पिव माहरो परदेश,
जठे गयां करसी कलेश-करम-वश।
हूं पिव कने जासूं पाधरी ए ।। 15 ।।

चित्रलेखा एक साथ,
करतो तिणसूं बात-करम-वश।
शीलवती ए सुन्दरी ए ।। 16 ।।

चित्त शरणा धरे [1]च्यार,
निर्मल नाम नवकार-करम-वश।
मृगलेखा मन वस रह्यो ए ।। 17 ।।

पूरी थई इकवीसमी ढाल,
पिण नहीं कटियो जंजाल-करम-वश।
रिख 'रायचन्दजी' कहे आगे सांभलो ए ।।18।।

ढाल-22

[राग - सूवटिया नी]

पोल ऊपर बेठो बोले माता-2
कर कर वा [2]डोला राता।
तें माहरो दूध लजायो हे वालूड़ी ए-2
केने ते मून्डो दिखायो ।। तें. ।। 1 ।।

---

1. अरिहन्त, सिद्ध, सुसाधु, केवली प्ररूपित धर्म 2. आखें

नांज तूं माहरा उदर मां आई,
फिट-[1]फिट थारी - कमाई–तें ।
तें सासरिया में सरम गमाई,
वले ओ धन लेने आई ।। तें. ।। 2 ।।

बिखर्या केश ने कालो वेश,
ते पीहर कियो प्रवेश–तें ।
ते नगरी मांहे गमाई नाकी,
तो में नहीं कांई बाकी ।। तें. ।। 3 ।।

तोने कुण घरमां घाले,
तूं शाल तणी परे शाले–तें ।
सातमो पास पेटज थारे,
धूल पड़ी शिर म्हारे– ।। तें. ।। 4 ।।

भूंडी तें काम कियो भूंडो,
हूं कठे दिखाऊं अब मूंडो–तें ।
मोने आल आयो मोरी माई,
तूं शंका राखे मत कांई ।। तें. ।। 5 ।।

मैं नहीं दूध लजायो मोरी माता,
तूं कांई करे डोला राता–ते ।
कहूं गर्भ तणी सहू ए बात,
सांभल जे मोरी मात ! ।। ते ।। 6 ।।

माहरो प्रीतम माहरे मेलां आया,
मोने देई सहनाणी सिधाया–तें ।

1. आखों

सुख भोगविया मैं प्रीतम साथे,
वरस इकवीस मांहे एक रात ।। तें. ।। 7 ।।

माता बेटी री बात न मानी,
छिप बेठी एकरण – कानी तें. ।
ज्यां लग ऊभी रहे तू एम,
तो मोने जीमरण रो नेम ।। तें. ।। 8 ।।

बावीसमी ढाल हुय गई पूरी,
पिरण अजेस बात अधूरी-तें ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे सुरणजो आगे,
जो थांने बल्लभ लागे ।। तें. ।। 9 ।।

--- दोहा ---

चित्रलेखा कहे सांभलो, मूरखरणी तुम मात ।
पिता थांरो पापियो, भाई भोजाई विख्यात ।। 1 ।।

कड़वो मत बोले कामरणी, दीजे न किरण ने दोष ।
सुख दुख पावे संचिया, पाछो मारीजे रोष ।। 2 ।।

कोस अठासूं तीन सौ, जिहां छे मुझ भरतार ।
पीहर थी चाली परी, दुर्बल दोनूं नार ।। 3 ।।

ढाल–23

[रागः– आदर जीव क्षमा-गुरण आदर]

चित्त उदास चाली मृगलेखा,
चित्रलेखा परण साथजी ।
पाली दोनूं ही मारग चाले,
पिरण [1]रोही मां पड़ गई रातजी ।। चित्त. ।। 1 ।।

1. सून्यारण्य (जंगल)

हुई दिशा-[1]शूली, मारग भूलो,
अटवी विषम अपारजी ।
भूखी तिरखी भमे वन मांही,
निपट थई निरधारजी ॥ चित्त ॥ 2 ॥

नवकरवाली जपे निज मन में,
चित्त सरणा धरे चार जी ।
सागारी अणसण ले सूवे,
वले चवदे नेम चितार.जी ॥ चित्त. ॥ 3 ॥

सिंह-चीता सांप सुता देख,
रोज सांभर ने रींछ जी ।
किणरो ही जोर न चाले कोई,
पड़िया आख्यों मीच जी ॥ चित्त. ॥ 4 ॥

तीन दिवस तांई दुख दीठा,
कांटा पग दिया बींधजी ।
रोती दोनूं विल-विल करती,
नयणां न आवे नीन्द जी ॥ चित्त. ॥ 5 ॥

चोथे दिन सती ने मिलियो,
वादल केरो साथ जी ।
'चित्रगुप्त' नायक हिवे पूछे,
कहो बाई थांरी बात जी ॥ चित्त. ॥6॥

बेठ जावो थे दोनूं बायां,
ज्यूं पायो आरामजी ।

1. पथ भृष्ट

विणजारी पिण पाये लागी,
पूछ लिया बेहूं ना नामजी ।। चित्तं. ।। 7 ।।

तीन दिवस नी भूखी तिरखी,
पिण जुगत सूं दीवी जीमायजी ।
कांटा काढ किया पग निरमल,
बेसाणी गिदरो विछायजी ।।चित्तं.।। 8 ।।

नायक - आगल कही पाछली,
बीतक सगली बात जी ।
मोने आल देई ने काढी,
सागरचन्द माहरो नाथजी ।। चित्त. ।। 9 ।।

विणजारो कहे सांभल बाई !
तूं आई जा मोरे साथ जी ।
हूं पिण बालद कटक ले जाऊ,
सो बातां एक बातजी ।।चित्त.।। 10 ।।

मृगलेखा जे साता पामी,
हुई तेवीसमी ढाल नी ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे सुणजो,
आगलो संबध रसालजी ।। चित्त. ।। 11 ।।

ढाल–24

[राग:-मोरी बहनी कहो कांई अचरज बात]

हिवे मृगलेखा मोटी सती,
धरम करे नित मेव ।
भाई [illegible] बे जणा,
सारे [illegible] सेव ।।

वीरा ! विणजारा रे जिन-धर्म सार,
भव - जल मांहे जहाज है,
पहुंचावे भव - पार ।
देव - अरिहंत, गुरु निर्ग्रन्थ,
धर्म दया - सुध सार ॥ 1 ॥

दान शील तप भावना,
शिव-पुर मारग च्यार ।
सती धर्म सुणावियो,
प्रति बोध्यो परिवार ॥ वीरा. ॥ 2 ॥

विणजारे व्रत आदर्या
विणजारी व्रत धार ।
बाई उपगार मोटो कियो,
धरता धर्म नो प्यार ॥वीरा. ॥ 3 ॥

हिंसा - धर्म ने परिहर्यो,
परिहर्या जाटा पाप ।
चोखे चित्त च्यारे जिणा,
करता जिनवर - जाप ॥ वीरा. ॥ 4 ॥

चोवीसमी ढाल पूरी थई,
प्रति बोध्यो विणजारा रो साथ ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे सांभलो,
आगली वलो वात ॥ वीरा. ॥ 5 ॥

– दोहा –

केईक चाकर छोकरी, विणजारा ना तेह ।
लेवा जावे इन्धणी, वन - खन्ड मांहे जेह ॥ 1 ॥

मृगलेखा कहे सुण सखी, तूं पिण इन्धण आग ।
चित्रलेखा गई वन-मध्ये पिण आंधी गई अपाण ॥ 2 ॥

चित्रलेखा अटवी मां पड़ी, पकड ले गया चोर ।
दुख माहे दुख ऊपनो, देखो पाय अघोर ॥ 3 ॥

मृगलेखा वातज सांभली, जाणे लागो तीर ।
मुरछागत धरणो पड़ी नयणां छूटा नीर ॥ 4 ॥

तूं चिंता मत कर हे वहनडी, हूं वेगी करसूं वार ।
चित्रलेखा ने लावसूं, करसूं कोड़ प्रकार ॥ 5 ॥

ढाल–25

[राग – चौपाई]

मृगलेखा मन चिंतवे आय,
पोते माहरे बहुला पाय ।
हूती मारे कलेजा री कोर,
तिण ने पकड़ ले गया चोर ॥ 1 ॥

ते हुती मुझ प्राण - आधार,
किय जासी माहरो जमवार ।
दुख मांहे दुख हुवो घणो,
चित्त मांहे 'चित्रलेखा' तणो ॥ 2 ॥

मैं पाप किसा किया पापणी,
आलोयणा कीधी आपणी ।
भव - भव मांहे पाप मैं किया,
तिण करमा मुझ ने दुख दिया ।। 3 ।।

चोर - पल्ली नो आयो नाथ,
बालद लूंटण लायो साथ ।
साथ ले विणजारो चढियो,
चोर - पल्ली सूं जाय अड़ियो ।। 4 ।।

माहो - मांहे हुवो संग्राम,
कोई सुभट रह्या तिण ठाम ।
मांहो - मांहे रोलो हुवो,
विणजारो पिण रण में मुवो ।। 5 ।।

विणजारी पिण न्हासी गई,
'मृगलेखा' अकेली रही ।
मच गई बालद में लूट,
मृगलेखा पण चाली ऊठ ।। 6 ।।

मारग भूल कियो वन वास,
अबला नारी हुई उदास ।
रोही सूंनी दंडाकार,
पिण निर्मल नाम जपे नवकार ।। 7 ।।

पूरी थई पचीसमी ढाल,
पिण सतो ने दुख हुवो असराल ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे आगे सुणो,
चरित्र मृगलेखा रो घणो ।। 8 ।।

ढाल–26

[राग:– कर ही नी]

वन मांहे भमती थकी, आधी रात रे मांयोजी ।
पूरे मासे पदमणी, पुत्र - रतन तिण जायो जी ॥ 1 ॥

भामण अकेली विलविले, नेणां वरसे नीरोजी ।
कठे रह्यो पीहर-सासरो कठे नणदी रो वीरोजी ॥ भामण. ॥ 2 ॥

वोवो दे हुलरावती रण में रात रा रोवे जी ।
कांई जावा ने नहीं जायगा, कुण कपड़ा म्हारा धोवेजी ॥ भा. ॥3॥

चित्रलेखा पिण वीछड़ी, [1]दिलकेड़े चालती दासीजी ।
कुण रुखवालो माहरो नानड़ो, म्हारे पड़ी गलां मां पासीजी ॥भा.॥4॥

एतो दंडकाकार डसवणो, सरप वोले सिंह गूंजेजी ।
वले वेदन व्यापी गरभनी, वेठी वापड़ी सिर धूजे जी ॥भा.॥5॥

दिन ऊगो ने ऊठी कामणी, सरवर पेखी पालोजी ।
सरवर जाय न्हावण करूं, अशुचि परी वे उठालोजी ॥भामण ॥6॥

एक सूनी साल देखो करी, कपड़ा मां वींरियो बालो जी ।
एं मूंदड़ो हाथ री वांध ने, मेल्यो वालक तिण कालो जी ॥भामण॥7॥

सरवर पोहती सुन्दरी, देखो निर्मल नीरो जी ।
मृगलेखा मजन करी, निर्मल कियो शरीरो जी ॥ भामण ॥ 8 ॥

साल मां सूतो [2]डावड़ो, सरवर वेठी मातोजी ।
अचिरज एक हुवो जिको, सुणजो बालकनी वातो जी ॥भामण ॥9॥

ए छावीसमी ढाल मां मृगलेखा महादुखियारी जी ।
रिख रायचन्दजी कहे वालक ना पोते पुन्य छे भारीजी ॥भामण॥10॥

---

1. पाछे 2. बच्चा

- दोहा -

एक सेठ अपुत्रियो ले गयो, वालक ने तिणवार ।
इण रो चरित्र पिण छे छतो, चालसी आगे अधिकार ।। 1 ।।

न्हाय धोय मंजन करी, पाछी आई भाय ।
पुत्र न दीठो पदमणी, मृगलेखा गई मुरझाय ।। 2 ।।

पुन्य - हीण हूं पापणी, किण अपहर्यो मुझ बाल ।
के किण ही हिंसक भख्यो, दोहिली पेट री जाल ।। 3 ।।

ढाल-26

[राग - दूजो परीसो दोहिलो]

बाल - विछोहो दोहिलो, जाणे जननी रो जीव ।
के इक जाणे केवली, करती रन मांहे [1]रीव । बाल. ।। 1 ।।

हाय हूं कांय सरजी मिनखणी, दुख सहवाने काज ।
गरभ में कांय गली नहीं, हूं किम राखू माहरी लाज ।। बाल. ।।2।।

रण मांहे रोवती थकी, खांचे माथा रा केश ।
हिवड़ो लागो फूटवा, करनी काया - कलेश ।। बाल ।। 3 ।।

कहे म्हैं साध संतापिया, पड़ी पेट में झाल ।
लूस्या मैं किण रा कालजा, दीना कूड़ा मैं आल ।।बाल.।।4।

के मै कामण - टूमण किया घणा, गरभ दीना मैं गाल ।
के शोक मारी पापणी, के फोड़ो सरवर - पाल ।। बाल. ।। 5 ।।

मैं पूरब पाप किया घणा, कहतां नही आवे पार ।
मृगलेखा मन चिंतवे, हूं दुखियारी नार ।। बाल. ।। 6 ।।
कोई रोयां तो राज मिले नही, वेठी सुरत संभाल ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे दोष कर्म ने हुई सतावीसमी ढाल।।बाल.।।7।।

---

1. रुदन

– दोहा –

मृगलेखा मोटी सती, धिरप धरी मन मांय ।।
शीले - सरवर झूलती, तिका सती धन थाय ।। 1 ।।

वनमां भमती भामणी, दुख सहती दिन - रात ।
हिवे भाखूं भलीतरे बीतक सगली बात ।। 2 ।।

ढाल–28

[राग:– कोयलो पर्वत धूंधलो रे लाल]

एक 'ललना' नामे गूजरी रे लाल,
मृगलेखा ने कहे एम हो–बाईजी !
वन-वासे रा दुख दोहिला रे लाल,
थांसू सह्या जासी केम हो ।।बाईजी।। 1 ।।

आप पधारो घर मांहरे रे लाल,
सुख-दायी म्हारो [1]साल-गाम हो–बाईजी !
हूं चित्त लगाय करसूं चाकरी रे लाल,
थे कोई मत करजो काम–बाईजी ! ।।आप।।2 ।।

आ देही तो थांरी दूबली रे लाल,
सुवावड़ रो न मिलियो संयोग हो–बाईजी !
थे कुढ कुढ काला पड्या रे लाल,
वले व्हालां रो पड्यो विजोग हो–बाईजी !

म्हारे दूध दही ने घी घणो रे लाल,
वले चोखा चावल-दाल हो–बाईजी ।।

1. भवन

सूंठ जीरे रा लाडू जुगत रा रे लाल,
अजमो ने गून्द रा फूला विचाल हो-वाईजी ! ।।आप ।4।

वले तलमां ने फीणा रोटियां रे लाल,
वले तरकारी पिण सार दो-वाईजी !
गावो घी ने वले खीचड़ी रे लाल,
घर ले आई गूजरी नार-वाईजी ! ।।आप।। 5 ।।

कपड़ा नवा नकोर पहरावियाा रे लाल,
वले गूंथ्या माथा रा केश हो-वाईजी !
मृगलेखा कही वात आपरी रे लाल,
पिव म्हारो परदेश-हो-वाईजी ! ।। आप ।। 6 ।।

खाता पीतां ने पहरतां रे लाल,
वले पाछो प्रगट्यो रूप हो-वाईजी !
पिण शुद्ध मन शील पालती रे लाल,
चित्त मांहे धरम री चूंप हो-वाईजी ! ।। आप ।। 7 ।।

सामायिक नित सात सचिव रे लाल,
चित्त नित पाम्यो चेन हो-वाईजी !
मृगलेखा रे शीलथी रे लाल,
मिलियो ठिकाणो एन-हो-वाईंजी ।। आप ।। 8 ।।

ए ढाल थई अठावीसमी रे लाल,
रिख 'रायचन्दजी' कहे एम हो-वाईजी !
वात सती की वले आगली रे लाल,
सांभलजो धर प्रेम हो-वाईजी ।। आप ।। 9 ।।

– दोहा –

सुख - साता पाई सती निर्भय थाई निःशंक ।
पाप न छोडे पाछला, देखो कर्मा री बंक ॥ 1 ॥
'वसंतपुरी' नगरी वसे, 'बसतो' करे व्यापार ।
घी लेवे गूजरी तणो, राखे घणी उधार ॥ 2 ॥

ढाल–29

[राग:– धूमाल नी]

'वसतो' आयो वाणियो हो,
गूजरी रे घर मांय ।
मृगलेखा देखी मन-मोहियो हो,
कंचन - वरणी देखी काय ।
वसतो मन मांहे चितवे हो ॥ 1 ॥

इण रो सुन्दर रूप सुहावणो हो,
ए भर जोवन मोटियार ।
इण सेतो सुख भोगवू,
कर कर कोड़ प्रकार ॥ वस. ॥ 2 ॥

ए महामिथ्याती जीवड़ो हो,
विपय - विलुद्धो प्रेम ।
गूजरी कने जायने हो,
कपट केलवे पापी केम ॥ वस. ॥ 3 ॥

गुजरी ! सुण बात माहरी हो,
हूं कहूं हित - जाण ।

ए कामणी राखी भली नहीं हो,
ए घर जावण रा मंडाण ॥ वस ॥ 4 ॥

जो राजा बात जाणसी हो,
तो हुसी घणो तोमे हवाल ।
लूट लेसी घर ताहरो हो,
देसी वले भाकसी में घाल ॥ वस. ॥ 5 ॥

गूजरी कहे सुण सेठजी हो,
मैं भोले आणी घर मांय ।
थे मया करो मो ऊपरे हो,
म्हारा घर सूं थे परी ले जाय ॥ वस ॥ 6 ॥

कपटी कपट इसो रच्यो हो,
मृगलेखा ने खवर न कोय ।
पिण रूप वेरी नारी तणो हो,
लागू तिण रा पग पग होय ॥ वस. ॥ 7 ॥

रिख 'रायचन्दजी' इम भणे हो,
पूरी हुई गुणतीसमी ढाल ।
मृगलेखा रा जीव को हो,
चूको नहीं अजेस जजाल ॥ वस. ॥ 8 ॥

— दोहा —

मृगलेखा सूती नींद मा गाडा में मांचो मेल्यो सेठ ।
निज - घर लायो वाणियो, रात रा [1]थेटा थेट ॥ 1 ॥

---

1 निज स्थान पर

मेली तीजी भोमका, मृगलेखा गई जाग ।
धिक धिक म्हारा रूपने, अब अबकी चरणी अथाग ।। 2 ।।
'वसतो' मन मांहे चिंतवे, हूं विलसूं काम - भोग ।
रात जो वेगी पडे, तो सुन्दर मिले संयोग ।। 3 ।।

ढाल-30

[राग:- मोरा साहिब हो श्री शीतल नाथ के]

मृगलेखा हो करे मन-मांहे सोचके,
रही रही ने बले रोवती ।
बापड़ी बेठी हो दे इगलोथे हाथ के,
नीचो धरती सामो जोवती ।
वस रह्यो मन मांहे शील के,
मृगलेखा मोटी सती ।। 1 ।।

रात पड़ी हो अंधारो घोर के,
'वसतो' विषय-रस-वाहियो ।
पावन-फूल हो अत्तर लेई गुलाब के,
कामरण - काजे आवियो ।। वस. ।। 2 ।।

पावड़िये हो चढियो धर प्रेम के,
पापी पाछले बारणे ।
भली वहू हो लागी म्हारे हाथ,
हूं वारी जाऊं वहूरे बारणे ।। वस. ।। 3 ।।

मृगलेखा हो जपे जगनाथ के,
अरिहंत-ध्यान हिरदांमांहे आणियो ।
सार कीजो हो माहरी शासन-देव के,
ओ वुरीगार छे वाणियो ।।वस.।। 4 ।।

वसतो चढतो हो वले तीजी भोम के,
सती रो शील जोरो कर्यो ।
नीचो माथो हो ऊंचा पापी रा पांव के ।
धम देने धरती पड्यो ॥ वस. ॥ 5 ॥

तीखा पत्थर हो पड़िया तिरा हेट के,
भाटा ने वले कांकरा ।
हाड भागा हो माथो गयो फूट के,
ए दुख पराई वेर रा ॥ वस. ॥ 6 ॥

धमको सुरा ने जागी घर नार के,
च्वड़े कूको पाड़ियो ।
लोग आया हो लाठी मूसल लेय के ।
वसता ने बले मारियो ॥ वस. ॥ 7 ॥

वसतो मुवो हो माठा ध्यान रे मांयके,
नीची गत गयो नारकी ।
भव दोनूं मांही हो देखलो दुखके,
कोई नार मती ताकजो पारकी ॥वस.॥ 8 ॥

चोर जाणी हो हुई हेला - हेल के
मृगलेखा तो निकल गई ।
रिख रायचन्दजी हो कही तीसमी ढाल के
सती जाय वन में रही ॥ वस. ॥ 9 ॥

– दोहा –

दिन ऊगां देखी ओलख्यो, वसतो उवो भांड ।
पोता री पिरा पदमणी, कीधी तिरा ने रांड ॥ 1 ॥

मृगलेखा मोटी सती, शील पाले साचे मन ।
मोटा विघन मांहे खरी धर्मरा बाई धन ।। 2 ।।

ढाळ–31

[राग:– हूं करूं साधुजी ने वंदना]

मृगलेखा चाली एकली,
एक मारग दीठो सिंहोए ।
शीलवती सोधी सुन्दरी,
तीण ने नहीं तिल [1]बीहो ए ।। 1 ।।

मुझ शरणो अरिहंत नो,
वले सुध साधु केवल ज्ञानी ए ।
एक अंतरजामी रो आसरो,
बात ज्यांसू नहीं कांई छानी ए ।।मुझ.।। 2 ।।

सागारी अणसण करी,
सती पग दिया आगो ए ।
सिंह तो सूधो हुय गयो,
पाये सती रे लागो ए ।।मुझ.।। 3 ।।

[illegible],
मृगलेखा [illegible] चाली ए ।
[illegible],
[illegible] ए ।।मुझ.।।4।।

आंख्यां अंगारा [illegible],
मूंडे [1]मूकती [illegible] ।

1. डर

सांप उंदर ने नोलिया,
पहरी ज्यांरी मालाए ।। मुझ. ।। 5 ।।

खड्ग छे तेहना हाथ मां,
कहे सात दिवस नी भूखी ए ।
[1]चणां [2]दाई तोने चाव सूं,
थारी छाती ऊपर पग मूकी ए ।। मुझ. ।। 6 ।।

मृगलेखा मन दृढ करी,
वले सागारी अरणसण लीधो ए ।
दिल मांहे डरपी नहीं,
ध्यान नवकार नो कीधो ए ।। मुझ. ।। 7 ।।

शील-प्रभावे सती तणे,
राखसणी पाछी भागी ए ।
दुष्ट कष्ट दूरे गयो,
मृगलेखा चाली आगी ए ।। मुझ. ।। 8 ।।

शीलवती री सुर सेवा करे,
दुख देवता दूर टाल्यो ए ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे इकतीसमी,
पूरी हुय गई ढालो ए ।। मुझ. ।। 9 ।।

ढाल-32

[राग :- अधर्मी अवनीत]

मृगलेखा वनवास,
एकली रहे उदास ।

---

1. चने 2. की तरह

फिरे रन मांहे रोवती ए,
चऊं दिस जोवती ए ॥ 1 ॥

एक तापस नो आयो ठाम,
जठे लियो विसराम ।
'मकरंद' देखियो ए,
सती रो रूप देखियो ए ॥ 2 ॥

तापस बोल्यो एम,
कर तूं मोसूं प्रेम ।
भोगव सुख भामणी ए,
कर किरपा कामणी ए ॥ 3 ॥

मैं दीठी ताहरीं देह,
लागो माहरो नेह ।
तें मुझ मन मोहियो ए,
पिण तें सामो न जोइयो रे ॥ 4 ॥

मृगलेखा चिंतवे एम,
इण भखड़ा ने कहीजे केम ।
मिथ्या - मत मोहियो ए,
नर - भव खोइयो ए ॥ 5 ॥

हूं भर - जोवन में नार,
जोखो पग - पग लार ।
हूं रूप - जोबे भरीए,
सती मन - मांहे डरीए ॥ 6 ॥

इण जोगिड़ा ने लागो रोग,
वस रह्यो मन मांहे भोग ।।
थारो फूट गयो हियो ए,
धिक छे तुझ जियो ए ।। 7 ।।

ए पापी प्रचंड,
मांड ने बैठो पाखंड ।
धूल मूंडे दीजिये ए,
इण ने माजने कीजिये ए ।। 8 ।।

ए थई बतीसमी ढाल,
सुणजो बाल-गोपाल ।
मृगलेखा इम दाखियो ए,
रिख 'रायचन्दजी' भाखियो य ।। 9 ।।

ढाल-33

[राग:- भलोजी साध पंथक गुरु भक्तो]

जोगी तें जोगरी जुगत न जाणी,
तूं पाप जप जप माला रे ।
मन तो थारो भोग में वसियो,
थारी जीभ अगन री ज्वाला रे ।। जोगी. ।। 1 ।।

ते माथो मुंडायो ने जटा वधाई,
भगवा कपड़ा ने भसम लगाई रे ।
तूं कहण रो जोगी पण अन्तर-भोगी,
तो में कला नहीं कांई रे ।।जोगी.।।2।।

दिल रे विचमां दया-रस वसियो,
संत - शील मांहे राता रे ।
वमन - सरीखा भोग ने जाणो,
तिके अभय - दान-दाता रे ।।जोगी.।। 3 ।।

भोग ने रोग - सरीखा जाणे,
विषय न वांछे नारी रे ।
देवांगना रे सामो नहीं जोवे,
जोगी हुवे ब्रह्मचारी रे ।।जोगी.।। 4 ।।

जो तूं सर्व सोना रो होवे,
जो हुवे इन्द्र - अवतारी रे ।
पिण मूंडो थारो नहीं देखूं रे मूरख !
हूं तोने जाणूं भिखारी रे ।। जोगी. ।। 5 ।।

शासन - देवता देख सती नैं
कर दियो घोर अन्धारो रे ।
तापस तो आख्यां होय गयो आंधो,
सती निकल गई तिण वारो रे ।।जोगी.।।6।।

मृगलेखा मन में हुई राजी,
विघन मिट्यो माहरो भारी रे ।
पिण दुख रो अजे छेहड़ो न आयो,
हूं एकली अबला नारी रे ।। जोगी. ।। 7 ।।

ए ढाल तेतीसमी हुय गई पूरी,
पिण वात रही अधूरी रे ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे सुणजो थे आगें,
ढाल चौतीसमी नहीं दूरी रे ।।जोगी.।।8।।

ढाळ-34

[रागः- इण पुर कंबल कोई न लेसी]

मृगलेखा चिंतातुर चाली,
सुन्दर राय ना [1]नफरां भाली।
दश पुरुष नव नारी जाणी,
तिणे भेली वेसाणी आणी ॥ 1 ॥

गाल देई ने बोले लोग - लुगाई,
तूं ठाली - [2]भूली कांने आई ?
लोग लुगाई सगला रोवे,
भुलक भुलक मृगलेखा - सामो जोवे ॥ 2 ॥

थे किसे दुख करो विलापात,
दुख-सुख री तुमे दाखवो बात।
सगला बोले लोग - लुगाई,
अब तो मांहरी मोतड़ी आई ॥ 3 ॥

काले तीजे पोहर के मांयो,
बीसां ने ई मारसी रायो।
कुल देवी री पूजा बोली राणी,
सुत राय ने नहीं होतो जाणी ॥ 4 ॥

रड़ वड़ता भेला किया बीस,
काले तीजे पहर रा काटसी सीस।
सती कहे उदे आया कर्म,
पिण माहरे आगे सांभलो धर्म ॥ 5 ॥

1. नोकर 2. पुण्य हीना

अकाम अनंता कीधा मरण,
उदय न आया च्यारे सरणा ।
मोह - मिथ्यात मांहे जीव फंसियो,
तरे नरक-निगोद मांहे जाय वसियो ।। 6 ।।

सती भिन भिन कर धर्म सुणायो,
ऊगणोसांई समकित पायो ।
बाई ! पुण्य-जोगे पग थांरा भेट्या,
मांहरा दुःख भव-भवरा मेटया ।। 7 ।।

व्रत - धाटी श्रावक हुवा सेणा,
मुख आगल कर लीधी जेणा ।
दिन दूजे सहू ने बुलाया,
नफर लेई राजा कने लाया ।। 8 ।।

-- दोहा --

बोसे जणा थे मांगलो, बोले पृथ्वी - नाथ ।
एक वस्तु थे मांगजो, सो वातां इक वात ।। 1 ।।
मन - वछित सहू पूरसूं तिरपत करसूं तन ।
राय कहे हूं पालसूं तुमने दीयो वचन ।। 2 ।।

ढाल वही

मृगलेखा इम बोले नारी,
राजा ! सांभल बात हमारी ।
मुझ ने मारो सगलां पेली,
ए सहू मांहरा चेला - चेली ।। 9 ।।

आज दिहाड़ो धन छे माहरो,
मैं सागारी कियो सथारो ।
त्याग दिया मैं अन्न न पाणी,
मरण तणी शंका मूल न आणी ।। 10 ।।

दश पुरुष नव बोले नारी,
इण गुरुणी री मैं जावां बलिहारी ।।
गुरुणी कहे पेली मोने मारो,
मैं पिण कीनो छे संथारो ।। 11 ।।

राजा कहे सुण प्रधान !
दो सगलां ने जीवित - दान ।
मृगलेखा पण आगे चाली,
रिख रायचन्दजी कहे सुणो आगे बात बहाली ।। 12 ।।

– सोरठा –

नगरी 'सीधारथ' नजीक, मृगलेखा पहुंची तिहां ।
पेखी सरवर - पाल, पाणी पीधो छाण ने ।। 1 ।।
सूती तरुवर - छांह, ओढण पतलो ओढणो ।
नेणा मां घुल रही नींद, आगे सुणजो बात हुवे जिका ।। 2 ।।

ढाल–35

[रागः– बीनती जुगमन्दिर सांभलो]

हिवे कामसेना' वेश्या मिली,
सूती सती ने देख ।
रूप मांहे रलियावणी,

मोही गणिका - रूप - विशेष ।
भाणेजी ! सांभल बातड़ी ।। 1 ।।

नेणां आंसूड़ा नांखती,
वेश्या धुतारी नार ।
मृगलेखा मन मां जाणियो,
मासी मिली मोने पुण्य-प्रकार हो ।।भाणेजी ।।2 ।।

मासी कहे तूं मोने मिली,
माहरो आज दिहाड़ो धन ।
माहरे घरे लेजावसूं,
थांरा करसूं कोड़ जतन हो ।। भाणेजी ।। 3 ।।

होजी वेश्या ले आई घरे,
मोकलो मांड्यो राग ।
हरख हिया मांहे ऊपनो,
मोटो माहरो भाग हो ।। भाणेजी ।। 4 ।।

होजी भोजन जिमाया भला,
सखरो पहरायो वेश ।
चित्त लगाय करी चाकरी,
गूंथ्या माथा रा केश हो ।। भाणेजी ।। 5 ।।

होजी गणिका बात कही भोगरी,
दाख्यो आपणो आचार ।
मृगलेखा मन जाणियो,
वेश्या कपट - तणो भंडार ।। भाणेजी ।। 6 ।।

होजी सती कहे वेश्या सांभलो,
इसो मत बोले ए पाप ।
हूं पर-पुरुषां ने पेखूं नहीं,
म्हारा भाई ने मोटा बाप हो ।। भाणेजी ।। 7 ।।

तूं मांडसी जो मोसूं जोरावरी,
तो मरसूं जीभ-काट ।
मोसूं बोल मती तूं पापणी,
मैं तो देख लियो थारो [1]बाट हो भाणजी ।। 8 ।।

होजी मृगलेखा मन चिंतवे,
धिग धिग माहरो रूप ।
ढाल पेंतीसमी हुई पूरी,
रिख 'रायचन्दजी' कही कर चूंप हो ।।भाणजी।।9।।

ढाल–36

[राग:– कुमती पदम-नाभ कांय जूं झेरे]

सतीय कहे मुण सांभल बात,
मोसूं करे कांई खांचा-ताण ।
तूं तो कांई बोले है कपट करी,
[2]कूडू कामण कांई बोले ए ।। 1 ।।

थारी ठग बाजी री मोने पड़गई [3]ठीक,
मति बेसीजे तू माहरे नजदीक ।' तूं . ।। 2 ।।

तूं तो मासी बण ने लाई मोने [4]भोल,
तांबा ऊपर जाणे सोना रो झोल ।

1. व्यवहार 2. झूठ 3. मालूम 4. फुसला कर

तूं बतावे मोने काम ने भोग,
थारो तो मूंडो मोने देखणो अजोग ।।तूं.।। 3 ।।

चोखूंणो थारी चित्र - शाला,
पिण मोने तो लागे जाणें अगन री ज्वाला । तू,
थारो वचन माहरे छूभरयो शूल,
थारे मूंडे देऊं सात धोबा भर धूल ।। तूं. ।। 4 ।।

समुद्र कदे ही न लोपे कार,
ज्यूं शीलवन्ती नारी पाले आचार । तूं.
पूरब रो जो पच्छिम ऊगे [1]भाण,
तो ही पण बात कदे ही मत जाण ।।तूं।।5।।

अब बोली है तो मूंडो जावेला सूज,
अज्ञानण तूं नारी अबूज । तूं.
माहरे नीच जात सूं नहीं कोई गूंज,
वेश्या तो रही धड़ धड़ धूज ।। तूं ।। 6 ।।

ए छत्तीसमी पूरी हुय गई ढाल,
स्त्री ने रूप रो कोई वडो है जंजाल । तूं. ।
रिख रायचन्दजी कहे बडो शील साक्षात,
मृगलेखा री आगे सांभलो बात ।। तूं. ।। 7 ।।

-- दोहा --

वेश्या ले गई भेटणो, गई राजा रे दरबार ।
सुन्दर एक सुहावणो, कोई रूप तणो नहीं पार ।। 1 ।।

---

1. सूरज

देवांगना जाणे देखतां, अपछरा ने अणुहार ।
इन्द्राणी जाणे अवतरी, मानव लोक मझार ॥ 2 ॥
राणी कीजे राव री, सुख भोगवो दिन - रात ।
वेठी छे घर माहरे, पुन - जोगे लागी हाथ ॥ 3 ॥
हिवड़े हरख्यो राजवी, मृगलेखा पर गयो मन ।
सुन्दर थी सुख भोगवूं, तिको दिहाडो धन ॥ 4 ॥

ढाल–37

[राग:– चन्द्रगुप्त राजा सुणो]

नरपति मेली पालखी,
वली पोता ना परधानो रे ।
वले सती ने गहणा मेलिया,
अमोलक असमानो रे ॥ 1 ॥

धिग धिग काम - विटंबना,
कामी लोपे कारो रे ।
कामी आन्धा - सारिखो,
कामी रे घोर अंधारो रे ॥ धिग. ॥ 2 ॥

मोटा मोटा मानवी,
वेश्या ले घर आई रे ।
प्रधान ने गणिका कहे,
ए वेठी लुगाई रे ॥ धिग. ॥ 3 ॥

प्रधान कहे सुण पदमणी,
तोने राजा करसे राणी रे ।
ए गहणा कपड़ा पहरीजिय,
सुण मृगलेखा बिलखाणी रे ॥ धिज. ॥ 4 ॥

आ महाराजा मेली पालखी,
पुन्याई थांरी भारी रे ।
तूं पटराणी थासी पदमणी,
कर तूं वेगो तयारी रे ।। धिग. ।। 5 ।।

मृगलेखा मन जाणियो,
वेश्या [1]लगती लगाई रे ।
अबके मोटा फन्द मांहे पडी,
अठे कारी न लागे कांई रे ।। धिग. ।। 6 ।।

सती मन - मांहे सोच करे घणो,
हूं जाऊ कठीने न्हासी रे ।
धिग धिग माहरा रूप ने,
आण पड़ी गला मांहे फांसी रे ।। धिग. ।। 7 ।।

जो हूं मांडू जोरावरी,
तोही [1]माडां पालखी में घोले ।
हूं नारी अबला एकली,
कोई जोर माहरो नहीं चाले रे ।।धिग. ।। 8 ।।

अवसर देखी आपणो,
कूंची लागां खुले तालोरे ।
रिख रायचंदजी कहे सेतीसमी,
पूरी हुय गई ढालो रे ।। धिग. ।। 9 ।।

1. चुगली 2. जबरदस्ती

— दोहा —

मृगलेखा सती मन विना, सकल किया सिणगार ।
बेठी छे हिवे पदमणी, साथे रायतणो परिवार ।। 1 ।।
पालखी आगे चालती, वेश्या करी वणाव ।
जाणे रींझ लाऊं राजा कने, रुपया लाख पसाव ।। 2 ।।
पदमण बेठी पालखी, वहती मध्य बाजार ।
मोने शील पालणो, हिवे करणो कवण विचार ।। 3 ।।

ढाल—38

[राग:— धर्म आराधिये ए]

मृगलेखा मन चिंतवेए,
वहती मारग - वाट ।
मोने तो शील पालणो ए,
पिण आण वणियो [1]घाट ।। 1 ।।

काली हुई कामणी ए,
हार मोत्यां रा नांख्या तोड़ ।
कपड़ा पण फाड़ नांखिया ए,
माथे रा केश विखेर्या छोड़ ।। का. ।। 2 ।।

धूल राख रेत देखते ए,
पड़ी उछालो खाय ।
शील राखण रे कारणे ए,
दीठो एहिज उपाय ।। का. ।। 3 ।।

---

1. मुसीबत

कांई भाली लिगार रहे नहीं ए,
बोलती अगल मुख गाल ।
कोई सांमो देखे नहीं ए,
भूंडी दीसे विकराल ॥ का. ॥ 4 ॥

राय ना चाकर चमकिया ए,
राय ने दिया समाचार ।
भिड़क गई भामणी ए,
लिपट गेली थई नार ॥ का ॥ 5 ॥

राय बुलाया ज्योतिषी ए,
किया उपाय अनेक ।
पिण सेणी हुवे नहीं ए,
वली गेलो हुवे विशेष ॥ का. ॥ 6 ॥

राजा कुल देवी री पूजा करी ए,
धूप खेवो कियो ध्यान ।
प्रगट हुई बोली तुरी ए,
सोने किम समरी राजान । का. ॥ 7 ॥

कर जोड़ी राजा कहे ए,
ए [1]सेणी कीजे नार ।
परणू धुर प्रेम सूं ए,
विलसूं सुख संसार ॥ का. ॥ 8 ॥

देवी ने राजा तणी ए,
पूरी थई अड़तीसमो ढाल ।

---

1. स्वस्थ

रिख 'रायचन्दजी' कहे ए,
अठे कट जासी जंजाल ॥ का. ॥ 9 ॥

- दोहा -

मृगलेखा मोटी सती, राख्यो शील सूं नेह ।
अब सुख होसी सती भणी, दुख नो आयो छेह ॥ 1 ॥
राय ऊभो देवी आगले, जोड़ी दोनूं हाथ ।
अबध ज्ञान देवी कह्यो, हूं कहूं कामण केरी बात ॥ 2 ॥

ढाल-39

[राग:- कपूर हुवे अति ऊजलोए]

ए कामण काली नहीं जी,
कांई लोपी मैं जाण्यो लाज ।
आ मन में सेणी ने वारे गेली जी,
शील राखण रे काज ।
नरेसर देवी बोले एम,
शीलवती ए सुन्दरी जी ।
इणरे शील राखण सूं प्रेम ॥ 1 ॥

आ पर-पुरुष ने [1]पेखे नहीं जी,
जो आवे इन्द्र अवतार ।
पिण वांछे नहीं भामणीजी,
आ कदेही न लोपे कार ॥ नरेसर. ॥ 2 ॥

---

1. देखे

ए मोटी सती मन निरमलीजी,
आ सेणी चतुर सुजाण ।
जो तूं भोग री वांछा राखसी जी,
तो राज जावण रा ए [1]डाण ।। नरेसर ।। 3 ।।

जड़ा सूं तूं जावसी जी,
तिण में मीन न मेख ।
वंश थारो भसमी हुसीजो,
जिय लंकपति ले देख ।। नरेसर ।। 4 ।।

आ मन करने वांछे नहीं जी,
वले दूजो भरतार ।
इण भव इण ने आंखडी जी,
धन इण रो अवतार ।। नरेसर. ।। 5 ।।

अठे हिज इणरा आवसी जी,
बेटा ने भरतार ।
व्हाला मिलसी वीछड्या जी,
देवी भाख्यो सख विचार ।। नरेसर. ।। 6 ।।

जो चाहीजे तोने जीवणो जी,
तो पाये सती रे लाग ।
अपराध खपाव देवी कहे जी,
नहीं तो आयो थारो अभाग ।। नरेसर. ।। 7 ।।

वचन सुणी देवी तणा जी,
डरपण लागो राय ।

1. लक्षण

देवी तो परी गई जी,
सती तणा गुण गाय ।। नरेसर. ।। 8 ।।

देवी गुण सती ना गूंथिया जी,
मिट गई मनरी झाल ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे सती तणो जी,
ए गुणचालीसमी ढाल ।। नरेसर. ।। 9 ।।

-- दोहा --

महिपत मन मां हरसियो, हू सती रे चरणां रो दास ।
श्रावक ने वली श्राविका, मेल्या मृगलेखा रे पास ।। 1 ।।
मृगलेखा मन जाणियो, देवी मुझ दाखी वात ।
मुझ पाये राजा लागसी, जोड़ी दोनूं हाथ ।। 2 ।।
मृगलेखा बेठी बाजोट ऊपरे, सोये शीलवती ने सिणगार ।
वायां बेठी पागती, वले भायां रो परिवार ।। 3 ।।

ढाल-40

[राग:- माली केरा बाग में दोय आंबा पाकावेलो]

बेठी बाजोट ऊपरे,
मृगलेखा नारी वेलो-अहो मृगलेखा नारी वेलो ।
पृथवीपति आण पाये लागो,
हुई महिमा भारी वेलो ।। अहो नण ।। 1 ।।

धरम - बहन थावी करी,
बेठो मूंडा आगे वे लो-अहो बेठो ।
राजा अने सहू राणियां,
नणदी रे पाये लागी वे लो ।। अदो नण ।।2।।

एक शीलवती ने सुवासणी,
मन-वंछित कलिया वे लो । अहो म. ।
सुख – साता पामी सती,
पाप रा बीज बलिया वेलो ।। अहो पाप ।। 3 ।।

एक श्रावकां रा घरां विचे,
जुदी जायगा में राखी वेलो । अहो नदी ।।
मृगलेखा ने महीपति,
रूड़ी तरे राखी वेलो ।। अहो ।। 4 ।।

खावण – पीवण – पहरणे,
देवे नित मेवा मेलो । अहो. ।
दास्यां रा वृन्द कने रहे,
त्यांने समझावे वेलो ।। अहो. ।। 5 ।।

राय ने धरमी कियो,
मृगलेखा बाई वेलो । अहो ।
व्रत - धारी श्रावक हुवो,
शुद्ध समकित पाई वे लो ।। अहो ।। 6 ।।

राजा पर नारी ने परहटी ।
सात विसन निवारी वेलो । अहा. ।
सामायिक पोसह करे,
धरम री महिमा बधारी वे लो ।। अहो ।। 7 ।।

भरतार बेटा दोनूं जणा,
अठे बेठां मिलसी वे लो । अहो ।
माहरी कुलदेवी मोने कह्यो,
दूधमां मिसरी मिलसी वे लो ।। अहो. ।। 8 ।।

मृगलेखा कहे मो भणी,
भली दीधी वधाई वेलो । ग्रहो. ।
शहर सहू धन धन करे,
मृगलेखा बाई वेलो ॥ ग्रहो. ॥ 9 ॥

ए चोखी ढाल चालीसमी,
दुख नो ग्रन्त ग्रायो वेलो । ग्रहो. ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे मोटी सती,
जिन-मारग दीपायो वेलो ॥ ग्रहो. ॥ 10 ॥

--- दोहा ---

सामायिक नित सावे, पड़िकमणो पच्चखाण ।
पोसह पण करे पदमणी, पाले ग्ररिहंत ग्राण ॥ 1 ॥

सुणो वखाण भलीतरे सतगुरु केरे संग ।
सूझतो देवे साधने, लागो किरमची रंग ॥ 2 ॥

पुत्र जनमियो थो पदमणी, पिण पड्यो विजोग विख्यात ।
तिण वालक कुण ले गयो, हिवे बालक नी सुणो बात ॥ 3 ॥

कपड़ा सेती वींट ने, मृगलेखा गई मेल ।
करण सिनान गई सती, पिण पुन्य-पाप न दे पेल ॥ 4 ॥

ढाल—41

[राग:– हूं बलिहारी जादवां]

एक 'वैश्रमण' नामा सेठजी,
बेठो चाले वहेल मझार के ।
एक चाकर एक श्वान सूं,
ए दोय चाले सेठरी लार के ।
बात सुणो बालक तणी ॥ 1 ॥

रुद्र तणी आई बासना,
स्वान गयो सुतो तिहां बालके ।
श्वान लूगड़ो खांचियो,
बालक ते रोयो ततकाल के ।। बात. ।। 2 ।।

सेठ रोवतो सांभली,
धाक करी ने दोड़ी आय के ।
श्वान तो न्हासी गयो,
सेठ बालक ने लियो उठाय के ।।बात.।। 3 ।।

देखी सागरचन्दनी मून्दड़ी,
सेठ देख्या बालक ना [1]सूत के ।
सेठ लेई घरे आवियो,
स्त्री ने सूंप्यो पूत के ।। बात. ।। 4 ।।

मुझ गूढ गर्भ नारी जनमियो,
अपुत्रिये - घर हुयो पूत के । बात. ।
महोच्छव घर मांहे हुयरह्यो,
सेठ रे घर रा बधिया सूत के ।। बात. ।। 5 ।।

जन्म तणो महोच्छव करी,
दसोटन कियो अभिराम के ।
निज गुण ख्यात जीमाय ने,
'सुन्दर दत्त' कुंवर नो नाम के ।। बात. ।। 6 ।।

पांच धायां पालीजतो,
बरस नो जब हुयो आठ के ।

1. हाल

भणियो कला बहोत्तर,
पूर्व पुन्य सच्यो गह घाट के ।। वात. ।। 7 ।।

पग छेरे पुन्यवत रे,
बले सेठ रे बेटा हुवा दोय के ।
'धनदत्त' 'धनसेन' दूसरो,
पिण सुन्दर दत्ता सरिखा नही कोय के ।। वात ।। 8 ।।

सुन्दरदत्त ने सुन्दरी,
परणावी नार वत्तीस के ।
सुन्दरदत्त सुख भोगवे,
मन वांछित पूरे सुजगीश के ।। वात. ।। 9 ।।

सुन्दरदत्त सुखियो हुवो,
ईण इगतालीसमी ढाल के ।
'रायचन्दजी' कहे सांभलो,
पुन्य सूं होसी मंगल-माल के ।। वात. ।। 10 ।।

--- **दोहा** ---

'सुन्दरदत्त' नी महिमा घणी, अकल तणो अवतार ।
बहुजन धन धन करे, गम - खाऊ करे उपगार ।। 1 ।।
'कनक ध्वज' नामे राजवी, सुन्दरदत्त ने देख ।
हूँ पुत्री परणाव सूं कह्यो सेठ भणी विशेष ।। 2 ।।
सेठाणी बात सांभली, हूं नहीं इणारी मात ।
ओछी मत नारी तणी, सुणजो सेठाणी री बात ।। 3 ।।

ढाल–42

[राग – आनन्द समकित ऊचरे रे लाल]

सेठानी वहू सेठनी रे लाल,
दोनूं ही वेटा देख रे । चतुर नर ।
अब सुन्दरदत्त सुहावे नही रे लाल,
दीठां जागे द्वेष रे ।। चतुर. ।। 1 ।।

स्त्री - विश्वास न कीजिये रे लाल ।
स्त्री नी खोटी जात रे । चतुर. ।
आ मुख मीठी खोटी हियेरे लाल,
छल-बल खेले दिन-रात रे ।।चतुर स्त्री।। 2 ।।

देखो 'सूरीकंता' कामणी रे लाल,
न गिणी प्रीतम नी प्रीत रे । चतुर ।
जिण जीमण मांहे जहर घालियो रे लाल,
बले टूंपो दे मार्यो कुरीतरे ।चतुर स्त्री।। 3 ।।

आ चित्त-मेली महा 'चूलणी' रे लाल,
विषय - विलुब्धी नार रे । चतुर ।
तिण बेटाने मारणो मांडियो रे लाल,
प्रधान सूं कियो प्यार रे ।। चतुर स्त्री ।। 4 ।।

रेवती हिरदे विचार्यो रे लाल,
हूं मानूं मन री [1]जोखरे । चतुर ।
हूं एकली सुख भोगवूं रे लाल,
तिण मारो बारह शोकरे।।चतुर स्त्री।। 5 ।।

---

1. जल मे रहने वाला जीव जो खून चूसता है ।

ईम अनेक हुई घणी रे लाल,
हिवे सुणजो सेठाणी री वात रे।चतुर।
सुन्दरदत्त ने मारवा भणी रे लाल,
छिद्र देखे दिन-रात रे ।। चतुर स्त्री ।। 6 ।।

सुन्दरदत्त सोदो करे रे लाल,
बिणजारा सूं व्यापार रे। चतुर।
वे लघु बंधव वेठा कने रे लाल,
हिवे सेठाणी चितवे तिवार रे ।।चतुर स्त्री।। 7 ।।

दोय लाड़ू तो किया निरमला रे लाल,
तीजा मोटा लाड़ू मां विष घाल रे। चतुर।
वाटको दियो दासी रा हाथ मां रे लाल,
मोटो सुन्दरदत्त ने आल रे ।। चतुर स्त्री।। 8 ।।

कहे माताजी मेली सूंखड़ी रे लाल,
सोरावणी ने सोय रे। चतुर।
सुन्दरदत्त ने मोटो दियो रे लाल,
दीना छोटा ने दोय रे ।। चतुर स्त्री ।। 9 ।।

कहे वणजारो सुन्दरदत्त ने रे लाल.
माने पिण लागी भूख रे। चतुर।
थे एकला किम जीमसो रे लाल,
सुन्दरदत्त दीनो मूक रे ।।चतुर स्त्री।। 10 ।।

सुन्दरदत्त मून्डे दीधो नही रे लाल,
दियो लघु-बंधवे रे हाथ रे। चतुर।
जिम्यो बीजी सूंखड़ी मंगाय ने रे लाल,
जीम्यो विणजारा रे साथ रे।।चतुर नार।। 11 ।।

जेहनो पुण्य [1]सरबाइयो रे लाल,
तिण रो वांको न हुवे बालरे ।चतुर।
रिख रायचन्दजी कहे कुमरनी रे लाल,
हुई चालीस ने दोय ढाल रे ।।चतुर स्त्री ।। 12 ।।

– दोहा –

तीनों लाडू तुरन्त रा, खाय गया बे बाल ।
सूता दोनूं सेज यो, कीनो बेहूं काल ।। 1 ।।
कपट आडो आवे नहीं, धरती सुन्दरदत्ता सूं द्वेष ।
सेठाणी बेठी सोच मां, रोवे पुत्र ने देख ।। 2 ।।
कूटे सेठानी कालजो, आंसू पड़े असराल ।
मैं कुमत कमाई पापणी ऊंडी ऊठे झाल ।। 3 ।।
सेठ कहे सुण कामणी, दीजे न किणी ने दोष ।
आप कमाया कामड़ा, हिवे कीजे किणसूं रोष ।। 4 ।।
सुन्दरदत्ता पिण जाणियो, विषरा लाडू री बात ।
मोने मारण मांडियो, आ नहीं म्हारी मात ।। 5 ।।

ढाल–38

[राग:– यत्त नी]

सुन्दरदत्ता पूछे सुणो सेठ,
माहरो संशय दीजे मेट ।
हूं वीनवूं जोड़ी दोनूं हाथ,
माहरी भूलगी दालो बात ।। 1 ।।

1. सहायक

सेठ कहे सुण पूत,
तोने थारा बताऊं सूत ।
हूं तोने उजाड मांय सूं लायो,
सगलोई विरतत सुणायो ।। 2 ।।

मैं सेठाणी ने आण दीयो,
सेठाणी मोटो कीयो ।
तूं सागरचन्द नो बेटो,
आ ले मून्दड़ी ने पग-भेटो ।। 3 ।।

थारी माय री मोने खबर न कांई,
बात हुती जितरी सुणाई ।
सुन्दरदत्त कहे पाऊं साता,
जदे नेणा निरखूं माता ।। 4 ।।

कुंवर कहे सुणो सेठ,
हूं माता जिहां जासूं ठेठ ।
तिणसूं मोने सीख दीजे,
घड़ी एकरी जेज न कीजे ।। 5 ।।

थे तो मोटो कियो उपकार,
कोई कहतां न आवे पार ।
थे ऊजाड़ मांय सूं ऊरो लीनो,
मोने पालने मोटो कीनो ।। 6 ।।

– दोहा –

सेठ कहे सुन्दरदत्त ने, थे करो सजाई सुखकार ।
मात-पिता मिलियां पछे वेग दीजो समाचार ।। 1 ।।

तात - मात पाये लागियो, सगलो मिलियो साथ ।
सेण मित्र सगला मिल्या, घाल गला में बाथ ।। 2 ।।

ढाल वही

साथे लीवी बत्तीसे नारी,
पोता नो सहू परिवारी ।
धन - माल साथे घणो लियो,
सुन्दरदत्त शहर थी चालियो ।। 7 ।।

पहुंचाय ने वलिया पाछा,
पुन जोगे सांवण हुवा आछा ।
सुन्दर वस रह्यो मन,
बहु जन्न करे धन - धन्न ।। 8 ।।

सुन्दरदत्त-लाखिणो साथ,
हिवे आगली सुणजो वात ।
हुई तयांलीसमी ढाल,
रिख रायचन्दजी कही रसाल ।। 9 ।।

ढाल–44

[राग:-सोरठ देश मझार]

सुन्दरदत्त श्रीकार,
जाणे देव - कुमार - आजरे ।
सोलह बरसां मां सुरत सुहावणीजी ।। 1 ।।

साथे नर - नारी रा थाट,
चले धणी गह-घाट–आजरे ।
मात-पिता ने फिर जावतो जी ।। 2 ।।

जोया पुर पाटण केई गाम,
पिण कठे ही न सुण्यो नाम-आजरे ।
किसे रे ठिकाणे खबर कोई नहीं जी ।। 3 ।।

कुमर विचार्यो एम,
तात - मात मिले केम-आजरे ।
तेलो चउविहार कियो तिण समेजी ।। 4 ।।

जपे आदीश्वर - जाप,
कुमर एकलो आप-आजरे ।
श्री चक्रेसरी देवी रो आसण चाल्यो जी ।। 5 ।।

देवी आई तिण ठाम,
तेलो कियो किण काम-आजरे ।
देवी ने वे कर जोड़ी वीनवे जी ।। 6 ।।

कठे छे माहरी मात,
किहां छे माहरो तात-आजरे ।
जठे बतावो वठे जावसूं जी ।। 7 ।।

सागरचन्द तुझ तात,
मृगलेखा थारी मात-आजरे ।
देवी दाखे सुन्दरदत्त सांभलोजी ।।8।।

दक्षिण दिस तूं जाय,
नगर 'सिद्धार्थ' थाय-आजरे ।
मात ने तात मिलसी दोनूं जणाजी ।। 9 ।।

सुन्दरदत्त कियो सलाम,
सरिया वंछित काम-आजरे ।
चक्रेसरी देवी पाछी परी गई जी ।। 10 ।।

चाल्यो दक्षिण दिस असवार,
हिवड़े हरस अपार-आजरे ।
पूरूं मनोरथ माहरा मन तणाजी ॥11॥

ए थई चमालीसमी ढाल,
रिख रायचन्दजी कही टंकसाल-आजरे ।
चरित्र कुमर नो इतरो चालियो जी ॥12॥

– दोहा –

मारग मांहे चालतां सुन्दरदत्त कुमार ।
मिलसी मात-पिता मणी, पूरब पुण्य प्रकार ॥ 1 ॥
सागरचन्द तणो हिवे, चरित्र सुणो चित्त लाय ।
सोलह वरस विगरो रह्यो, कह्यो कठा लग जाय ॥ 2 ॥
वेरी ने वश कर लिया, राय - मनाई आण ।
मुदत सहू ना घालिया, कपे वेर्या ना प्राण ॥ 3 ॥

ढाल–45

[राग:– रतनकुमार गुण आगलाजी]

सागरचन्द जीत आवियोजी,
लागो न्टप ने पाय ।
तूठो राजा तिण अवसरे जी,
दीठां आखड़ी ठराय ॥ सा. ॥ 1 ॥

राय दिया सिर - पांव सुहावणा जी,
निज – घर आयो आप ।
मिलिया व्हाला मन्त्री सहूजी,
मिलिया माय ने बाप ॥ सा. ॥ 2 ॥

मृगलेखा रे महलां चढयो जी,
सागरचन्द तिणवार ।
पिण मृगलेखा नहीं महल में जी,
नहीं चित्रलेखा नार ॥ सा. ॥ 3 ॥

सागरचन्द चित्त चिंतवे जी,
पिण हिया मांही दिलगीर ।
पुत्र तणी बधाई नहीं जी,
पदमण बेठी छे पीर ॥ सा. ॥ 4 ॥

महलां सु ऊतर आवियो जी,
धाय – माता कही वात ।
मृगलेखा पीहर गई जी,
चित्रलेखा पिण साथ ॥ सा. ॥ 5 ॥

बोले पद्मा पापणी जी,
वेटा सागरचन्द ।
थे परणी ने परिहरो जी,
पिण उण तो उठायो धंध ॥ सा. ॥ 6 ॥

सुसरो राखी इण सानोये जी,
पिण पापणी रे दीठो पेट ।
मृगलेखा रे मास सातमो जी,
कुल ने कलंक लगायो नेट ॥ सा. ॥ 7 ॥

मैं दे साटे काठी परी जी,
पापणी ने मेली पीर ।
सुण सागरचंद कोपियो जी,
नेणां बरसतां नीर ॥ सा. ॥ 8 ॥

पदमा ने करदीधो पाघरो जी,
हियो गयो थारो फूट ।
हू दोय सेनाणी देय सिधावियो जी,
थले पिता ऊपरे पड्यो टूट ।। सा. ।। 9 ।।

सज्जन सहू ने मूंडे दीधी जी,
ओलंवानी फीक ।
सागरचंद हिवे चालियो जी,
मृगलेखा री करवा ठीक ।। सा. ।। 10 ।।

पैंतालीसमी ढाल पूरी थई जी,
चालो सागरचन्द ।
रिख रायचन्दजी कहे सांभलो जी,
आगलो सहू संबंध ।। सा. ।। 11 ।।

ढाल-46

[रागः- नींदड़ली हो वेरण होय रही]

नगर सेती हिवे नीसर्यो,
लारे चाल्यो हो असवारों के साथ के ।
एक मृगलेखा मन मे वसी,
मोहणी री हो कांई अचरज बात के ।। 1 ।।

भरतार कामण ने विलविले,
विलखे मून्डे हो करतो वे खास के ।
मे नगर पुर जोविया,
हो अटवी-वन-वास के ।

पीहर पिण राखी नहीं,
मृगलेखा हो गई किण ठाय के ।
कांने ही कठे ही न सांभली,
विन दीठां हो पूछे किण ने नाम के ।। भरतार ।। 3 ।।

सागरचन्द अब चितवे ।
अबे मरु हो लेई जंपा पातक,
तीन दिवस ताई तड़फर्यो,
एकलो ऊठ्यो हो आधी देखी रात के ।। भरतार ।। 4 ।।

सागरचन्द चढ्यो परवत ऊपरे,
हेठे पड़ियो हो देवता नो वियाण के ।
तापस रो जीव देवता,
उसरावण हो हुवो अठे आण के ।।भरतार।। ।। 5 ।।

सागरचन्द कहे देवता भणी,
तें मरतां ने हो मोने झाल्यो केम के ।
मृगलेखा री खबर पाया विना,
मुझ पाणी हो पीवण रो नेम के ।। भरतार ।। 6 ।।

देवता कहे हूं बतावसूं,
मृगलेखा री हो भाखी सगली वात के ।
सिद्धारथ पुर मांहे रहे,
उठे गयां हो मिलसी साक्षात के ।। भरतार ।। 7 ।।

सागरचन्द रो चित्त हरखियो,
हिवे मिलसी-हो मृगलेखा नार के ।
मिलसी संयोग सयणां तणो,
सुख मिलसी हो मोने पेलि पार के ।। भरतार ।। 8 ।।

सागरचन्द आगे हिवे चालियो,
पूरी हुई हो छयांलीसमी ढाल के ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे सांभलो,
आगे मिलसी हो रूड़ी तरे रसाल के ।।भरतार।। 9 ।।

– दोहा –

सागरचन्द मारग चालतो, हिवड़े हर्ष उल्लास ।
साथ सहू में सोभतो, आयो नगर सिद्धारथ - पास ।। 1 ।।
सुन्दरदत्त पिण आवियो, बहतो मारग - बाट ।
साथ सहू विच सोभतो, [1]चेल घणी गह घाट ।। 2 ।।
मारग बहतां मिल गयो, भेलो हुय गयो साथ ।
पिण सगपण कोई जाणे नहीं, करतां चाले बेहू बात ।। 3 ।।

ढाल–47

[राग:– नणदल हे नणदल थाहरा गुण माहरे मन]

सुन्दरदत्त सोले वरस मां,
रूड़ो विराजे रूप कुमरजी !
निरखतां नयण धापे नहीं,
सागरचन्द निरखे छर चूंप ।। 1 ।।

ते मोह्लियो मन माहरो,
कांई कही न जावे बात । कुमरजी !
के जीव जाणे माहरो,
के जाणे जग-नाथ ।। कुमरजी ते. ।। 2 ।।

---

1. चहल-पहल

नेण वहूं ना मिल रह्या,
प्यारो जग में प्रेम । कुमरजी !
तन मन हिवड़ो हूलस्थो,
जिम हीरां विचमें हेम ।। कुमरजी ते. ।। 3 ।।

थे कुणसे ग्राम नगर वसो,
कासूं थारो नाम–कुमरजी ।
तात - मात कुण ताहरा,
थे निकलिया किण काम ।।कुमरजी ते. ।।4।।

सास तिहां वासो म्हारो,
सुंवरदत्त माहरो नाम–कुमरजी !
हूं विणज - व्यापारे नीकल्यो,
दाम कमायां चाले काम ।।कुमरजी तें ।। 5 ।।

तोने मात्त-पिता किम मेलियो,
कालजा केरी कोर–कुमरजी ।
तो विन किण विध आलगे,
पण दीसे कठिण कठोर ।।कुमरजी।।तें ।।6।।

जो माहरे तो सरिखो हुवें,
पुन्य-जोगे पुत्र-रतन–कुमरजी !
एक पलक आगो मेलूं नहीं,
हूं करूं कोड़ जतन ।। कुमरजी तें. ।। 7 ।।

सुन्दरदत्त कहे सांभलो,
पापी कहीजे पेट । कुमरजी !
हूं माहरा मन थी नीकल्यो,
आऊं नगर 'सिधारथ' घेट ।।कुमरजी तें.।।8।।

दोनूं बातां करता व्यापार नीं,
दोनूं घोड़े असवार-कुमरजी ।
नगर 'सिद्धार्थ' निरखियो,
जाणे इन्द्रपुरी अवतार ।। कुमरजी तें. ।। 9 ।।

बाप बेटा बेहूं आविया,
इण सेंतालीसमी ढाल ।
रिख रायचन्दजी कहे सांभलो,
शील सूं कटियो जंजाल ।।कुमरजी तें.।।10।।

ढाल-48

[राग:- चोथा प्रत्येक बुद्धरी]

'मृगलेखा' बेठी महल में,
मांकी सहियांए ।
दास्यां रे परिवार ए,
ऊंची बेठी ओलख्या ।
मांकी सहियांए,
माहरो बेटो ने भरतार ए ।। 1 ।।

प्रीतम माहरो म्हैं देखियो,
मां की सहियांए ।
साक्षात 'सागरचन्द' ए,
अमी भरी मुझ आंखियां ।
मांकी सहियांए,
हूं पामी परम-आनंदए ।। 2 ।।

कंत आयो मो कारण,
मां की सहियांए ।
माहरा सरिया सगला काज ए,
माहरे हरख हियां मां ऊपनो ।
मांकी सहियांए,
रांक लहे जिम राज ए ॥ 3 ॥

श्री सूरत माहे शोभतो ।
मांकी सहियांए,
श्री नीको माहरो नंद ए ।
माहरा निरखतां नेण धापे नहीं,
मांकी सहियांए,
मुख जाणे पूनम-चन्द ए ॥4॥

श्री सोलह बरसां में शोभतो,
मांकी सहियांए ।
श्री माहरो अंग-जातए,
श्री मात मिलवाने आवियो ।
मांकी सहियांए,
सो वातां एक वात ए ॥ 5 ॥

'कनक ध्वंज' राजा भणी,
मांकी सहियांए ।
वेगी वधाई दीध ए,
राय सुणी ने हरखियो ।
मांकी सहियांए,
जाणे अमृत पीध ए ॥ 6 ॥

राजा ने याद आवियो,
मांकी सहियांए ।
जे देवी दाख्यो वचन ए,
मृगलेखा ने मिलसी अठे।
मांकी सहियांए,
भरतार पुत्र - रतन ए ॥ 7 ॥

मृगलेखा मोटी सती,
मांकी सहियांए ।
सकल किया सिणगार ए,
रथ मांहे बेठ नीकली।
मांकी सहियांए,
दास्यां रे परिवार ए ॥ 8 ॥

मृगलेखा जाये मिली,
मांकी सहियांए ।
जिहां बेटो - भरता ए,
सुन्दरदत्त ने देखियो ।
मांकी सहियांए,
बरत्या जय-जयकार ए ॥ 9 ॥

पाये लागो पिता तणं,
मांकी सहियांए ।
मिली मृगलेखा मात ए,
छाती सेती भीड़ियो ।
मांकी सहियांए,
माथे फिरियो मां हाथ ए ॥10॥

तीनों ही आनन्द पामिया,
मांकी सहियांए ।
मगन हुय गयो मन ए,
कोड़ कल्याणज वरतिया ।
मांकी सहियांए,
माहरो आज दिहाड़ो धन्न ए ।।11।।

'कनक-धज' पिण आवियो,
मांकी सहियांए ।
आया नर-नारी ना थाट ए,
सेठ सेनापति मन्त्रवी ।
मांकी सहियांए,
पाला वह रह्या बाट ए ।। 12 ।।

बिछड़िया बाहला मिल्यो,
मांकी सहियांए ।
अड़तालीसमी ढाल ए,
रिख 'रायचन्दजी' कहे शीलथी ।
मांकी सहियांए,
सहू कट गया दुख-जंजाल ए ।।13।।

-- दोहा --

कनक-ध्वज राजा मिल्यो, सागरचन्द लील-विलास ।
सुंदरदत्त सती कने, सहू पूरे मन री आस ।। 1 ।।

ढाल-49

[राग:- खंभायत नी]

महोच्छव कियो हो-महिपति अति घणो जी,
सिणगार्यो सहू साथ ।
हाटां सिणगारी हो चहल घणी चोहटे जी,
दान दिरीजे हाथों-हाथ ।। म. ।। 1 ।।

हय-वर गय वर रथ सिणगारिया जी,
सिणगार्यो सहू परिवार ।
गोख चढी ने जोवे गोरड़ी जी,
नाटक ना धुंकार ।। म. ।। 2 ।।

सोहलो गावे हो सुहागण सुन्दरी जी,
कीरत करे चारण - भाट ।
चकडोल मांहे हो- बेठा बे जणाजी,
हय - वर वह रह्या वाट ।। म. ।। 3 ।।

बाजा वाजे हो गाज नी परेजी,
पहुंचाया हवेली थेट ।
पुन्य-प्रयोगे हो सजोग सहू मिल्याजी,
केइक ल्यावे भेंट ।। म. ।। 4 ।।

लोग-लुगाई हो धन धन उचरेजी,
धन 'मृगलेखा' - 'सागरचन्द' ।
सुन्दरदत्त हो पुत्र सती तणो जी,
दीठां उपजे आणंद ।। म. ।। 5 ।।

मेघ गर्जना

राजा ताजा हो जीमण किया जुगतरा जी,
सहूं साथ जिमायो रूड़ी रीत ।
यथा - जोग हो किधी पहरावणी जी,
जुग मां प्यारी प्रीत ।। म ।। 6 ।।

सुख-संपत मिलिया हो दुख दुरे गयाजी,
बरत्या मंगल – माल ।
रिख 'रायचन्दजी' जोड़ी जुगत सूं जी,
ढाल हुय गई गुण चाल ।। म. ।। 7 ।।

– दोहा –

सागरचन्द कहे सती भणी, तूं धरमण तूं धन्न ।
आपो थारो ऊजलो, सफल फल्या तुझ पुन्न ।। 1 ।।

पद्मा तोने दुख दियो, पोते तिणरे पाप ।
तूं वन-वासो किम भोगियो, किम सह्या सोले वरस संताप ।।2।।

पिता पिण थारो पापियो, मूरखणी तुझ मात ।
तूं सोले वरस लग दुख सह्या, ते दाखो सहू वात ।। 3 ।।

ढाल–50

[राग:– धत्तूरो राचणो जी]

मृगलेखा भाखे वेण,
दूषण सहू करम नो जी ।
मोने बीजा किणही न दीधो दुख,
सरणो जिन-धर्म नोजी ।। मृग. ।। 1 ।।

म्हारे शील तणे प्रभाव,
विछड़िया वाहला मिल्याजी ।
म्हारे देव - गुरु रे प्रताप,
दुख दूरे टल्याजी ।। मृग. ।। 2 ।।

पाया म्हैं कष्ट करूर,
कहतां फाटे हिवड़ो जी ।
कांई कही न जावे बात,
जाणे माहरो जीवड़ो जी ।। मृग. ।। 3 ।।

पिण हूं जपती जिनवर - जाप,
सरणो लेती साधरो जी ।
सत - गुरु बतायो ज्ञान,
मोख-मारग पाधारो जी ।। मृग. ।। 4 ।।

मैं लिया अरस विरस आहार,
आंबल-उपवास - पारणेजी ।
शोभा नहीं कीधी शरीर,
शील राखण रे कारणे जी ।। मृग. ।। 5 ।।

मोने दीनो [1]अणूतो आल,
पीहर ने सासरे जी ।
मैं दिहाड़ा काढ्या नीठ-नीठ,
अरिहंत रे आसरे जी ।। मृग. ।। 6 ।।

पिण दोजे नहीं किण ने दोष.
सुख - दुख पुन-पापरो जी ।

---

1. झूठा

सासू - सुसरां रो नहीं दोष,
दोष नहीं मां-बाप रो जी ।। मृग. ।। 7 ।।

किण सूं ही नही राख्यो क्रोध,
समता - रस पीवणोजी ।
सागरचन्द ने दियो समझाय,
कितोयक जीवणो जो ।। मृग. ।। 8 ।।

पूरी हुई ढाल पचास,
रिख रायचन्दजी भाखियो जी ।
मृगलेखा सती मतिवंत,
खिमिया - रस चाखियो जी ।। मृग. ।। 9 ।।

– दोहा –

सासू रे पाये पड़ी, जोड़ी कामण बत्तीस ।
सासू मृगलेखा तिहां, दीधी बहू ने आसीस ।। 1 ।।

सुन्दरदत्त माय - तात ने, वीतक कही सहू वात ।
हूं बढियो सेठ तणं घरे, पूरव पुन्य विख्यात ।। 2 ।।

पुत्र - सामो मा जोवती, मूंडे फेरती हाथ ।
बाणी वल्लभ वेटा तणी, लागे मीठी जाणे नीवात ।। 3 ।।

वेटा ने माता तणो, हरख्यो हिवडे हीर ।
मगन मन हुय रह्यो, नेणां बरसता नीर ।। 4 ।।

ढाल–51

[राग:– राय-कुमारी नाटक साजो]

'कनक ध्वज' राजा री बेटी,
रूप तणी जाणे पेटी ।
ते सुन्दरदत्त ने परणाई,
प्रगटी पूरवली पुण्याई ।
राय-कुंवरी राय परणाई ।। 1 ।।

दत्त - दायजो राज बोहलो दियो,
विवाह भली तरे कीधो ।
सागरचन्द कहे सीख दीजे,
जेज अब नही की जे ।। राय. ।। 2 ।।

'गुणभंजरी' तेलीसमो नारी,
प्रीतम ने घणी प्यारी ।
सोनो रूपो ने हीरा मोती,
जग-मग-ज्यांरी ज्योती ।।राय.। 3 ।।

राय साथे मेली फोज - प्रधान ।
सुन्दरदत्ता नी चाली जान ।
मांहो मांहे सगलाई मिलिया,
पहुंचाय ने पाछा वालिया ।।राय. ।। 4 ।।

सागरचन्द हिवे आगो चाले,
वले पहुँचावतां ने पाले ।
लोग लुगायां नो वहुलो थाट,
चेल घणी गह घाट । राय. ।। 5 ।।

दरल दीसे जाणे राजा केरा,
तेहवा तंबू तणाया डेरा ।
पुन्य किया सुख - संपदा होई,
पुन्य - समो नहीं कोई ।। राय. ।। 6 ।।

इकावनमी ढाल हुय गई पूरी,
बात अजेस अधूरी ।
रिख रायचन्दजी कहे सुणजो आगे,
हिवे अधिकी पुन्याई आगे जागे ।।राय.।। 7 ।।

– दोहा –

मृगलेखा मन चिंतवे, चित्रलेखा मिले तो एन ।
चित्रलेखा मिलियां पछे, चित मुझ पावे चेन ।। 1 ।।
सुन्दरदत्त इम वीनवे, सांभल मोरी मात ।
हूं दासी देसूं आण ने, सो बातां इक वात ।। 2 ।।

ढाल–52

[राग:– चित्तोड़ी राजा रे]

सागरचन्द नो साथो रे,
चाले दिन - रातो रे,
एक आई झंगी रे ,
मन थाई विभंगी रे,
पहाड़ प्रचन्ड दीठा अति घणा रे ।। राय. ।। 1 ।।

तिहां चोट - पल्ली रे,
कदेई नहीं भली रे ।

घणा चोर ने भीलो रे,
[1]ऊघाड़े [2]डीलो रे ।
पल्लीपत लूंटण आवियो रे ।। 2 ।।

सुन्दरदत्त करी सजाई रे,
फोज ने भली भणाई रे ।
तेज कुमर नो भारी रे,
चोर गया हारी रे ।
चोर भागा जाय उडी जिम पूणियां रे ।। 3 ।।

पाये कुमर ना लागा रे,
जाय सके नहीं आगा रे ।
चित्रलेखा ने सूपी आणेन रे ।।4।।

चित्रलेखा पाई रे,
ले मांय सूं मिलाई रे ।
चित्रलेखा निरखी रे,
मृगलेखा घणी हरखी रे ।
अब मन रा मनोरथ म्हारा सहू फल्या रे ।। 5 ।।

चित्रलेखा पाई रे,
ढाल बावनमी आई रे ।
रिख रायचन्दजी कहे वले आगे सांभलो रे ।।6।।

--- दोहा ---

मृगलेखा - सागरचन्द, सुन्दरदत्त पिण वीर ।
मृगलेखा मिलवा भणी पहलां आई पीर ।। 1 ।।

1. नंगे 2. शरीर

तात मात भाई भोजाइयां मूंडो दियो कुम्हलाय ।
महासती ए मोटकी, मात - तात रह्या पछताय ।। 2 ।।

मृगलेखा कहे मुरझो मती, हिवे म करो चिंता कोय ।
किण में ही दोष को नही, होण - पदारथ होय ।। 3 ।।

ढाल–53

[राग:- जीव - दया - धर्म पालो रे]

'बापजी' सुणजो म्हारा बोलोजी,
मांसूं वात करो दिल खोलो ।
सांभलजो मोरी माजी ए,
मांसूं बातां करो हुय राजी ए ।। 1 ।।

सांभलजो माहरा भाई रे,
हूँ मृगलेखा थांरी बाई ।
भली तरे बोलो भोजाई रे,
मन मां लाजा न राखो कांई ।। 2 ।।

सुणो धाय व डारण दासी ए,
मन मां मती राखो उदासी ।
किण मां दोष नहीं छे कोई ए,
करम किण ने न छोडे कोई ।। 3 ।।

पीहरिया कहे धन - धन्नो ए,
बाई! सफल फलया तुझ पुन्नो ।
जीमण कर सहू ने जीमाया रे,
यथा योग वस्त्र पहराया ।। 4 ।।

सागरचन्द ने मृगलेखा नारी रे,
हुई शहर मां महिमा भारी ।
सुन्दरदत्ता ने नार तेतीसो रे,
सुख भोगवे पूरे जगीसो ।। 5 ।।

हरख पीहरिया बहु पाया रे,
अबे अठासूं आगा सिधाया ।
पीहर थी सासरे हाली रे,
तेपनमी ढाल इतरी चाली ।। 6 ।।

रिख 'रायचन्दजी' कहे एमो रे,
आगे सांभलजो धर प्रेमो ।
आवतो साथ भारी रे,
चाकर नफर परिवारी ।। 7 ।।

– दोहा –

'अवंतीसेन' राजा हिवे, डरफरा लागो तेह ।
ए कटक आवे छे केहनो, कांपरा लागी देह ।। 1 ।।

सागरचन्द समाचार मेलिया, [2]अवलतर अरदास ।
हूं आऊं छूं आपरो, चाकर चरणा रो दास ।। 2 ।।

मात - पिता बात सांभली आयो बेटो सागरचन्द ।
बहू - बेटो ले आवियो, पाम्या परम आनंद ।। 3 ।।

1 मंगलगान 2. हार्दिक

ढाल—54

[राग:– वधावाना गीत नी]

राय महोच्छव कियो घणो,
सामां ले आयो थाट के ।
[1]सोहेलो गावे सुहागणी,
वले विरुदावली बोले चारण-भाट ।। 1 ।।

वधावो ए सागरचन्द वाल हो,
सुन्दरदत्त वले पूत के ।
'मृगलेखा' मोटी सती,
तिण रा है शील तणा सूत ।।वधावो।।2।।

राय तणा पाय भेटिया,
भेट्या माय-पिता रा पाय कें ।
निज घर आया आपणे,
दुर्बल ने वले दान दिराय ।। वधावो ।।3।।

लोग सहू धन - धन करें,
मोटी सती है मृगलेखा नार के ।
इण प्रसादे सही संपदा,
सती-मुख दीठां न रहे पाप लिगार ।।वधावो ।।4।।

सागरदत्त सुसरो कहे,
वहू ! तू धर्मण तू धन्न के ।
खमो अपराध तूं मारो,
प्रगटिया है सती ताहरा पुन्न ।। वधावो ।। 5 ।।

पद्मा सासू पिरा पग पकड़िया,
मैं कीधो है अपराध अथाग के ।
मैं आज थारो दरसरा देखियो,
भला है उघड़िया म्हारा भाग ।। वधावो ।।6।।

आज कृतारथ हूं थई,
माहरी आज पावन हुई देह के ।
माहरे आज कल्प - वृक्ष आवियो,
वहू ! हूं तुझ पग नी खेह ।। वधावो ।। 7 ।।

'पद्मा' कहे हूं पापणी,
कीधो है म्हैं कर्म चंडाल के ।
भाग - हीरा म्हैं भामरणी,
म्है दियो है संतवंतो ने आल ।। वधावो ।। 8 ।।

मृगलेखा सासू ने कहे,
थांमें हो दूषरा नहीं कोय के ।
माहरा कर्म मैं भोगिया,
जिम होरा पदारथ होय ।। वधावो ।। 9 ।।

सहू परिवार खभावियो,
मृगलेखा ने वारंवार के ।
सजन सहू ने जीमाविया,
वले कीनो जीमरा वार ।। वधावो ।। 10 ।।

शील - प्रभावे सुख मिल्या,
शील सूं मिल्या सयोग के ।
शील सूं दुख दूरे गया,
गया वली विरह्-विजोग ।। वधावो ।। 11 ।।

चउपनमी ढाल पूरी थई,
सगले वर्त्या कुशल ने खेम के ।
एक शील वडो ससार मां,
रिख 'रायचन्दजी', कहे एम ।।वधावो।।12।।

– दोहा –

मृगलेखा [1]मांडी कही, वीतक सगली वात ।
राजा - प्रमुख सांभली, अहो अहो कर्म विखात ।। 1 ।।
'सागरचन्द' पिण सहुसे मिल्यो, कांई हिरदे न राखी रीस ।
सात सुख बहु पामिया, सुख हुवो विसवावीस ।। 2 ।।
सागरचन्द ने सूंपियो, सगला घर नो भार ।
सागरदत्त संजम लियो, पहुंतो ते भव - पार ।। 3 ।।
समझाई सासू भणी, पछा पिण लियो संयम - भार ।
मृगलेखा मोटी सती समझायो भरतार ।। 4 ।।
वले समझायो परिवार ने, सती कियो उपगार ।
सुख विलसे ससार ना, पूरब पुण्य - प्रकार ।। 5 ।।

ढाल–55

[राग:– थांरा नेणां रो पाणी लागणो मारुजी]

वीनवे 'मृगलेखा' नार,
वे कर जोड़ ने प्रीतमजी ।
अब शील रो चाखणो सवाद,
विषय-रस छोडने-प्रीतमजी ।। 1 ।।

1. विस्तार

भोग महा वडो रोग,
भोग विष-सारखो–प्रीतमजी ।
ज्यां भोग तजी लियो जोग,
प्रत्यक्ष एहिज पारखो ।। प्रीतमजी ।। 2 ।।

भोग तणे वश लोग,
लालचो हुय रह्या । प्रीतमजी ।
कदे ही तृपत न हुवे तन,
आशा अशुद्धा गया ।। प्रीतमजी ।। 3 ।।

अज्ञानी मति - अन्ध,
भमे जो भोगिया । प्रीतमजी ।
ते बेठा जोवन गमाय,
बूढापे सोगिया ।। प्रीतमजी ।। 4 ।।

करे विषय - काज वेवास,
कजिया करे वेन में । प्रीतमजी ।
ज्यां शील रो चाख्यो सवाद,
जीवड़ो ज्यांरो चेन मे ।। प्रीतमजी ।। 5 ।।

हुय रह्या विषय में लाल,
देवो ने देवता । प्रीतमजी ।
विषय सूं बेठा विरच,
चरण ज्यांरा सेवता ।। प्रीतमजी ।। 6 ।।

भर - जोवन मां भरपूर,
व्रत जे आदरे । प्रीतमजी ।
तिके नेणां न निरखे नार,
वारी जावूं साधरे । प्रीतमजी ।। 7 ।।

मोने व्हाला न लागे भोग,
मन मां आ तेवड़ी । प्रीतमजी ।
भोग में नहीं भलियार,
जिम भींतरी लेवड़ी ॥ प्रीतमजी ॥ 8 ॥

मैं तो भोगविया थांसू भोग,
थित भोगवली करम री । प्रीतमजी ।
संयोग तिहां वियोग,
माया सर्व जोइणो भरम री ॥ प्रीतमजी ॥ 9 ॥

भरतार कहे सुण वेण,
कितोयक है जीवणो । सतवती ।
तूं तो त्यागण ने हुई तयार,
समता - रस पीवणो ॥ सतवती ॥ 10 ॥

कोई समोसरे जो साध,
कृपनाथ केवली । सतवती ।
इतरो जाणोजे जेज,
पछे पूरां ला मन-रली ॥ सतवती ॥ 11 ॥

ए पचावनमी ढाल,
रूड़ी रस-राग में । सतवती ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे एम,
वस्यो मन वैराग में ॥ सतवती ॥ 12 ॥

-- दोहा --

भृगलेखा मोटी सती, श्रावक सागरचन्द ।
धरम - कारज दिन दिन करे, आणी मन आनन्द ॥ 1 ॥

सुन्दरदत्त ने सूंप दियो, सगला घर नो भार ।
पदवी दीधी प्रधान री, गम-खाऊ पर उपगार ॥ 2 ॥

ढाल–56

[राग:– शिव-पुर नगर सुहावणो]

अहो तिण काले ने तिण समे,
करता उग्र-विहार हो ।
श्री 'धर्मघोष' पधारिया,
साध अनेक परिवार हो ॥ 1 ॥

श्री केवली साध समोसर्या,
जोता ज्यांरी वाट हो ।
ज्यांने राय वांदण ने आवियो,
वले नर-नारी रा थाट हो ॥ श्री. ॥ 2 ॥

वनमाली वेग सताव सूं,
सागरचन्द ने वधाई दीध हो ।
मृगलेखा मन हर्षित हुई,
जाणे अमृत पीध हो ॥ श्री ॥ 3 ॥

दोनूं जणा वांदवा आयां,
स्त्री ने भरतार हो ।
मुनिवर दीधी तिहां देशना,
वाणी अमृत - धार हो ॥ श्री. ॥ 4 ॥

मृगलेखा इम वीनवे,
जोड़ी दोनूं हाथ हो ।

म्हैं पूरब पाप कैसा किया,
भाखो पूरबली बात हो ।। श्री. ।। 5 ।।

मैं सोले वरस लग दुख सह्या,
माने कलंक दिया भरतार हो ।
अतराय बरस इकवीस री,
मुझ भाखो करम प्रकार हो ।। श्री. ।। 6 ।।

केवली कहे तमें सांभलो,
सगली परिषदा - वृंद हो ।
मृगलेखा - सागरचन्द नो,
वले चित्रलेखा नो संवध हो ।। श्री ।। 7 ।।

छप्पनमी ढाल पूरी थई,
सुख - दुख तणो विसतार हो ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे हिवे सांभलो,
पाछला भवनो अधिकार हो ।। श्री. ।। 8 ।।

ढाल–57

[राग:– वीर बखाणी राणी चेलणा]

जंबू - द्वीप ना भरतमां जी,
'सिहपुर' नगर सुठाम ।
'सिंहसेण' नामे राजा हुतोजी,
'धारणी' राणी तसु नाम,
पूरब भव तमे सांभलो जी ।। 1 ।।

एक कंदर्प नामे ब्राह्मण हुंतोजी,
राय नो 'अनंगकुमार'

ए दोनूं ही मन्त्री अछेजी,
माहो - माहें घणो प्यार ।। पूरव. ।। 2 ।।

एक 'सतकीरत' तापस तिहां बसेजी,
ते तपस्या करे नित मेव ।
'एक वेला' पुत्री तेहनी जी,
ते करे तापस तणी सेव ।। पूरव. ।। 3 ।।

कला पुत्री घणी रूपमां जी,
पर - पुरुषां सूं भोगवे भोग ।
छाने ते छल - बल देखने जो,
कोई वारे नहीं जाणे लोग ।। पूरव. ।। 4 ।।

'ललित' कुमर सुख भोगवे जी,
कला पुत्री सूं घणो प्यार ।
ललित कला ले नीकल्यो जी,
गयो परदेश सुख कार ।। पूरव. ।। 5 ।।

तापस ते पिण चालियो जी,
छाने हो तेहिज रात ।
कला पुत्री ने कुण ले गयो,
नगर मां विसतरी बात ।। पूरव. ।। 6 ।।

मनसूं उठाय कूडी कही जी.
'कंदर्प' ब्राह्मण बात ।
तापस कला ने ले गयो जी,
मैं दीठी निजरां साक्षात ।। पूरव. ।। 7 ।।

राज रे कुमर साख भरीजी,
तापस ले गयो नार ।
तापस हुंतो कुशीलियो जी,
फेल्यो कुजस अपार ।। पूरव. ।। 8 ।।

तापस दूजे दिन आवियोजी,
लोगां वचनां सूं नांयो वींध ।
तापस घणो दुखियो थयोजी,
नेणां पण नांवेजी नींद ।। पूरव. ।। 9 ।।

'कदर्प' ब्राह्मण कूड़ो दियो जी,
तापस रे माथे आल ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे आगे सांभलोजी,
पूरी हुई सतावनमी ढाल ।। पूरव. ।। 10 ।।

ढाल–58

[राग:– चित्त समाध हुवे दश वोले]

सगली वेदन सही तिहां तापस,
तड़फ तड़फ करतो तेहरे प्राणी ।
दिल मांहे दुख ऊपनो गाढो,
दाफती अन्तर देह रे प्राणी ।। 1 ।।

कूड़ो आल कदे नहीं दीजे,
प्रत्यक्ष मोटो पापरे प्राणी ।
मेल देवे ए मांठी गत में,
भाख्यो अरिहत आपरे प्राणी ।। कूड़ो. ।। 2 ।।

'वेगवती' ब्राह्मणी दीधो,
साधु ने कूड़ो आलरे प्राणी।
ते दुख सीता में वहु बीता,
आल अगन री झाल रे प्राणी ।। 3 ।।

कंदर्प ब्राह्मण कर्मजि वांधया,
पिण उदय हुवा आय पाप रे प्राणी।
जीभ सड़ी मुवो दिन सात मां,
ए आल तणो प्रताप रे प्राणी ।। कूड़ो. ।।4।।

ब्राह्मण मरने हुई कुतिया,
दूजे भव अवतार रे प्राणी।
वले जीभ सड़ी ने मुई कुतिया,
हुई तीजे भव वेश्या नार रे प्राणी ।। कूड़ो. ।। 5 ।।

राती - माती रंग मां वेश्या,
गई सरवर ने पाल रे प्राणो।
फिरती गिरती वेश्या दीठा,
हसली ना बे बाल रे प्राणी ।। कूड़ो । 6।।

पीली पांखा कोनी वेश्या,
बचियां रो केसर में कियो शरीर रे प्राणी।
हंसली जाण्यो ए नहीं माहए,
नेणां नाखे नीर रे प्राणी ।। कूड़ो. ।। 7 ।।

चुगो नही देवे पोरन न देवे,
ए नहीं माहरा बाल रे प्राणी।
हिवड़ा में दुख हुवो हंसली रे,
दोहिली पेट री झाल रे प्राणी ।। कूड़ो. ।।8।।

इकवीस घड़ी लग रयो बिछोहो,
पछे पांखा दीधो धोय रे प्राणी ।
धोला बंचिया देखी हसली,
जाय मिली हर्षित होय रे प्राणी ।। कूडो. ।। 9 ।।

जठे सोले घड़ी तक साध संलाया,
पछे साध कने सुणियो धर्म रे प्राणी ।
शील व्रत वेश्या आदर्यो,
छोडया कुकता कर्म रे प्राणी ।। कूड़ो. ।। 10 ।।

वेश्या मरने हुई इन्द्राणी,
चवने हुई मृगलेखा नार रे प्राणी ।
'अनग' नो जीव हुई चित्रलेखा,
तापस हुवो सागरचन्द भरतार रे प्राणी ।। कूड़ो. ।। 11 ।।

इकवीस घड़ी ना वरस इकवीस,
रही प्रीतम री अंतराय रे प्राणी ।
पाप पहुंतो हसली केरो,
कर्म विन भुगत्या किम जाय रे प्राणी ।।कूड़ो.।।12।।

सह्या सोले वरस दुख सोले घडी ना,
कीधो साधु – संताप रे ।
पछे संयोग मिलिया वछित फलिया,
ते धर्म तणो प्रताप रे-प्राणी ।। कूड़ो. । 13 ।।

पूरवलो भव भाख्यो ज्ञानी,
बता'य दीधी सहू बात रे प्राणी ।
सागरचन्द मृगलेखा सुणिया,
कहे धन धन कृपा-नाथ रे ।। कूड़ो. ।। 14 ।।

ढाल अठावनमी हुई पूरी,
हुवो पूरब भवनो संबंधरे प्राणी ।
पाप तणा फल कड़वा जाणो,
इम भाख्यो रिख 'रायचन्द' रे प्राणी ।। कूडो. ।। 15 ।।

ढाल—59

[राग:- वीर सुणो मोरी वीनती]

मृगलेखा मन चिंतवे,
संजम सेती हो जीवड़ो सुख पाय ।
ए जग सगलो ही काट्यो,
घर मांहे हो घड़ी [1]अफलियो जाय ।।मृग.।। 1 ।।

तन – धन जोवन कारमो,
कारमी हो काची मिनखरी काय ।
वादल बीज तणी व रे,
रिध रमणी हो जावे विललाय ।। मृग. ।। 2 ।।

कर जोड़ी कहे कंत ने,
माहरे लेणो हो संजम नो भार ।
दीजे आज्ञा मो भणी,
माहरे करणी हो जीवनो निसतार ।। मृग. ।। 3 ।।

सागरचन्द कहे सुणो कामणी,
संयम लेस्यां हो आये दोनूं ही साथ ।
अब काम - भोग राचा नहीं,
व्रत लेस्यां हों आंपे जोडी हाथ ।। मृग. ।। 4 ।।

1. निष्फल

वेराग मांहे मन वस रह्यो,
चित्त मां चेती हो सती चतुर सुजाण ।
मोहनी करम ने वश कियो,
चित्त दोनों रो हो लायो निर्वाण ।।मृग.।। 5 ।।

मृगलेखा सागरचन्दजी,
पूरी हुई हो गुणसठमी ढाल ।
रिख रायचन्दजी कहे सांभलो ।।
किम तोड़े हो वेहूं करमांरा जाल ।। मृग. ।। 6 ।।

ढाल–60

[राग:– नदी यमुना की तीर उडे दोय पंखिया]

मृगलेखा सागरचन्द,
वोले कर जोड़ ने हो लाल–वोले ।
मैं लेस्यां संयम – भार के,
घर रिध छोड़ ने हो लाल–घर ।। 1 ।।

सुन्दरदत्त ने पूछो,
नेह न धरां रती हो लाल–नेह ।
धर्म घोप कहे एम,
जेज करो मती हो लाल–जेज ।। 2 ।।

घर आवी वेठावी ने गोड़,
वात कही मन तणी हो लाल–वात. ।
मैं जाण्डयां अथिर संसार,
भाख्यो त्रिभुवन-धणी हो लाल–भाख्यो ।। 3 ।।

तात ! मात ! सुणो त्रेण,
दीक्षा छे दोहिली हो लाल–दीक्षा. ।
घर घर मांगणी खीभ,
नही छे सोहली हो लाल–नहीं ।। 4 ।।

सूरा ने छे सुलभ,
संय में सुख घणो हो लाल–संयम ।
मरणो निश्चय नेम,
काचो सुख घर तणो हो लाल–काचो. ।। 5 ।।

पुरुष उपाडे सहस,
विस्तार पालावी तणो हो लाल–विस्तार :
सुन्दरदत्त सुनिमीत,
महोच्छव कियो घणो हो लाल ।। महो. ।।6।।

हुय गई साठमी ढाल,
विरक्त भाव दाखियो हो लाल–विरक्त ।
कीनो छे कारज सिद्ध ।
रिख 'रायचन्दजी' भाखियो हो लाल ।। रिख. ।7।।

ढाल–61

[राग:- हूँ तुझ आगल बीछहू कन्नैया]

मृगलेखा बेटी पालखी–हूं वारी,
वले साथे सागरचन्द रे–हूं वारी लाल ।
सिणगार सहू पहरने,–हूं वारी,
साथे नर-नारी वृन्दहे–हूं वारी लाल ।। 1 ।।

दीक्षा लीनी दीपती – हूं वारी,
जिन्दा मुनिवर विराज्या बागरे-हूं वारी लाल ।
तिहां आवी वन्दणा करी-हूं वारी,
धरता धरम सूं राग रे–हूं वारी लाल ।। 2 ।।

आभरण सगला उताहने–हूं वारी
लोच कियो स्व - हाथरे–हूं वारी लाल ।
चित्रलेखा साथे हुई–हूं वारी,
वले केई नर नारी हुवा साथ रे–वारी लाल ।।दी. ।।3।।

धर्मघोष गुरां कने – हूं वारी लाल ।
सागरचन्द लीनी दीखरे–हूं वारी लाल
विनय भगति करे भावसूं–हू वारी.
सूख ऊरथ लिया सीखरे–हूं वारी लाल ।.दी. ।।4।।

मृगलेखा हुई साधवी – हूं वारी.
गुरुणी 'सुव्रता' पाश रे – हूं वारी लाल ।
मृगलेखा रा मात पिता – हूं वारी,
छोडी निकल्या घर वास रे–हूं वारी लाल ।। दी.।। 5 ।।

सुन्दरदत्त श्रावक हुवो – हूं वारी.
श्राविका तेतीस नार रे–हूं वारी लाल ।
वले नर नारी घणा बोधिया–हूं वारी,
कियो पर - उपगार रे–हूं वारी लाल ।। 6 ।।

क्रिया कर कर्म तोड़िया–हूं वारी,
धरता निर्मल ध्यान रे–हूं वारी लाल ।
सागरचन्द प्रति पामियो–हूं वारी,
निर्मल केवल ज्ञान रे–हूं वारी लाल ।। दी. ।। 7 ।।

ए ढाल थई इगसट्ठमी-हूं वारी.
इणमां लीधो संजम-भार रे-हूं वारी ।
रिख 'रायचन्दजी' कहे सांभलो,
प्रगति तणो अधिकार रे-हूं वारी लाल।।दी.।।8।।

ढाल-62

[राग:- सोभागी सुन्दर भाव वडो संसार]

सागरचन्द मुनि केवली जी,
साध तणो परिवार ।
गांम-नगर-पुर विचरताजी,
करता पर उपगार ।
भविक जन ! साचो जिन-धर्म सार,
एक मनां आराधतांजी ।
पामीजे भव - पार ।। 1 ।।

काल कितोयक विचरियाजी,
भव - जीवां रे भाग ।
मुनि-सागरचन्द मुगते गया जी,
हूं वांदू घर राग ।। भविक. ।। 2 ।।

मृगलेखा मुगतें गई जी,
वरत्या जय - जय कार ।
मृगलेखा रा मात-पिताजी,
करसी खेवो पार ।। भविक. ।। 3 ।।

शील व्रत री घणी सूत्र मां जी,
मृगलेखा रो अधिकार ।

तिणरे अनुसारे करीजी,
जोड़यो ए चरित्र उदार ।।भविक ।।4।।

जे कोई अधिको ओछो आवियोजी,
खोटो आखर एक ।
तेह नो मिछामि दुक्कड़ं जी,
केवली – साख विशेषा ।।.भविक.।। 5 ।।

ए मृगलेखा नी चौपाई जी,
पूरी थई वासठमी ढाल ।
भणे मुणं प्राणियाजी,
ज्यांरे वरते मंगल-माना ।। भविक. ।।6।।

ए शील ऊपर सहू चालियो जी,
शील समो नहीं कोय ।
शील थकी संकट टलोजो,
मृगलेखा लेवो जोय ।। भविक. ।। 7 ।।

पूज्य 'वूधरजी' हुवा दीपता जी,
ज्यांरा पूज्य जयमलजी सिख जाण ।
पर - उपगारी पुण्यातमा जी,
भारी सभाव वखाण ।। भविक. ।। 8 ।।

पूज्य 'वूधरजी' रा पाटवीजी,
ज्यांरो सिख रिख 'रायचन्द' ।
तिण ए कीधी चउपईजी,
भाखियो सरस संवेदर ।। भवितक. ।।9।।

संवत अठारे अड़तीसमें जी,
भाद्रवा वद इगियारस जाण ।
चौमासो शहर 'जोधपुर' में जी,
जठे रचियो ए मंडाण ।। भविक. ।।10।।

दान - शील - तप भावना जी,
शिवपुर मारग च्यार ।
पिण इण चउपई में छे घणोजी,
शील तणो अधिकार ।।भविक ।। 11 ।।

शील थकी सुख सासताजी,
वले पावें अमर विमाण ।
सुख - संपत लीला मिलेजी,
बरते कोड़ कल्याण ।।भविक.।। 12 ।।

मुद्रित—

श्री गजेन्द्रकुमार भारद्वाज के सौजन्य से

मनोहर प्रिन्टिंग प्रेस

पाली बाजार,

ब्यावर (राज.)

☎ 21441

– दोहा –

विषमा - रस - वाही थकी भामण करे वीयास ।
²केहक वेला बापड़ी अंग में रहे उदास ॥ 1 ॥

पुन्य - प्रभाते पदमणी, ¹कूढायो न करे कोय ।
मृगलेखा मन जाणियो, कुण नेण गमावे रोय ॥ 2 ॥

ढाल वही

उपवास इकांतर आदर्या,
जीमे नहीं नित मेव ।
शरीर तणी शोभा तजी,
सारे अरिहंत - सेव ॥वैराग.॥4॥

सामायिक पोसह करे,
पड़िकमणा थी प्रेम ।
दान दे चवदे प्रकार नो,
चितारे चवदे नेम ॥वैराग.॥5॥

वखाण सुणे भली तरे,
प्रगटिये – प्रभात ।
सत - गुरु - सनमुख वेठके,
जोड़े दोनूं हाथ ॥वैराग॥ 6 ॥

चवदे वरस चित निरमले,
पीहर रही व्रत पाल ।
रिख 'रायचन्दजी' जोड़ी जुगत सूं,
पूरी हुय गई नवमी ढाल ॥वैराग.॥7॥

1. दुःख 2. कभी-कभी

– दोहा –

चवदे बरस तो वही गया, सासरिया न पूछी सार ।
अब पीहर रहणों नहीं मृगलेखा करे विचार ।। 1 ।।

तात - मात ने वीनवे, भाई भोजाई परिवार ।
हूं हिवे चालू सासरे, कोई मत करजो नाकार ।। 2 ।।

मृगलेखा चाली पीहर थी, चित्रलेखा ली साथ ।
आण पहुँची सासरे, हिवे सुणो आगली बात ।। 3 ।।

ढाल–10

[रागः- रीस धरी ने बोले छे राणी]

बरसाली - बीच जाय ने बेठी,
चित्रलेखा पिण जोड़े जी ।
कोई दासी तो सामो न देखे,
कोई देखी ने मुंह मचकोडेजी ।। 1 ।।

आ कामण अठे कुण आई,
कोई कहे खबर न पाईजी ।
कुंवरजी री आ दीसे लुगाई,
पिण इणने तो परी छिटकाईजी ।।आ.।।2।।

पछा सासू नेणां निरखी,
आतोज अभागणी आईजी ।
परिहरी इणने माहरे वेटे,
माठी इण री कमाई जी ।।आ.।।3।।